सामाजिक और सौन्दर्यशास्त्रीय संघर्ष: भारतीय दलित स्त्री कविता के संदर्भ में

SAMAJIK AUR SOUNDARYASHASTRIYA SANGHARSH: BHARATIYA DALIT STHREE KAVITHA KE SANDARBH MEIN

कालिकट विश्वविद्यालय की
डॉक्टर ऑफ फिलोसफी उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

Thesis
submitted to the University of Calicut
for the Degree of
DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI

निर्देशक:
डॉ .टी ए .आनंद
सह आचार्य
हिंदी विभाग
सरकारी आर्ट्स एंड साईन्स कॉलेज

प्रस्तुतकर्ता:
रजिला ओ. पी.
शोध छात्रा
हिंदी विभाग
सरकारी आर्ट्स एंड साईन्स कॉलेज

परास्नातक व अनुसन्धान विभाग,हिंदी
सरकारी आर्ट्स एंड साईन्स कॉलेज
कालिकट-18
2025

Rajila O P. Samajik aur soundaryashastriya sangharsh Bharatiya dalit sthree kavitha ke sandarbh mein. Thesis 2025. Govt.Arts and Science College.Calicut, University of Calicut..

Dr.T A Anand
Associate Professor
PG & Research Department of Hindi
Government Arts and Science College, Calicut

Certificate

This is to Certify that the Thesis entitled **"SAMAJIK AUR SOUNDARYASHASTRIYA SANGHARSH: BHARATIYA DALIT STHREE KAVITHA KE SANDARBH MEIN"** is a bonafide Record of Research Work carried out by **RAJILA O. P.** Under my Supervision and that no part of this thesis has hitherto been submitted for a Research degree in any University.

Kozhikode
Date

Dr.T A Anand
Supervising Teacher

Dr.T.A.ANAND
(PEN-610414)
Associate Professor & Research Guide
PG & Research Dept.of Hindi
Govt. Arts & Science College Calicut
Meenchanda, Kozhikode
KERALA - 673018

Dr.T A Anand
Associate Professor
PG & Research Department of Hindi
Government Arts and Science College, Calicut

Certificate

This is to Certify that the Thesis entitled **"SAMAJIK AUR SOUNDARYASHASTRIYA SANGHARSH: BHARATIYA DALIT STHREE KAVITHA KE SANDARBH MEIN"** is a bonafide Record of Research Work carried out by **RAJILA O. P.** Under my Supervision and that no part of this thesis has hitherto been submitted for a Research degree in any University. The thesis is revised as per the modifications and recommendations reported by the adjudicators. Soft copy attached is the same as that of the revised copy.

Kozhikode
Date

Dr.T A Anand
Supervising Teacher

Dr.T.A.ANAND
(PEN-610414)
Associate Professor & Research Guide
PG & Research Dept.of Hindi
Govt. Arts & Science College Calicut
Meenchanda, Kozhikode
KERALA - 673018

UNIVERSITY OF CALICUT

CERTIFICATE ON PLAGIARISM CHECK

1.	Name of the Research Scholar	RAJILA O.P	
2.	Title of thesis / dissertation	SAMAJIK AUR SOUNDARYA SHASTRIYA SANHARSH BAARAIYA PALI STREE KAVITA KE SANDHIBH MEALA	
3.	Name of the Supervisor	Dr. T. A. ANAND	
4.	Department/Institution	Department of Hindi Govt. Arts & Science College, Calicut.	
5.	Similar content (%) identified	**Non-core** **Introduction/ Theoretical overview/Review of literature/ Materials & Methods/ Methodology** Acceptable limit	**Core** **Analysis/Result/Discussion/ Summary/Conclusion/ Recommendations**
	Acceptable maximum limit (%)	10	10
6.	Software used	Manual	
7.	Date of verification	07-08-2025	

**Report on plagiarism check, specifying included/excluded items with % of similarity to be attached.*

Checked by (with name , designation & signature)

Name and signature of the Researcher RAJILA O.P

Name and signature of the Supervisor. Dr. T. A. ANAND, ASSOCIATE PROFESSOR
Dept. of Hindi, Govt. Arts & Science College Calicut.

The Doctoral Committee* has verified the report on plagiarism check with the contents of the thesis, as summarized above and appropriate measures have been taken to ensure originality of the Research accomplished herein.

Name & Signature of the HoD/HoI (Chairperson of the Doctoral Committee)

**In case of languages like Malayalam, Tamil etc..on which no software is available for plagiarism check, a manual check shall be made by the Doctoral Committee, for which an additional certificate has to be attached.*

Declaration

I **RAJILA O. P.** do hereby declare that this Thesis entitled **"SAMAJIK AUR SOUNDARYASHASTRIYA SANGHARSH: BHARATIYA DALIT STHREE KAVITHA KE SANDARBH MEIN"** is a record of Bonafide Research carried out by me and this has not previously formed the basis for the award any Degree. Diploma, Associateship, Fellowship other similar Title or Recognition .This Research work has supervised by **Dr.T A ANAND** Associate. Professor, PG & Research Department of Hindi, Government Arts & Science College, Calicut. The contents of the thesis have undergone plagiarism check using iThenticate software at C.H.M.K. Library, University of Calicut, and the similarity index was found to be within the permissible limit. I also declare that the thesis is free from AI generated contents.

RAJILA O. P.

Kozhikode
Date

Dr.T A Anand
Associate Professor
PG & Research Department of Hindi
Government Arts and Science College, Calicut

अनुक्रमणिका

पृ.सं.

प्राक्कथन

पहला अध्याय **1-31**

भारतीय दलित कविता : एक अध्ययन

भूमिका

1.1 दलित साहित्य की अवधारणा

1.2 भारतीय दलित साहित्य की वैचारिकता

1.3 दलित साहित्य का स्वरूप

1.4 भारतीय दलित कविता

1.5 हिंदी दलित कविता

1.6 मराठी दलित कविता

1.7 तेलुगु दलित कविता

1.8 मलयालम दलित कविता

1.9 तमिल दलित कविता

1.10 कन्नड़ दलित कविता

निष्कर्ष

दूसरा अध्याय **33-61**

दलित सौंदर्यशास्त्र की अवधारणा

भूमिका

2.1 सौंदर्य शास्त्रीय धारणा

2.1.1 कल्पना

2.1.2 बिंब

2.1.3 प्रतीक

2.1.4 मिथक

2.1.5 फैंटसी
2.1.6 व्यंग्य
2.1.7 यथार्थ
2.2 सौंदर्य शास्त्र के पाश्चात्य स्वरूप
2.3 भारतीय सौन्दर्य शास्त्र
2.4 भारतीय सौंदर्य शास्त्र की विवेचना
2.5 दलित साहित्य का नया सौंदर्य शास्त्र
2.6 दलित सौंदर्य शास्त्र की भूमिका
2.7 दलित साहित्य की भाषा शैली
2.8 दलित साहित्य की बिंब एवं प्रतीकात्मकता
निष्कर्ष
तीसरा अध्याय **63-104**
भारतीय दलित कवयित्रियों की काव्यदृष्टि
भूमिका
3.1 स्त्रीकविता
3.2 दलित स्त्री कविता
3.3 दलित स्त्री कविता की शिल्पविधान
3.4 भारतीय दलित कवयित्रियों की काव्यदृष्टि
3.5 हिन्दी दलित कवयित्रियों की काव्यदृष्टि
3.5.1 रजनी तिलक
3.5.2 रजत रानी मीनू
3.5.3 पूनम तुषामठ
3.5.4 सुशीला टाकभौरे
3.5.5 कावेरी
3.5.6 कुसुम मेघवाल
3.5.7 रजनी अनुरागी

,

3.6 तेलुग दलित कवयित्रीयों की काव्यदृष्टि

3.6.1 जूपका सुभद्रा

3.6.2 अरुणा गोखला मंडा

3.6.3 वेरापोगो गुलाबम्मा

3.6.4 वीणवासिनी थेरेसा देवादानम

3.6.5 बालाजी पल्ली विजयलक्ष्मी

3.6.6 जाजूला गौरी

3.6.7 डॉ.चल्लापल्ली स्वरूपा रानी

3.6.8 गोगू श्यामला

3.7 तमिल दलित कवयित्रियाँ

3.7.1 सुकृतिरानी

3.7.2 मीना कंदासामी

3.7.3 मालती मैत्री

3.8 मलयालम दलित कवयित्रियाँ

3.8.1 विजिला चिरप्पाड

3.8.2 सति अंकमाली

3.8.3 धन्या.एम.डि

3.8.4 राधामणि एम.आर

3.8.5 इंदुश्री इरविमंगलम

3.9 कन्नड दलित कवयित्रियों की काव्य दृष्टि

3.9.1 बी.टि.ललिता नाईक

3.9.2 सुकन्या मारूति

3.9.3 पुष्पा एच.एल

3.10 मराठी दलित कवयित्रियाँ

3.10.1 ज्योति लांचेवाल

3.10.2 अनुसूया कांबले

3.10.3 प्रज्ञा पवार
3.10.4 हीरा बनसोडे
निष्कर्ष
चौथा अध्याय **105-146**
भारतीय दलित स्त्री कविताओं की सामाजिक स्वर एवं संघर्ष
भूमिका
4.0 साहित्य का समाज शास्त्र
4.1 दलित कविता की समाजशास्त्र
4.2 भारतीय दलित स्त्री कविता की सामाजिकता
4.2.1 दलित सामाजिक चेतना
4.2.2 सामाजिक भेदभाव
4.2.3 परंपरा और इतिहास बोध
4.2.4 अंबेडकर दर्शन का प्रभाव
4.2.5 विद्रोह और आत्मनिर्भरता का आह्वान
4.2.6 स्वत्व की पहचान
4.2.7 दलित स्त्री की राजनीतिकरण
4.2.8 अपमान और वेदना
4.2.9 प्रतिरोध की नयी तीव्रता
4.2.10 शिक्षा और सत्ता ग्रहण
4.2.11 दलित नारीवाद का अलग प्रभाव
4.2.12 अस्पर्शता और अंधविश्वास का विरोध
4.2.13 संघर्ष केलिए प्रेरणा
4.2.14 बदलती राष्ट्रीयता
4.2.15 खेती संस्कृति की झलक
निष्कर्ष

पाँचवाँ अध्याय **147-182**

भारतीय दलित स्त्री कविता :सौन्दर्यात्मकता की पुनर्वाख्या

भूमिका

5. दलित स्त्री कविता की सौन्दर्यात्मकता

5.1 प्रतिस्थापित प्रतीक

5.2 नवीन विंबात्मकता

5.3 मिथकों की पुनर्व्याख्या

5.4 अनुभव तीक्षणता की यथार्थ प्रस्तुतीकरण

5.5 व्यंग्यात्मक प्रयोग

5.5.1 राजनीतिक व्यंग्य

5.5.2 सामाजिक व्यंग्य

5.6 भाषिक संघर्ष

5.6.1 बोलचाल की भाषा का प्रयोग

5.6.2 विद्रोही भाषा

निष्कर्ष

उपसंहार **183-188**

संदर्भ ग्रन्थ सूची **189-194**

प्रकाशित शोध आलेख

,

,

प्राक्कथन

साहित्य सामाजिक परिवर्तन लाने का कार्य सदियों से करता आ रहा है। भारतीय दलित साहित्य के विविध विधाओं में अग्रणी दलित कविता भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत असमानताओं और मानवाधिकार हनन को उजागर करती है। वर्तमान समय के साहित्य में दलित जीवन के विभिन्न आयामों की अभिव्यक्ति सशक्त रूप से हो रही है। सामाजिक परिवर्तन और परिस्थितियों के बदलाव तथा नारी संघर्ष अवधारणा ने स्त्री साहित्य पर गहराई से असर डाला है। जिसका प्रभाव हम दलित स्त्री साहित्य पर भी देख सकते हैं।

बदलते राजनीतिक, सामाजिक परिवेश में स्त्री की स्थिति भी बदलती रही है। भारतीय सामाजिक संरचना में स्त्री की द्वितीयक स्थिति केवल स्त्री-पुरुष लौगिक भेदभाव से तय नहीं होती बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक क्षेत्र और आर्थिक व्यवहार में स्त्री की भागीदारी से भी निशचित होती है। दलित स्त्री कविता ने स्त्री की इसी बदलते स्वरूप को कविता में अंकित किया है। साथ ही अपने समाज के प्रतिरोध एवं विद्रोह की भावना को भी अभिव्यक्त किया है। भारतीय दलित स्त्री कविता में समस्याएं उनका प्रतिरोध एवं संघर्ष और बदलते नवीन सौन्दर्यात्मक परिकल्पनाएँ आदि को किस प्रकार से दलित कवयित्रियों ने अभिव्यक्त किया है , इनका विश्लेषण करना इस अध्ययन का मूल लक्ष्य है।

इस शोध प्रबन्ध का विषय ' सामाजिक और सौन्दर्यशास्त्रीय संघर्ष: भारतीय दलित स्त्री कविता के संदर्भ में' है। अध्ययन की सुविधा केलिए इसे पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहला अध्याय 'भारतीय दलित कविता: एक अध्ययन' है और दूसरा अध्याय 'दलित सौन्दर्यशास्त्र की अवधारणा' । तीसरा अध्याय 'भारतीय दलित कवयित्रियों की काव्य

,

दृष्टि’ है और चौथा अध्याय 'भारतीय दलित स्त्री कविताओं का सामाजिक स्वर एवं संघर्ष।' पाँचवाँ अध्याय 'भारतीय दलित स्त्री कविता: सौन्दर्यात्मकता की पुनर्व्याख्या’ है।

पहला अध्याय है 'भारतीय दलित कविता : एक अध्ययन' इसमें भारतीय दलित साहित्य की अवधारणा, वैचारिकता एवं स्वरूप का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही छह भारतीय भाषाओं की दलित कविताओं के विकास एवं गतिविधियों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इसमें भारतीय दलित कविताओं के आपसी संबन्ध को परखने का कोशिश भी है।

दूसरा अध्याय है 'दलित सौन्दर्यशास्त्र का अवधारणा।' इसमें पाश्चात्य एवं भारतीय सौन्दर्यशास्त्र का विश्लेषण करते हुए सौन्दर्य शास्त्रीय धारणा के विभिन्न तत्व कल्पना, बिंब, प्रतीक, मिथक, फैंटसी ,व्यंग्य, यथार्थ आदि तत्व को प्रस्तुत किया गया है। भारतीय दलित सौन्दर्य शास्त्र की नयी परिकल्पनाओं को परखने का भी प्रयास किया है।

तीसरा अध्याय 'भारतीय दलित कवयित्रियों की काव्यदृष्टि' है जिसमें हिन्दी, मराठी, तेलुंगु, कन्नड, मलयालम, तमिल आदि भाषा के प्रमुख दलित कवयित्रियों की कविताओं का वस्तुपरक एवं शैलीपरक तुलनात्मक अध्ययन किया है।

चौथा अध्याय 'भारतीय दलित स्त्री कविताओं की सामाजिक स्वर एवं संघर्ष' है। इसमें भारतीय दलित स्त्री कविता की सामाजिक संघर्ष को उसकी सामाजिक चेतना, भेदभाव, परंपरा एवं इतिहास बोध, अंबेडकर दर्शन का प्रभाव, विद्रोह एवं आत्मनिर्भरता और स्त्री स्वत्व की पहचान आदि पर विश्लेषण किया गया है। इन कविताओं में स्त्री की राजनीतिकरण, शिक्षा का महत्व, अंधविश्वास का विरोध, संघर्ष केलिए प्रेरणा आदि पहलुओं पर होकर उसकी सामाजिक उत्तरदायित्व एवं संघर्ष को विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

,

पाँचवाँ अध्याय 'भारतीय दलित स्त्री कविता :सौन्दर्यात्मकता की पुनर्व्याख्या' में भारतीय पारंपरिक सौन्दर्यधारणा को पुनर्व्याख्या करनेवाले दलित स्त्री कविता की नयी सौन्दर्य परिकल्पनाओं का चित्रण है l साथ ही इन कविताओं में प्रतिस्थापित प्रतीक, नवीन बिम्बात्मकता, मिथक की पुनर्व्याख्या, अनुभव की यथार्थ प्रस्तुतीकरण,व्यंग्यात्मक प्रयोग एवं भाषिक संघर्ष आदि रूपों से विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

अंत में उपसंहार है जिसके अंतर्गत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को समेटा गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को पूरा करने में मुझे कई व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त हुआ है उन सबके प्रति आभार व्यक्त करना मेरा कर्तव्य है l प्रस्तुत शोध प्रबन्ध कालिकट विश्वविद्यालय के सरकारी आर्ट्स व सयन्स कालेज, कालिकट हिन्दी विभाग के सह आचार्य डॉ. टी.ए. आनंद के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ है। उनके बहुमूल्य निर्देश एवं मार्गदर्शन में मैने यह शोध प्रबन्ध तैयार किया है। मेरी हर शंका का समाधान करके समय समय पर दिशा निर्देश देने की उनके दिलचस्पी ने इस शोध प्रबन्ध को पूरा करने की प्रेरणा दी। उनके प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हुँ।

आदरणीय विभागाध्यक्ष डॉ. भार्गवन जी के प्रति मैं आभार प्रकट करती हुँ l जिनके सहायता और प्रोत्साहन मुझे मिलता रहा। शोध केन्द्र के अन्य अध्यापक गण और शोध कार्य केलिए प्रेरणास्त्रोत मेरे प्रिय गुरुजनों को भी कृतज्ञता ज्ञापित करती हुँ। साथ ही मेरे प्रेरणादायक सभी मित्रों एवं सहकर्मी मित्रों को भी मैं तहे दिल से आभार प्रकट कर रही हुँ।

,

इस शोध के दौरान मुझे प्रमुख दलित लेखिकाएँ सुशीला टाकभौरे, रजत रानी मीनू, विजिला चिरप्पाड, सति अंकमाली, सुकृतिराणी आदि कई लेखिकाओं से मिलने और साक्षात्कार करने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ। उनके बहुमूल्य समय मेरे साथ बिताने केलिए भी मैं उनके प्रति आभारी हुँ।

दलित लेखक मोहनदास नैमिशराय, जयप्रकाश कर्दम और मलयालम के दलित लेखक सन्नी कपिकाड़, एम.बी मनोज, एस. जोसफ अध्यापक एवं तमिल अनुवादक पी.एस. मनोजकुमार आदि ने कई माध्यम से शोध संबन्धी शंकाओं का निवारण तथा सामग्री संकलन में मेरी बहुत मदद की है। उन समस्त लेखकों, संपादकों, मित्रों, हितौषियों के प्रति में अपना आभार प्रकट करती हुँ जिन्होंने किसी न किसी प्रकार मेरी मदद की है।

इस शोध प्रबन्ध की तैयारी एवं संशोधन केलिए सरकारी आर्ट्स व सयन्स कालेज के सेवा निवृत सह आचार्य एवं मेरे प्रिय मित्र डॉ.हेमा जी ने मेरी शंकाओं का समाधान करते हुए जो प्रेरणाएं एवं उपदेश मुझे दिया है उसकेलिए तहे दिल से उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हुँ। हिंदी विभाग के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष एवं सह आचार्य डॉ.मिनी जी के प्रति में आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोध कार्य के काफी प्रोत्साहन दिया।

शोध सामग्रियों के संकलन में कालिकट विश्वविद्यालय, कण्णूर विश्वविद्यालय, श्रीशंकाराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय आदि के पुस्तकालयों से मुझे काफी सहायता प्राप्त हुई है। इनका मैं आभारपूर्वक स्मरण करती हुँ।

मेरे माता-पिता, जीवनसाथी दिपु कुमार, बच्चों एवं परिवारवालों का पूर्ण सहयोग तथा प्रोत्साहन मुझे हमेशा मिलता रहा। उन सबके प्रति मैं हृदय से आभारी हुँ।

,

मैने इस शोध विषय के प्रति यथासंभव ईमानदार रहने का प्रयास किया है। इस शोध प्रबन्ध को विध्वानों एवं विषय के प्रति रुचि रखनेवाले पाठकों-अध्येताओं के सम्मुख सविनय मैं अपना शोधकार्य प्रस्तुत कर रही हूँ।

रजिला ओ.पि

शोध छात्रा

,

,

अध्याय- एक

भारतीय दलित कविता: एक अध्ययन

भूमिका

साहित्य सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण हथियार है जो मानसिक रूप से विचारों को बनाने बिगाडने का कार्य करता है। दलित लेखकों ने भी इसी हथियार का सहारा लेकर समाज में नये मूल्य स्थापित करने की कोशिश की है। भारतीय जातिव्यवस्था की पीड़ा से दलित चेतना पैदा हुई है। इसने सदियों से सताये हुए हाशिये में धकेले गये दलितों के बीच प्रतिरोध, चेतना ,अस्मिता आदि आशय को पैदा किया है।

सदियों से चली आ रही अस्पृश्यता की परंपरा, दास्यता आदि से दलितों को मुक्त करने और उनमें अपने अस्तित्व और अस्मिता के प्रति जाग्रति को लक्ष्य करके दलित साहित्य का उदय हुआ है। दलित साहित्य में प्रतिरोध का स्वर मुखरित है। वर्तमान समय के साहित्य में दलित जीवन के विभिन्न आयामों की अभिव्यक्ति सशक्त रूप से हो रही है।

दलित साहित्य को परिभाषित करते हुए हिंदी रचनाकार प्रो.चमन लाल लिखते हैं 1"दलित साहित्य वह साहित्य हैं जो दलितों के जीवन,उनके सुख-दुख, उनकी सामाजिक राजनीतिक स्थितियों,उनकी संस्कृति, उनके आस्थाओं -अनास्थाओं उनके शोषण व उत्पीड़न तथा इस उत्पीड़न शोषण के दलितों द्वारा प्रतिरोध की परिस्थितियों को व्यापकता तथा गहराई के साथ कलात्मकता से प्रस्तुत करता है"1

,

समकालीन दलित साहित्य की तीव्र रचनात्मक अभिव्यक्ति दलित साहित्य की प्रमुख विधा कविता में देखने को मिलती है। साहित्यक विधाओं में कविता एक ऐसी सशक्त विद्या हैं जिसमें मनुष्य की मानसिक भावों की तीव्र अभिव्यक्ति पायी जाती हैं ।दलित भावोन्मेष केलिए कविता हमेशा माध्यम रही है ।इसी चेतना में उसकी आत्मसम्मान का पर्याय बनी कविताओं में विद्रोह, विरोध, क्षोप और आक्रोश तथा वेदना के साथ बहिष्कृत जाति और सामाजिक शोषण को मार्मिक और तर्कपूर्ण अभिव्यक्ति मिली है ।

कविता की इसी ताकत को पहचानते हुए वर्तमान दौर के भारतीय दलित रचनाकारों ने कविता को ही अपनी अभिव्यक्ति का मुख्य आधार बनाया है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था ने दलित समाज को अब तक के तमाम सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व आर्थिक अधिकारों से वंचित किया है। भारतीय दलित कविता इसी व्यवस्था के प्रति समाज की संवेदना को प्रकट करने के साथ-साथ विद्रोह भी प्रकट करती है जिसमें दलित कवियों ने अस्पृश्यता, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक विसंगतियों का यथार्थ चित्रण किया है।

भारतीय दलित कविता में भाषापरक तेवर और तीखापन चाहे अलग हो लेकिन आक्रोश, संघर्ष, नकार, विद्रोह, अतीत की स्थापित मान्यताएँ आदि एक जैसी है। जीवन में घृणा की जगह प्रेम, समता, बन्धुत्व एवं मानवीय मूल्यों का संचार ही दलित कविता का मुख्य लक्ष्य है।

1.1 भारतीय दलित साहित्य की अवधारणा

भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य का उभार भारतीय समाज व्यवस्था के परिवर्तन का द्योतक है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में दलित से अभिप्राय उन लोगों से है

,

जिन्हें जन्म जाति या वर्णगत भेदभाव के कारण शताब्दियों तक सामाजिक न्याय और मानवाधिकार से वंचित रहना पडा है।

विभिन्न भारतीय भाषाओं में बीसवी शताब्दी के अंतिम में दलित साहित्य तीव्रता के साथ उभरकर आया है। इस प्रकार भारतीय समाज और साहित्य के संदर्भ में दलित साहित्य का मतलब है वर्णाश्रम व्यवस्था अथवा तथाकथित मनुवादी व्यवस्था में दलन-दमन के शिकार निम्न जाति की पीडा को केन्द्रिय साहित्य के रूप में स्वीकृति प्राप्त करना है।

ज्योतिबाफुले और अम्बेडकर के प्रभाव कारण दलित साहित्य का आरम्भ सर्वप्रथम मराठी साहित्य में दिखाई पड़ता है। उसके बाद हिंदी, तेलुंगु, मलयालम, कन्नड, तमिल आदि विविध भारतीय भाषाओं में शताब्दी के अंतिम दो दशकों में यह प्रवृत्ति लगभग साथ साथ विकसित हुई। इस साहित्य प्रवृत्ति ने साहित्य के केन्द्रीय आख्यान के रूप में वर्णविरोधी आख्यान को स्थापित करने का प्रयास किया है। जिससे जहाँ एक ओर दलित अस्मिता को सफलतापूर्व रेखांकित किया जा सका है वहाँ दूसरी और असंतोष और आक्रोश की परिणाम जातिवादी क्रोध, प्रतिहिंसा और घृणा के रूप में भी सामने आई है।

भारतीय दलित राजनीति ने भी दलित साहित्यकारों को प्रभावित किया है। विशेषकर दलित पैथर, बहुजन समाज पार्टी, और द्राविड विचारधारा वाली पार्टियों में इन्हें अनुकूलता नज़र आती है।

दलित साहित्य का उद्देश्य एकदम दलित मुक्ति है।इसकेलिए परंपरागत हिंदु वर्ण व्यवस्था का बहिष्कार करते हुए बाबा साहब अंबेडकर ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया था। इसलिए दलित साहित्यकारों को बौद्ध धर्म की वर्णहीन व्यवस्था में अपने लिए पर्याप्त संभावनाएँ दिखाई देती है।

,

दलित साहित्य के समक्ष इस समय कई प्रकार की चुनौतियाँ है lअम्बेडकरवादी इस साहित्य दलित को मुक्ति की खोज, ज्ञान की मुक्ति के रूप में करता है। भारतीय विचार, समाज और साहित्य, परम्परा आदि वर्ण व्यवस्था से सम्बंधित है। इस परम्परा को दलित साहित्य पूर्णतय नकारता है। वह ज्ञान-विज्ञान और विश्व साहित्य की मानववादी परंपरा से जोडता है और दलित साहित्य तो मनुष्य को सर्वोपरि मानता है।

1.2 भारतीय दलित साहित्य की वैचारिकता

किसी भी साहित्य की पहचान उसकी चेतना एवं उद्देश्य से होती है। दलित साहित्य दलितों को उनके दलित होने का अहसास दिला रहा है। दलित शब्द छोटे से खाँचे से निकलकर अब व्यापक परिप्रेक्ष्य में पहूँच गया है। ओमप्रकाश वाल्मीकि के शब्दों में-2"दलित शब्द दबाये गये, शोषित, पीडित, प्रताडित के अर्थों के साथ जब साहित्य में जुडता है तो विरोध और नकार की ओर संकेत करता है। वह नकार या विरोध चाहे व्यवस्था का हो, सामाजिक विसंगतियों या धार्मिक रूढियों, आर्थिक विषमताओं का हो या भाषा प्रांत के अलगाव का हो या साहित्यिक परम्पराओं, मानदण्डों या सौन्दर्यशास्त्र का हो दलित साहित्य नकार का साहित्य है, जो संघर्ष से उपज है, जिसमें समता, स्वतंत्रता और बंन्धुता का भाव है और वर्ण व्यवस्था से उपजे जाति भेद का विरोध है।"[2]

भारतीय समाज जाति, धर्म और संस्कृति के आधार पर विभाजित होने के कारण विभिन्न संस्कृतियों एवं आचार विचारों से भरा हुआ है। इसी कारण भारतीय समाज की साहित्यक धाराओं में भी विभिन्नता दिखाई देती है। दलित साहित्य वह साहित्य है जो वर्ण व्यवस्था के विरोध में और उसके विपरीत मूल्यों केलिए संघर्षरत मनुष्यों से प्रतिबद्ध है। यह परम्परागत वर्ण व्यवस्था से संबन्धित आचार विचारों को नकारता है।

,

दलित साहित्य सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक संदर्भों में परिवर्तन की कामना करते हुए नवीन उम्मीदों के साथ आगे बढने केलिए साहित्य के ज़रिए समाज को चेतना देता है। अपने गौरवमयी इतिहास का परिचय देते हुए मानवीयता की पहचान से अवगत कराना दलित साहित्य का मुख्य उद्देश्य रहा है। यह परम्परागत रूप में स्थित सभी आचार विचार एवं सामाजिक संप्रदायों की पुनः विचार विमर्श करता है l परम्परागत रूढीवादिता को खंडन करके वास्तविक सामाजिक दर्शन की स्थापना तथा समता, समानता के सिद्धान्तों का निर्माण दलित साहित्य की प्रमुख इच्छा रही है। जाति उन्मूलन के साथ-साथ नैतिक मूल्यों के आधार पर समाज की कल्पना दलित साहित्य करता है।

दलित साहित्य अपने परिवेश एवं समाज से गहरा सरोकार रखता है। यह साहित्य जाति व्यवस्था से मुक्ति, वैज्ञानिक सोच व संवेदनशीलता का साहित्यिक हस्ताक्षेप है, जो अंधविश्वासों, अन्याय एवं शोषण के विरोध होकर मनुष्य को मुक्त करता है। दलित साहित्य में निजी दुख से अधिक समाज की पीडा का व्यापक चित्रण मिलता है।

दलित समाज में सामाजिक चेतना उत्पन्न करना, सदियों से खोया आत्मसम्मान लौटाना, सामाजिक परिवर्तन आदि दलित साहित्य का प्रबल लक्ष्य है। इसलिए यह साहित्य भारतीय संवैधानिक अधिकारों की प्राप्ती की बात करता है l इन सबकी प्राप्ती केलिए दलित साहित्य आक्रोश से परिपूर्ण है परन्तु उसमें एक गहरी वेदना भी भरी पडी है। इसी कारण यह आक्रोश के साथ-साथ वेदना का साहित्य भी है। यही दोनों तत्व इसे साहित्य की गहराई से जो़डते हैं।

दलित साहित्य प्रेरणा और शक्ति का साहित्य है यह प्रेरणा और शक्ति विभिन्न दलित आंदोलन द्वारा मिलती है l यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक आंदोलन ही है lइस आंदोलन के

,

पीछे बहुत बड़ी वैचारिक परंपरा रही है उसके सामाजिक सरोकार है जिसके साथ दलित साहित्य का गहरा संबंध है।

ज्योतिबा फुले और डॉ. अंबेडकर दलित विमर्श और साहित्य आन्दोलन का आधार बने ,जिससे आज सामाजिक परिवर्तन का विकल्प प्रस्तुत हुआ है।दलित साहित्य आन्दोलन फूले और अम्बेडकर की वैचारिकी को आधार बनाकर समतामूलक व्यवस्था तैयार कर रहा है। दलित शब्द अस्मिताबोध का सूचक है जो साहित्य के साथ जुडकर एक ऐसी साहित्य धारा की ओर संकेत करता है जो मानवीय सरोकारों और संवेदनाओं की यथार्थवादी अभिव्यक्ति है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि स्पष्ट शब्दों में कहते है कि - 3"दलित चेतना का सीधा संबंध अंबेडकर दर्शन से है। वही प्रेरणास्त्रोत भी है सामाजिक उत्पीडन, सामन्ती सोच, वर्ण वयवस्था से उपजी ऊँच नीच ने दलितों को शताब्दियों से मानसिक गुलामी में जकडकर रखा हुआ था l उसकी मुक्ति के तमाम रास्ते बंद थे। इस गुलामी से मुक्त होने का विचार ही दलित चेतना है जिसे ज्योतिबा फुले और डॉ. अंबेडकर ने दार्शनिक आधार दिया।"[3]

दलित साहित्य अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करते हुए तथा साहित्य और सैदान्तिक स्तर पर अनेक अंतर्विरोधों से घिरा होने पर भी भारतीय अभिजात्यवादी और सामंती मानसिकता और वर्ण व्यवस्था केलिए चुनौती खडी करने में निरंतर सफल हो रहा है। दलित साहित्य की यही शक्ति उसकी समकालीनता का द्योतक है।इस साहित्य में सामाजिक शोषण, भेदभाव और वर्जनाओं से मुक्ति और मानव अधिकारों की सशक्त आवाज़ है। दलित साहित्य यह अनुभव करता है कि भारतीय समाज में एक ऐसी संगाठित विचारधारा की

,

आवश्यकता है जो एक नवीन समाज की स्थापना करे -ऐसे समाज की स्थापना जिसका मूलाधार न्याय, स्वतंत्रता, समता एवं भ्रातृत्व और प्रजातांत्रिक है।

आधुनिक विज्ञान को स्वीकारते हुए नवीन जीवन शैली, आचार -विचार तथा व्यवहारिक पक्ष का स्वागत करने वाला साहित्य है दलित साहित्य l जैसे ही परंपरागत साहित्य में जाति भेद, शुद्धता, वंशवाद , पुरोहितवाद, भगवान आदि सनातनी विचारों का समर्थन होता है वैसे ही दलित साहित्य जाति भेद शुद्धता श्रेष्ठता , वंशवाद,पुरोहित वाद का खंडन करते हुए सामाजिक पृष्ठभूमि पर नये ढंग से परिभाषित करने का काम करता है l असल में दलित साहित्य सनातनी विचारधारा को जड़ से उखाड़ फेंकने का आह्वान करता है l ब्राह्मणवादी व्यवस्था ही समाज के विभाजन का मुख्य कारण स्रोत है इसी कारण समाज में जाति व्यवस्था ,ऊंच नीच की भावना, स्त्रियों के प्रति अन्याय आदि भावनाएं फैली हैं समकालीन दलित साहित्य वैचारिकता महात्मा फुले, अम्बेड़कर , पेरियार और अय्यनकाली की जीवन दृष्टि से अधिक प्रभावित है।

1.3 दलित साहित्य का स्वरूप

दलित साहित्य वह साहित्य है जो सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्रों में पिछडे हुए उत्पीडित, अपमानित शोषित जन की पीडा को व्यक्त करता है। यह साहित्य कठोर अनुभवों पर आधारित साहित्य है। इसमें आक्रोश और विद्रोह की भावना मुखर है। भारतीय दलित साहित्य का स्वरूप निश्चय करने से पूर्व हमें उन मानसिकता को समझना होगा जिनके द्वारा इस साहित्य का निर्माण हुआ है l

दलित साहित्य यदि प्रगतिशील साहित्य की दृष्टि से स्वयं को जो़डता है तो व्यक्त होता है कि वैचारिक स्तर पर उसकी प्रगतिशील दृष्टि ब्लैक साहित्य व स्त्रीवादी या स्त्री केन्द्रित

,

साहित्य से भी निकट है। दलित साहित्य परंपरागत साहित्यिक अवधारणाओं एवं मानदण्डों का विखण्डन करके नई अवधारणाएँ और मानदण्ड निर्मित करता है। दलित लेखक दलित चेतना और संवेदना के माध्यम से अपनी एक पृथक साहित्यक धारा का निर्माण करता है।

दलित साहित्य दलितों का साहित्यक आन्दोलन ही नहीं उनका सांस्कृतिक आन्दोलन भी है। इसका केन्द्र में मनुष्य है। इसलिए इसके मूल स्वरूप में सामाजिक सरोकार से जुडाव व वर्ण तथा जाति व्यवस्था का नकार है। दलित साहित्य की अनुभूति परम्परागत साहित्य से बिल्कुल अलग है।

दलित साहित्य का मुख्य स्वरूप मुख्यधारा से वंचित लोगों द्वारा लिखे गये साहित्य के रूप में निर्मित हुआ है l यह साहित्य में लोकतांत्रिक प्रक्रिया को स्थापित करने का प्रयास कर रहा है, जिसके मूल में अंबेडकर का विचार दर्शन है। दलित साहित्यकार विश्व शांति के कामना करता है। समाज में समानता तथा मानवीयता की आग्रह रखती है l डॉ.अंबेडकर के विचारों से प्रभावित होने के कारण दलित साहित्यकारों की साहित्यिक धारा अपनी समाज की समस्याओं के साथ-साथ विश्व की समानता तथा आत्मीयता की माँग करते हुए दिखाई पड़ती है। इसका मुख्य उद्देश्य मानवता की प्रतिस्थापना करना है l दलित साहित्यकार मानव अधिकार की स्थापना के लिए हमेशा प्रयत्नशील है।

एक विचारधारात्मक आन्दोलन होने के कारण दलित साहित्य की मूल प्रेरणा बुद्ध के समतामूलक समाज की संकल्पना, सिद्धों व नाथों की वर्ण विरोधी दृष्टि के साथ सन्त कवियों की मानवतावादी दृष्टि से भी है। भारतीय स्तर पर समय समय पर होनेवाले आन्दोलन भी दलित चेतना प्रदान करने में सक्रिय रहा है। इन आन्दोलनों के साथ ही अम्बेडकर की दलित मुक्ति चेतना से दलित साहित्य का स्वरूप निर्मित हुआ है।

,

कृष्ण कुमार रत्तु के अनुसार- 4"दलित साहित्य में वस्तुतः दलित अस्मिता और अस्तित्व केलिए ब्राह्मणवाद का नकार आवश्यक है। नकार और विरोध की यह आग ही दलित साहित्य आन्दोलन की शक्ति है यदि यह आग नहीं रहेंगी तो फिर दलित साहित्य के कोई मायने नहीं रहेंगे।"[4]

दलित साहित्य सवर्ण साहित्य को अपना साहित्य नहीं मानता क्योंकि कभी इस साहित्य में दलित पीडा का प्रस्तुतीकरण हुआ ही नहीं। सदियों के शोषण, अपमान व संत्रास से उपजा दलित साहित्य आक्रामक तेवर के रूप में अभिव्यक्त हुआ है। दलितों केलिए आर्थिक प्रतिष्ठा से अधिक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रतिष्ठा है, जो कि दलित साहित्य का मूल दर्शन और लक्ष्य है। इसलिए दलित साहित्य आर्थिक समानता की अपेक्षा अम्बेडकर दर्शन की सामाजिक समानता की बात करता है l

1.4 भारतीय दलित कविता

भारत के सभी भाषाओं में दलित साहित्य लिखा जा रहा है। भारत में दलित साहित्य एक प्रकार के विरोध, आक्रोश और क्रोध का साहित्य है।

डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव अपने लेख 'दलित विमर्श के अंतर्द्वद्व एवं सामाजिक सरोकार' में लिखते है कि- 5"इक्कीसवीं सदी की शैशवावस्था में जब साहित्य के कुलीन साधक पर्याय की दुनिया से पलायन कर उलट आधुनिकता का घोसल गढ रहे हैं, वही वर्तमान का दलित साहित्य मनुष्यता केलिए संघर्ष कर रहा है। परिवर्तन पहले समाज में आता है फिर साहित्य में। जातियों के बीच सत्ता का निरंतर संघर्ष चलता रहता है। समकालीन दलित लेखन व्यापक परिवर्तनकारी उद्देश्यों को लेकर चल रहा है। वह समाज में सकारात्मक परिवर्तन करता चाहता है।"[5]

,

भारत की सभी भाषाओं में दलित जीवन का एक ही इतिहास है। पीडा का दशा एवं वैचारिकता भी एक जैसी है। लेकिन बस भाषा का तेवर भिन्न है। दलित कविता अपनी यातनाओं के अतीत के साथ गहराई से साथ जुडी हुई है जिससे उसकी संप्रेक्षणीयता बनी हुई है।

समकालीन दलित कविता की परंपरा के अंतर्गत अनेक कवियों ने अपनी रचना से दलित कविता को समृद्ध किया है। दलित कविता जाति विशेष से उठकर अपने सामाजिक उद्देश्यों की पुष्ट करती नज़र आती है। भारतीय दलित कविता का आन्दोलन चेतना के स्तर पर बहुत गहराई से जुडी हुई है। जिसकी जड में सदियों का अन्याय ,अत्याचार और शोषण का इतिहास है। इसलिए का दलित कविता समय के दौर में दलित आन्दोलन को स्थायित्व प्रदान करनेवाली कविता है। वह वर्णव्यवस्था के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक वर्चस्व के खिलाफ प्रतिरोधात्मकता का अपना नया मोर्चा निर्मित करता है। यह साहित्य कठोर अनुभवों पर आधारित साहित्य है l इसमें आक्रोश और विद्रोह की भावना मुखर है l

भारतीय दलित कविता का सांस्कृतिक चेतना प्राचीन मिथकों से ही प्राण पाती है। परंपरागत मिथकों के रहस्यों को उद्घाटित करके उन्हें नया अर्थ देती है और फलतः वे ही मिथक दलितों के लिए शक्ति का प्रतीक बन जाते हैं। एकलव्य, शंबुक आदि ऐसे ही मिथकों का उदाहरण है। दलित साहित्य की यह अवधारणा सर्वमान्य है कि यह प्रतिरोध का साहित्य है, इसलिए वह सभी पौराणिक परंपराओं और मान्यताओं पर आघात करने से नहीं चूकता। दलित कविता का विद्रोह व्यक्ति स्वाधीनता की प्रखर चेतना से मुखरित है।

,

भारतीय दलित कविता दलित समाज के अस्तित्व का बेहतर बनाने केलिए शिक्षा को सबसे बडा हथियार मानती है। इसलिए दलित समाज अपनी उन्नति केलिए शिक्षा को सकारात्मक रूप में प्रमुखता देती है l

दलित कविता में स्वाभिमान, सम्मान एवं अस्मिताबोध की खोज है। इसमें समानता पर बल दिया गया है। दलित कविता की मान्यता है कि समाज के विभिन्न स्तर के लोगों को समानता की दृष्टि से देखा जाएँ। दलित कविता का उद्देश्य दलितों में आत्मबोध जाग्रत करना है l इस कविता में सामाजिक शोषण, भेदभाव और वर्जनाओं से मुक्ति और मानव अधिकारों की सशक्त आवाज़ है। विभिन्न भारतीय भाषाओं में दलित कविता के विकास पर आगे विश्लेषण करेंगे l

1.5 हिन्दी दलित कविता

दलित साहित्य आज केवल मराठी का साहित्य नहीं अपितु भारत की अपमानित,दमित,बहिष्कृत और प्रताडित जनता का साहित्य बन गया है। दलित साहित्य ने हिन्दी साहित्य को एक नयी पहचान दी है। साहित्य ने केवल कुलीन मनुष्य के श्रृंगार और उसके मानवतावाद को ही चित्रित किया है lपरन्तु आज का साहित्य प्रताडित मनुष्य की आत्मा को और उसकी यातनाओं को भी अभिव्यक्त करता है।

हिन्दी प्रदेश में दलित साहित्य के विकास की गति धीमी दिखाई पडती हैlउसके कई कारण है हिन्दी प्रान्तों में दलित आन्दोलन कभी भी प्रमुख आन्दोलन नहीं रहा है ,न राजनीतिक स्तर पर न ही सामाजिक स्तर पर। हिन्दी दलित साहित्य में सामाजिक दर्द के साथ जातिवाद, शोषण तथा उत्पीडन की पीडा भी है। इसीलिए दलित साहित्य आज के वक्त का साहित्य है।

,

डॉ. सुनीता साखरे के अनुसार 6"कविता मनुष्य की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सबसे पुराना माध्यम रही है। हिन्दी की दलित कविता भी इसका अपवाद नहीं है। हिन्दी दलित कविता की परंपरा रैदास और कबीर से होती हुई। हीरा डोम और अछुतानंन्द तक आई है।"[6]

आदिकाल से काव्य मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करने का सबसे सटीक, संक्षिप्त और सराहनीय विधा रही है। इसलिए दलित साहित्य की शुरुआत भी कविता से ही हुई है। हीराडोम द्वारा रचित .'अछुत की शिकायत' नामक कविता'1914 में सरस्वती पत्रिका में छपी थी। दलित कविता के इतिहास में हीरा डोम की 'अछुत की शिकायत' शीर्षक से छपी यह रचना दलित कविता का आरंभ बिंदु मानी जा सकती है।

हिन्दी में हीरा डोम से शुरु हुई दलित कविता का सफर निरंतर ज़ारी है। हीरा डोम की कविता वर्ण व्यवस्था को प्रश्नाकित करते हुए प्रतिरोध के अविस्मरणीय कविता लिखती है। इस कविता के संदर्भ में महत्वपूर्ण यह है कि यह बाबा साहब अंबेडकर के जो दलित चिंतन और साहित्य के केंद्रीय दार्शनिक है उनके भारतीय राजनीति में उद्भव से पहले की कविता है । यहाँ यह रेखांकित करना भी प्रासंगिक होगा कि यह वर्णव्यवस्था पर प्रश्न करने वाले बीसवीं सदी की पहली कविता है ।हिन्दी दलित कविता की स्थापना में कुछ काव्यसंकलन का महत्वपूर्ण योगदान है । इसमें 'पीड़ा जो चीख उठी' और 'दर्द का दस्तावेज' के नाम आदि उल्लेखनीय है। 'पीडा जो चीख उठी' में पच्चीस दलित कवियों की दो-दो कविताएँ संकलित है। हालांकि यह प्रथम हिन्दी दलित कविता संकलन है लेकिन इसका कोई संपादक नहीं। इसकी चर्चा उतनी नहीं हो पाई जितनी होनी चाहिए थी।

,

दर्द का दस्तावेज डॉ. एन. सिंह द्वारा संपादित काव्य संकलन है 'दर्द का दस्तावेज' को हिन्दी के प्रथम दलित कविता संकलन के रूप में मान्यता मिली।

हिन्दी दलित कविता की विधिवत शुरूआत आठवें दशक से हुई। प्रारंभिक दौर में कवियों में माताप्रसाद का भीम शतक, एकलव्य दिगविजयी रावणा उल्लेखनीय है। बाद के कवियों में लालाचंद राही की 'मूक नहीं मेरी कविताएँ', डॉ.पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी 'द्वार का दस्तक', सवालों का सूरज, मूक माटी की मुखरता, डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर का 'अंधा समाज बहरे लोग', सिंधु घाटी बोल उठी, मोहनदास नैमिशराय का 'सफदर का बयान', ओमप्रकाश वाल्मीकि का 'सदियों का संताप बस्स बहुत हो चुका', डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन का 'क्रौय हुँ मैं, नई फसल', जय प्रकाश कर्दम का 'गूँगा नहीं था मैं', डॉ. दयानन्द बटरोही का 'यातना की चीख', इत्यादी कविता संग्रह उल्लेखनीय है।

प्रमुख चिंतक आनंद प्रकाश के अनुसार 7‘‘"दलित कविता की पृष्टभूमि में प्रगतिशील कविता की मीमांसा करे तो पायेंगे हिन्दी साहित्य में प्रगतिशीलता की धारा का वर्ग बढने के साथ कविता की चिंता के केन्द्र में दलित आने लगे। राष्ट्रीय-अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर दलित चेतना का विकास हुआ। इन्होंने अपने को जाना अपनी शक्ति का इन्हें अहसास हुआ।"[7]

हिंदी दलित कवियों की कविता अपने स्वानुभव को बहुत ही प्रामाणिक रूप से व्यक्त करती हैं जो उनमें केवल स्वयं का नहीं किंतु पूरे समाज की दुख दर्द को चित्रित करके मनुष्यता के लिए संघर्ष करती हैं1 उनका यह संघर्ष जीवन कविता का रूप बन गया है 1 दलित कविता मुक्ति की आवाज और मानवतावादी जीवन मूल्यों का नया रास्ता प्रशस्त करती हैं 1 इन कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से सदियों से सोए हुए संवेदनहीन दलितों को जागरूक

,

करने का कार्य किया है l भारतीय समाज की जड़ वर्ण व्यवस्था को उखाड़कर नई सिरे से समतामूलक समाज की स्थापना करना हिंदी की दलित कवियों का ध्येय है l

नवें दशक में हिंदी के जिन महत्वपूर्ण कवियों की कविताएं या काव्य संग्रह प्रकाश में आए उनमें डॉ मनोज सोनकर, डॉ राम शिरोमणि होरिल,सुखबीर सिंह ,चंद्र कुमार भारती ,प्रेम शंकर ,दयानंद बटोही, सोहनपाल सुमनाक्षर , मोहनदास नैमिष राय ,श्री जयप्रकाश कर्दम आदि का नाम उल्लेखनीय है l धार्मिक और सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह इन कवियों की कविताओं का मुख्य स्वर है l

डॉ सुखवीर सिंह की कविता 'बयान बाहर गांव' में अलग-अलग रहकर अलगाव के दुख को भोगते हुए दलित के पीड़ा को व्यक्त करती हैं। डॉ.चंद्रकुमार बरदे का कविता संग्रह 'अधूरी चिट्ठी रोशनी की' दलित चेतना की कविताओं से परिपूर्ण है l माताप्रसाद, लालचंद 'राही',डॉ पुरूषोतम 'सत्यप्रेमी' आदि हिंदी कवित के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है l

हिन्दी दलित साहित्य में सुशीला टाकभौरे, डॉ. कुसुममेघवाल, रजनी तिलक, पूनम तुषामढ, रजनी अनुरागी, हेमलता महेश्वर, नीरा परमार, सुमित्र महरौल, रजनी यादव, कान्ता भीमराव, रजनी दिशोरिया, नरेशकुमारी, डॉ.विमला थोरात, अनीता भारती, व पुष्पा विवेक आदि कवयित्रियों ने दलित साहित्य को स्त्रीवादी चेतना से संबन्ध किया है। स्त्रीवादी स्वर से ओतप्रोत उनकी कविताओं में पितृसत्ता व जातिवाद के विनाश की आकाक्षाएँ प्रकट है।

दलित स्त्री कविता मध्यवर्गीय मूल्यों का ज़िक्र करती हुई बाज़ारवाद, सौन्दर्य और मिथकों का आलोचना की गई है। दलित कवयित्रियाँ अपने समाज के दर्द को अपनी कविता में अभिव्यक्त करती है।

,

कुसुम मेघवाल की कविता संग्रह 'कैसे सहती हो तुम नारी इतनी पीडा' समाज के सामंती जकडन पर प्रश्न करता है। कुसुम मेघवाल राजस्थान की एकमात्र दलित कवयित्री और नेता है 1 रजनी तिलक हिन्दी जगत के स्त्रीवादी और दलित आंदोलन में अग्रणी कार्यकर्ता है। उनके काव्य संग्रह 'पदचाप' व 'हवा सी बँचैने युवतियाँ' में उन्होंने दलित व स्त्री जीवन के विभिन्न रूपों, स्थिती व संघर्षों को शब्द दिया है।

रजत रानी मीनू की लम्बी कविता "पिता भी होती है माँ" में साधारण स्त्रीवादी सोच से हटकर पिता के प्रति ईमानदारी का भाव प्रकट किया है। मिथकों को तोडती हुई दलित स्त्री कविता समाज के इस मूल्यबोध की ओर इशारा करती प्रतीत होती है।

रजनी दिशोरिया की कविता 'कुतेवाली' उच्चजातीय मध्यवर्गीय स्त्री की जीवनशैली और उसके मनोभावों को चित्रित करती है। नीरा परमार, हेमलता महिश्वर, रजनी दिशोरिया आदि की कविताओं की दलित स्त्री अपनी असीम आज़ादी केलिए लडती है 1 वे घर के बाहर की दुनिया को महसूस करके उसमें जीना चाहती है। पुष्पा विवेक और किरण देवी भारती की कविता स्त्री मन और उसके जीवन में छापी निराशा को निकाल फेंकने की हिम्मत देनेवाली है।

पूनम तुषामड का काव्य संग्रह 'माँ मुझे मत दो,' रजनी अनुरागी की कविता संग्रह 'बिना किसी भूमिका के' कविता संग्रहों ने सामाजिक वर्जनाओं को तोडकर एक नये मूल्यबोध को स्थापित किया है। दलित कवयित्रीयों ने अपनी कविता में नये बिंब और नये प्रतिमान गढ़े है।

,

1.6 मराठी दलित कविता

मराठी दलित साहित्य महाराष्ट्र के आन्दोलन के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होता है। महाराष्ट्र में भीम आन्दोलन की शुरुआत 13 वीं सदी में होती है। उस काल में दो संप्रदायों का प्रारंभ होता है। एक महानुभव संप्रदाय और दूसरा चारकारी संप्रदाय। चारकारी संप्रदाय में विभिन्न जातियों के संतों ने भक्ति और भक्ति परक रचनाओं से दलितों की समस्याओं को महत्वपूर्ण स्थान दिया है 1 जनकवियों ने लोकगीतों के ज़रिये जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता का चित्रण किया। घीरे धीरे सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करनेवालों कुछ जन कवियों ने भी दलित कविताएँ लिखी। मराठी दलित कविता में संघर्ष और विरोध का स्वर मुखरित है।

दलित साहित्य को बढावा देने में मराठी में प्रकाशित बहुत सी पत्र-पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्रोहात्मक कवियों में दया पवार, नामदेव दसल, वामन निम्नालंकर, अर्जुन डांगले आदि का नाम प्रमुख है। मराठी दलित साहित्यकारों ने 'विद्रोह' और 'अस्मितादर्श आदि पत्रिकाओं के जरिए दलित साहित्य को लोकप्रिय बनाने में काफी सहायता प्रदान की 1 आत्मकथा की दृष्टि से भी मराती दलित साहित्य बहुत ही संपन्न है। जो बाद में पूरे भारत के दलित साहित्य केलिए एक प्रेरणादायक विधा के रूप में उभरकर आ गया था।

दलित साहित्य मराठी साहित्य में सामाजिक परिवर्तन की माँग को लेकर प्रस्तुत हुआ है। मनुष्य की एक नई पहचान करने वाले साहित्य के रूप में दलित साहित्य उभरा है। दलित साहित्य के बारे में कमलेश्वर ने कहा था 8 "जिस देश की आधी मानवता अपमान से पीडित

,

हो, उस देश में स्वाभिमान से यह कह सकने वाला साहित्य कि हम अपमान पीडित मानवता केलिए अपने को समर्पित करते है मराठी के दलित साहित्य के अलावा दूसरा नहीं है।8

बाबा साहब अम्ब्रेडकर ही मराठी दलित साहित्य के प्रेरणास्त्रोत है ।मराठी दलित साहित्य डॉ.बाबा साहब की प्रेरणा से और उनके द्वारा आरम्भ किये गये दलित मुक्ति आन्दोलन से जुडा है। उन्होंने दलित समाज को शिक्षा के द्वारा स्वालंबन और स्वाभिमान पाने की प्रेरणा दी।

मराठी दलित साहित्य समाज व्यवस्था में दलितों को समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय दिलाने के क्रांतिकारी उद्देश्य के साथ रचनात्मकता के नए आवाज खोल रहा है।

मराठी साहित्य में केशवसुत ने अपनी कविताओं के माध्यम से नये युगीन मूल्यों का विद्रोही स्वर व्यक्त किया है। केशवसुत ने अपने कविताओं के ज़रिए सामाजिक विषमता नकारने का प्रयास किया है। 'एक आन्त्यच्या मुलाया प्रश्न' इस कविता के माध्यम से केशवसुत ने दलित जीवन चेतना को अभिव्यक्त किया है।

मराठी दलित कविता का सबसे तीव्र अंश उनकी मानवतावाद और विद्रोह है। दलित कवियों के विद्रोह के मूल में हिन्दु समाज व्यवस्था के द्वारा दलितों पर की गई सामाजिक, राजनीतिक अन्याय के साथ-साथ सांस्कृतिक उपेक्षा भी है। मराठी कवियों ने सामाजिक विषमता का विरोध किया। नामदेव दशाल, अर्जुन डांगले, नारायण सुर्व, दया पवार, वामन निबालकर, यशवंत मनोहर, राजा ढाले, अरुणा कांबले आदि कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से मानवमुक्ति का आन्दोलन छेडा है l

,

साठोत्तरी साहित्य में मराठी दलित कविता का आविर्भाव एक विस्फोट के रूप में हुआ। 'अस्मितादर्श' नामक पत्रिका का दलित साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। दलित साहित्यधारा का दिशा देने का ऐतिहासिक कार्य इसी पत्रिका ने किया है। दलित मुक्ति का जो संघर्ष आरंभ हुआ उसके प्रेरणा लेकर किसन फागु बनसोडे, शहीर घेवडे, वामन कर्डक, दीनबंधु, ना.श.शेडे आदि कवियों ने दलित मुक्ति केलिए कविता को हथियार बनाया।

किसन फागु बनसोडे पहले मराठी कवि है जिन्होंने दलितों के लाचार जीवन का उपहास कर उनमें आत्मसम्मान की भावना जाग्रत करने का प्रयास किया। 1980 के बाद मराठी दलित साहित्य के विकास में महिलाओं का योगदान भी अनगिनत है। तेती कांबले ,कुमुद पावडे, मुक्ता सर्वगोड, शांताबाई कांबले, शलावाईं दाणी जैसी दलित महिलाओं ने कलम के माध्यम से अपनी आवाज़ उठायी। उन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक अव्यवस्था, जातीयता के आधार पर किया गया शोषण और अत्याचार से बेहाल समाज का चित्रण किया है।

1.7 तेलुगु दलित कविता

1980 के दशक में तेलुगु कविता ने दलित विद्रोह के साथ एक नया मोड लिया। करमचेडु में दलितों पर हुए अत्याचार के बाद सामान्य रूप से दलित साहित्य और विशेष रूप से 1980 के दशक के बाद निर्मित तेलुगु दलित साहित्य अतीव क्रांतिकारी और उग्रवादी बन गया l ब्राह्मणवाद और दलितों के प्रति उसका अन्याय प्रबल जातियों के आधिपत्य का विरोध, क्रोध, स्वाभिमान, जड की खोज, सामाजिक शोषण दलित साहित्य का विषय है lकरमचेडु नीरुकोंडा में दलितों पर अत्याचार के परिणाम स्वरूप तेलुंगु दलित कवि अत्यधिक सतर्क हो गए और उन्होंने अम्बेडकरवाद को अपना दर्शन घोषित किया। शिवसागर,

,

कोलाकापुरी एनोय, सिखमणि, सदीश चंदर कालेकुरी प्रसाद आदि कई तेलुग कवियों ने अपनी कविताओं को दलितवाद से भर दिया।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लिखी गई कविता की तुलना में आंध्र प्रदेश दलित महासभा के गठन के बाद लिखी गई कविता बहुत कट्टरपंथी है। कवियों ने अपनी रचनाओं में अपना गुस्सा और विरोध दिखाया और प्रमुख जातियों के वर्चस्व को चुनौती दी। तेलुगु दलित कविता जातिगत भेदभाव के अभ्यास के प्रति आलोचना भी करती है।

दलितों की समस्याओं को तेलुगु कविता में प्रतिबिंबित करनेवाले प्रथम कवि हैं गुर्रम जाषुआ। उन्होंने "गब्बिलम्' और "अनाथ' जैसी कविताओं के जरिए समाज में प्रचलित छूआछूत समस्या पर प्रकाश डालकर दलितों में आक्रोश उत्पन्न करने का भरसक प्रयास किया था। जाषुवा के बाद जाला रंगाकवि, कुसुमा धर्मन्व और नक्का चिनवेकाया जैसे दलित कवि अस्पृश्यता के विरोध में कविताएँ लिखने लगे। इनकी कविताओं से तत्कालीन समाज पर काफी प्रभाव पड़ा था।

दलितों के मसीहा अम्बेडकर के चिन्तन और आदर्श को महत्व प्रदान करने वाले कवि भीमन्ना ने सामाजिक भेद-भाव को हटाने के लिए अपनी कविताओं के माध्यम से दलितों में चेतना उत्पन्न की थी। इनकी कविताओं में सामाजिक समानता का स्वर है। तेलुगु भाषा में लिखी गई दलित कविताओं में कवि कत्ति पद्मराव की कविता जनजीतम्, देशम् डैरी आदि बहुचर्चित हैं। दलित युवा कवियों में मास्टर्जी एक प्रतिभाधन कवि है। "प्रणाम स्वीकार करो बाबा अम्बेडकर' उनकी एक प्रमुख कविता है "रंडि रो दलितन्ना' (आओ दलित भाइयो) उनका एक ऐसा दलित काव्य संग्रह है जिसमें सशक्त आंदोलन के लिए दलितों को उत्प्रेरित करने की भरपूर भावना पाई जाती है।

,

आधुनिक काल में दलितों की दीन दशा के प्रति वेदना प्रकट करनेवाली अनेक कविताएँ लिखी गयी है। उनमें प्रसिद्ध दलित कवि जाषुवा और भीमन्ना है। उनका कथ्य दलित जीवन है और लक्ष्य सामाजिक जीवन का अमूल परिवर्तन।

तेलुगु दलित कविता के पहली पीढी के दलित कवियों और नवीनतम कवियों की रचनाओं में काफी बदलाव है। पहले पीढी के कवि जुगुप्सा, ग्लानि, वेदना, क्रोध आदि भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ सामाजिक भेदभावों का विरोध करनेवाले मानवतावादी थे l नई पीढी की दलित कवियों की कविताओं में सामाजिक दृष्टि में परिवर्तन न होने के कारण उत्पन्न तीव्र क्रोध, द्वेष, विरोध आदि भावों की व्यंजना के साथ व्यवस्था के प्रति विद्रोह है।

तेलुगु दलित कविता में विरोध की तीव्रता को व्यक्त करने केलिए गाली-गलौज की भाषा का प्रयोग हुआ है, जो मन की कुंठा और व्यथा का परिणाम है। नये दलित कवियों के चिन्तन और भावबोध बहुती ही सजग और सतर्क है।

तेलुग में दलित महिला साहित्य की शुरुआत वामपंथी और मुख्यधारा के महिला आंदोलनों के खिलाफ प्रतिक्रिया के रूप में हुई l दलित महिला लेखकों ने न केवल उच्चजाति के पुरुषों द्वारा बल्कि उनके दलित पुरुषों द्वारा होने वाले शोषण पर भी कडी आपत्ति जताई। दलित साहित्य में अपने उत्पीडकों के खिलाफ विरोध के विषय के अलावा उनके अपने इतिहास और संस्कृति की जडों की और वापस जाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया । दलित कवयित्रियों का आविर्भाव गोगु श्यामला और जूपका सुभद्रा जैसे दलित महिलाओं के काव्य संकलन से ही हुआ। तेलुगु मुख्यधारा के लेखन का मूल्यांकन करने केलिए जिस पैमाने का उपयोग किया जाता है, उसका उपयोग दलित लेखन के मूल्यांकन केलिए नहीं किया जा

,

सकता 1 आधुनिक तेलुगु दलित कविता पर विचार करते है तो वह सिद्धान्तों,वादोंऔर आंदोलनों से अधिक प्रभावित लगता है 11

1.8 मलयालम दलित कविता

दलित साहित्य सामाजिक रूप से हमें बाँधनेवाले जाति, वर्ण, मूल्य और उसकी सौन्दर्य संकल्पना के खिलाफ इतिहास द्वारा निर्मित आदर्श साहित्य है। समता, स्वतंत्रता, बन्धुत्व, प्रेम,न्याय और अधिकार हेतु विद्रोह के नये तेवर लेकर मलयालम दलित कविता के माध्यम से समाज के सामने आई।

दलित कवियों की कविता अपने स्वानुभव को बहुत ही प्रामाणिक रूप से व्यक्त करती है जो उनमें केवल खुद का नहीं किन्तु पूरे समाज के दुख दर्द को चित्रित करके मनुष्यता केलिए संघर्ष करती है। दलित कवियों ने अपने कविता के माध्यम से सदियों से बिखरे हुए संवेदनहीन दलितों को जागरूक करने का कार्य किया है।

केरल का सामाजिक उत्थान नारायण गुरु के उदात्त चिन्तन, अय्यन काली की सामुदायिक न्याय संकल्पना आदि के द्वारा विकास प्राप्त हुआ 1 केरल की दलित जनता को सदियों तक मानवाधिकारों से वंचित होना पड़ा था। अछूत घोषित किए गए इस वर्ग ने जिस गुलामी और पराधीनता का अनुभव किया था वह सचमुच ही दर्दनाक एवं भयानक था। जिसका बखुबी से चित्रण मलयालम दलित साहित्य ने किया है।

आधुनिक मलयालम साहित्य में दलित कविता एक विशिष्ट विधा के रूप में उभर कर आयी है 1 आक्रोश, विद्रोह और संघर्ष के साथ साथ दलित साहित्य नये सौन्दर्यबोध की स्थापना कर रही है।

,

पंडित करुप्पन के "जातिकुम्मी' शुरुआती दलित कविताओं में प्रमुख है। पोयकयिल योहन्नान या कुमारगुरू जो एक सामाजिक कार्यकर्ता और लेखक थे l उन्होंने कई भजन लिखे जिसने उनकी प्रत्यक्ष रक्षा दैव सभा (PRDS) नामक असहमतिपूर्ण संप्रदाय की विचारधारा की पोषण किया। करुप्पन और पोयकयिल कुमारगुरु जैसे प्रारंभिक दलित कवियों की कविता में राजनीतिक जागरण की बात बहुत ही उल्लेखनीय है।

पोयकयिल अप्पच्चन और के.के दास की कविताएँ ऐतिहासिक प्रतिनिधित्व करनेवाली है। अप्पच्चन की कविताएँ हाशिये पर पडे लोगों की पीडा, लालसाओं और आशाओं को व्यक्त करती है। के.के. दास की कविता दलितों की दुर्दशा पर विलाप के रूप में समाहित होती है।

अस्सी दशक में मलयालम में दलित कविता के पुनर्जागरण में उभरनेवाले पहले कवि राघवन अथोली की कविता में पाए जानेवाली साम्यवाद के खिलाफ तीव्र व्यंग्य भडकता है। राघवन अथोली की कविता 'काला लफ़ज' इसकेलिए एक सशक्त उदाहरण के रूप में आनेवाली कविता है। भारत के कई भाषा साहित्यों में दलित लेखन पहचान की राजनीति में एक प्रमुख भूमिका निभाती है।

एस. जोसफ की कविताएँ उनके द्वारा खीचे गए दलित जीवन के विस्तृत चित्रों केलिए जानी जाती है। रेणुकुमार की कविताएँ अनुठी कल्पना और मुहावरों से भरपूर है। कवियूर मुरली के 'स्क्रू पिन' एक रूपक के रूप में 'स्क्रू पिन' का उपयोग करके उत्तर उपनिवेशित भारत में दलितों के इतिहास को खोजती है।

दलितों की सामाजिक न्याय की अभिलाषा, स्वत्त्वबोध, बौद्ध शब्दों की व्यापकता आदि मलयालम दलित साहित्य की मुख्य विशेषता है। दलित कविता में राजनीतिक भावबोध

,

अलग रूप से नहीं बल्कि अंर्तनिहित रूप में निहित है। मलयालम दलित कविता सामाजिक न्याय, समता, राजनीतिक भावबोध आदि को जागृत करने में बहुत सक्षम है। मलयालम का दलित साहित्य भी परंपरागत भाषा और मूल्यबोध में लगातार घुसपैठ और निडर बनकर आगे बढ़ रहा है।

मलयालम में दलित साहित्य का उद्गम नयी पीढी के दलितों की आत्माभिव्याकि के तौर पर हुआ है। जिन्हें उच्च शिक्षा पाने का मौका मिला है उन्होंने अपने अनुभव नये तरीके से प्रस्तुत किया है। सांस्कृतिक सत्ता को प्रतिष्टित कर सामाजिक क्रांति केलिए प्रयत्न करनेवाले इन साहित्यकारों ने दलित स्वत्त्व रूपायन में अहम भूमिका निभाई है।

मलयालम साहित्य में दलित कविता एक विशिष्ट विधा के रूप में एक नये सौन्दर्यबोध के साथ पहुँची l वह सौन्दर्यशास्त्रीय आधार पर रूपायित नये अवबोध व नयी चेतना द्वारा मलयालम भाषियों के सौन्दर्यबोध को प्रभावित कर रही है। मलयालम दलित साहित्य का आदिकालिन स्वरूप पंरपरागत दलित गीतों में मिलता है। इन गीतों से तत्तकालीन सामाजिक व्यवस्था में दलितों की स्थिति, रहन-सहन, कला, संस्कृति, भाषा आदि से संबन्धित जानकारी प्राप्त होती है।

एम.बी. मनोज ने विश्वविद्यालय परिप्रेक्ष्य में लिखी गयी अपनी दो कविताओं 'चिलड्रन राइटिंग द एग्ज़ाम' और 'यूनिसिटी ए लेसन' में एक दलित बुद्धिजीवि की भयावह अनुभूति को व्यक्त किया हैं l इन कविताओं में उन्होंने विश्वविद्यालय में शामिल होते हुए भी एक अकादमिक संस्कृति से संबन्धित नहीं हो पाने वाले दलित बुद्धिजीवी का आंकलन किया है। डॉ ए. के. वासु की कविता 'चट्टाने, नदियों', मशीनें' कल्पना की एक शानदार चमक में बंधुआ दलित और मशीनों के बीच तुलना करती है।

,

शिवदास पुरमेरी का 'वाटर लेसन्स' केरल की दलित अर्थव्यवस्था की राजनीतिकरण केलिए उल्लेखनीय है। सन्नी कपिकोड्ड 'स्ट्रीट पमिस्ट' ,के.के शिवदास के 'वनस्पति जीवन' आदि हमेश नवीकरण करनेवाले सतत दलित जीवन दृष्टि के प्रतीक हैं।

मलयालम दलित स्त्री लेखन की अवधराणा स्त्री अस्मिता की संगठित अवधाराणा का भाग है l दलित महिला लेखन केरलीय समाज के परिवर्तनकारी कार्य का हिस्सा हैं l मलयालम दलित कविता के क्षेत्र में रचनात्मक संघर्ष करनेवाली महिलाओं का भी योगदान महत्वपूर्ण है इनमें विचिला चिराप्पाड, सती अंकामाली, मृदुलादेवी, धन्या, राधामणि, अम्बिका प्रभाकरन आदि का नाम उल्लेखनीय है।

1.9 तमिल दलित कविता

तमिल दलित साहित्य की पहचान आत्मीयता और मुखरता के आह्वान से होती है। यह अपनी गहन व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के साथ सभी परंपराओं को रौंद देता है। इस साहित्य को प्रतिरोध या घृणा के साहित्य के रूप में नहीं बल्कि स्वतंत्रता और महानता के साहित्य के रूप में देखना चाहिए। तमाम दलित साहित्य की तरह तमिल दलित साहित्य में भी आत्मकथाओं की अधिकता है।

तमिल दलित कविता कट्टरपंथी सौन्दर्यबोध का अनुसरण करती है lवह न केवल आधुनिक तमिल कविता की भाषा, रूप और सामग्री की वांचित करती है बल्कि उन मानकों को भी प्रभावित करती है जिन के द्वारा दलित कविता आंका जाता है। दलित कविता का कट्टरपंथी होने का कारण,कवियों का जीवन अनुभव और उनकी ऐतिहासिक एवं सामाजिक स्थिति है।

,

तमिल कवयित्री मीना कंदास्वामी कहती है- 9"दलित कविता अपनी व्यक्तिगत अभिव्यक्ति से सभी परंपराओं को रौंद देती है निम्न वर्ग के जीवन से चिंतित है और घोर क्रूरता से घिरा आता है। इस साहित्य को प्रतिरोध का साहित्य या घृणा का साहित्य के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्रता और महानता के साहित्य के रूप में देखा जाना चाहिए।"

तमिल दलित साहित्य पर आलोचना काफी हुई है। दलित साहित्य अपनी पहचान, आत्म अभिव्यक्ति, दलित सौन्दर्यों प्रतिमान और साहित्यक पुर्नपाठ से संबन्धित मुद्दों तक ही सीमित रही है। तमिल दलित साहित्य में दलित अपनी अनुभवात्मक वास्तविकता को आत्मकथात्मक या काल्पनिक रूप में दर्ज करता है ।तभी दलित साहित्य तमिल साहित्यक क्षेत्र में अपनी जगह बनाने में कामयाब होता है।

संघर्ष की चेतना से भिन्न होकर दलित कविता एक शक्तिशाली सौन्दर्यबोध ग्रहण करती है जो अपने स्वयं के मानक निर्धारित करता है। तमिल दलित कविता भारतीय कविता में स्थापित सत्य और सौन्दर्य के मूल्यों पर सवाल उठाती है। तमिल दलित कवियों द्वारा लिखी गई कई कविताओं में उन्होंने अपने आँखों देखी अनुभव का वर्णन किया है। डेनियल, पुमन्नी, एन डी राजकुमार , बामा आदि तमिल के प्रमुख लेखक है ।

तमिल कवयित्री सुकीर्तरानी ने अपने कविता में प्रकृति कल्पना के मौलिक रूप का प्रयोग किया है। अपने अनुभव के बारे में अपनी भाषा के ज़रिए आविष्कार करना दलित तमिल कविता की पहचान है।

समकालीन तमिल नारीवादी कवयित्रीयों ने दलितों पर अत्याचार करनेवाले जाति और लैगिक भेदभाव को चुनौती दी है। तमिल दलित स्त्रीवादी कविता दलित महिलाओं के संघर्ष, यौन उत्पीडन, और स्वतंत्रता की उनकी इच्छा को संबोधित करती है।

,

डॉ. अम्बेडकर और पेरियार के तर्कवादी और भौतिकवादी सिद्धान्तों के आलोक में तमिल दलित नारीवादी कविता के सामाजिक और राजनीतिक विषयों और सौन्दर्यशास्त्र की जाँच करना चाहिए। मीना कंदास्वामी, सुकीपंसती, मालती नेत्री, उमादेवी जैसे कवयित्रियों ने बहुत ही निडर होकर कामुकता, जाति उत्पीडन और लिंग उत्पीडन के विषयों पर लिखती हैं। उनकी कविताएं इस प्रकार दलित महिलाओं के बारे में तथाकथित धारणाओं को खुले तौर पर प्रस्तुत करता है। साथ ही यह कविता समाज और भाषा के जातिगत नियमों को चुनौती देती है। तमिल के आज की नारीवादी दलित कवियत्रियों ने पेरियार की राष्ट्रवादी राजनीति को प्रमुखता दी है।

जब दलितों ने अपने अनुभवजन्य वास्तविकता को आत्मकथा में दर्ज करना शुरू किया तभी दलित कविता तमिल साहित्य जगत में अपनी जगह बनाने में कामयाब हुई। शिवकामी, उंजाई राजन, अभिमणि, बामा, गुनशेकरम, इमायम, आदि के लेखन के जरिए दलितों को एक प्रामाणिक आवाज़ और सकारात्मक उपस्थिति मिलती है। तमिल लेखिका बामा अपनी आत्मकथातमक उपन्यास 'करुकू' से नारीवादी दलित साहित्य में स्थायी स्थान रखती है। इसमें लेखिका दलित महिलाओं को उत्पीड़न से उबरने के लिए घोषणा करती है। तमिल में दलित साहित्य विभिन्न दलित समुदायों के बीच टकराव पर आशंका व्यक्त करता है।दलित साहित्य दलित समूह के बीच अपने समुदाय के सामाजिक, राजनीतिक उत्पीड़न के खिलाफ एक संगठित प्रतिरोध की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

तमिल में दलित लेखकों ने भाषाई और सौंदर्य प्रतिमानों के अभिनव क्रांतिकारी प्रयोग तैयार करने में प्रभावी हस्ताक्षर किया है। दलित साहित्य उन आलोचकों को चुनौती देता है जो पारंपरिक सौंदर्य मापदंड के आधार पर उन्हे नकारता है। दलित साहित्य कभी भी

,

व्यक्तिगत स्वतंत्रता की वकालत नहीं करता, वह सामुदायिक समानता की बात करता है।तमिल दलित कवियों द्वारा जो वाक्य विन्यास रूप छवि और रूपक का उपयोग करते हैं वह बहुत ही कट्टरपंथी तरीके के होते है l

दलित समाज को सम्मान मिले यही दलित कवियों का सपना है और यह सपना अभी भी बहुत दूर है। तमिल दलित साहित्य दलित रचनाकारों की अपने चाहतों और सपनों की नई दुनिया को अभिव्यक्त करने का नाम है। दलित साहित्य के सौन्दर्योंशास्त्र की कसौटियाँ उसके भीतर से निकली है। दलित समाज और इतिहास में अपनी पहचान को पाने केलिए तमिल दलित कविता आज संघर्ष कर रही है।

1.10 कन्नड़ दलित कविता

कन्नड़ दलित साहित्य की शुरुआत मराठी दलित साहित्य के साथ ही हुई थी। इसकी पहली पीढ़ी में देवगुरु महादेव व सिद्धलिंगाया ने बंधायप्रस्थान अथवा बंधियों का प्रस्थान आंदोलन के द्वारा कन्नड़ दलित साहित्य को अपने चिंतन और लेखन से समृद्ध किया है l अपने काव्य संग्रह में शामिल क्रांतिकारी गीत 'क्रांति पदा','सविरारू नदीगल,' 'दलितरू वरुवरू' आदि गीतों ने सिद्धलिंगय्या को कर्नाटक में क्रांतिकारी गीत लिखने वाले एक विद्रोही कवि के रूप में काफी सम्मान दिलाया है l

साहित्य सृजन के साथ भौतिक एवं क्रियात्मक आंदोलन के प्रति बंधाय साहित्य सक्रिय रहा हैं l कन्नड़ दलित साहित्य के सबसे अधिक क्रांतिकारी अभिव्यक्ति दलित कविताओं में हुई l कन्नड़ काव्य धारा में बसवेश्वर ,शिशुनाला शरीफ आदि कई साहित्यकारों ने दलितों को उनकी गुलामी का एहसास दिलाया l मुदनकुडु चिन्नास्वामी जैसे कवियों ने सामाजिक संरचनाओं की आलोचना करने और समानता प्राप्ति केलिए कविता का उपयोग

,

किया l गंगाराम चांडाल को कन्नड़ दलित साहित्य में एक महत्वपूर्ण कवि -लेखक माना जाता है l उनके महत्वपूर्ण काव्य संग्रह 'चांडाल कुंगु' और 'जीवसेल' आदि बहुचर्चित है I

कन्नड़ के प्रमुख दलित साहित्यकार अरविंद मालगाट्टी का अपना कविता संग्रह 'नाद निनाद' में दलित समुदाय द्वारा झेले जा रहे अन्याय और उत्पीड़न और खुद को जो दुख और पीड़ा झेली है उसका भी बहुत ईमानदारी से चित्रण किया हैl मालगाट्टी की कविता मानवतावादी विचार व्यक्त करती हैं l उनकी कविताओं का एक संग्रह 'मूरने कन्नू 'यानि तीसरी आंख है l इस कविता में जातिगत विसंगतियों के कारण कवि का क्रोध हृदय में इस प्रकार जल रहा है जैसे शिव की तीसरी आंख से सृष्टि की विनाश हो रहा हो l

वरगुरु रामचंदप्पा कन्नड़ दलित साहित्य की पहली पीढ़ी की कवि हैं l उन्होंने कहानी, उपन्यास, समीक्षा आदि साहित्य के विभिन्न विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है l 'कनासिन कन्नीगे' (स्वप्न की पुत्री) 'गुलामगीते' (दास गीत)आदि उनकी प्रमुख कविता संग्रह है l

सत्यानंद पात्रोत का नाम कन्नड़ दलित कविता के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करने वाले कवि के रूप में किया जाता है lउनकी 'करीनेलाड कलेगलू', 'जानिमलिगे' आदि प्रमुख पांच काव्य संग्रहों की रचना उन्होंने की हैl उनकी कविताएं उच्च जाति और पूंजीवादी वर्ग पीढियों से दलितों पर करने वाले अत्याचार को दर्शाता हैंl

कन्नड़ दलित कवियत्रियों ने नारी जीवन की असंख्य जटिलताओं और उसकी आत्मासंघर्ष को बड़ी गहराई से प्रस्तुत किया हैl कन्नड़ दलित कवित्रियों की संख्या कम है फिर भी बड़े हिम्मत के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र में अग्रसर हो रही है l कन्नड़ दलित

,

कवयित्रियों में बी टी ललिता, सरस्वती,मीना मैसूर,सुकन्या मारुति, एच. एल पुष्पा आदि प्रमुख है l

कन्नड़ दलित कविता वंचित समुदायों में चेतना और आत्मसम्मान लाकर उनमें एकता पैदा करके उनकी आवाज बन गई है l इसमें लोगों को लोकतांत्रिक व्यवस्था में अन्याय को समझने में सक्षम बनाया l दलितों को शिक्षित ,संगठित और समाज में व्यक्त सामाजिक बुराइयों, शोषण और अमानवीय प्रथा के विरुद्ध आंदोलन करने के लिए प्रेरित किया l कन्नड़ दलित कविता ने विभिन्न दार्शनिक विचारों को आत्मसात किया है l विचारों और उनके दर्शन को आत्मसात करने पर दलित चेतना दलित आंदोलन दोनों को ही एक उचित दिशा भी दी है l विशेष रूप से इस कविता का मुख्य उद्देश्य जाति, वर्ण, लिंग, धर्म के पदानुक्रम को समाप्त करके समाज के एक नए समरस समाज की स्थापना करना और समाज में मानवीय मूल्यों को स्थापित करना हैl

निष्कर्ष

आधुनिक दलित कविता दलित आक्रोश,विद्रोह और संघर्ष के साथ साथ दलित साहित्य के नए सौंदर्यबोध की स्थापना कर रही है l संवैधानिक आरक्षण व्यवस्था ने दलितों को सामाजिक समानता दिलायी है। फिर भी उनकी सामाजिक न्याय प्राप्ति में अभी भी बहुत कुछ बाकि है जिसकी प्रेरणा का खुलकर प्रयास वह साहित्य के ज़रिए भी कर रही है। भारतीय दलित कविताओं में एक और वेदना है तो दूसरी ओर उससे मुक्ति की आग्रह हैl इसमें लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना करने का प्रयास भी है।

,

सभी दलित कवियों का विषय वस्तुमूल्य और संवेदनाएँ एक जैसी है चाहे वह प्रांतीय भाषा में लिखी गई हो या फिर हिन्दी भाषा में। दलितों का संवेदनात्मक अभिव्यक्ति के लिए भाषा एक बन्धन नहीं है।

भारतीय दलित कविता की अपनी अलग सौन्दर्यशास्त्र है और अपना भाषाशिल्प जिस पर हम आगे के अध्याय में गहराई से अध्ययन करेंगें। दलित कविता दलितों की वेदना, पीड़ा, उपेक्षा, आक्रोश और प्रतिरोध की घुरी पर टिकी है जो एक नई साहित्यक विचारधारा का निर्माण करती है।

,

सन्दर्भ ग्रंथ

1 चमन लाल - दलित साहित्य एक मूल्यांकन पृ 32

2 ओमप्रकाश वाल्मीकि- समकालीन जनमत, सितम्बर, 1994पृ.27

3. ओमप्रकाश वाल्मीकि - दलित सौंदर्य शास्त्र पृ.63

4 कृष्णकुमार रत्तु- समकालीन भारतीय दलित समाज बदला स्वरूप पऔर संघर्ष

5. डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव -'दलित विमर्श के अंतर्दद्ध एवं सामाजिक सरोकार'

6. सुनीता साखरे- हिन्दी मराठी दलित साहित्य का मूल्यांकन, पृ.31

7. आनंद प्रकाश- समकालीन कविता, प्रश्न और जिज्ञासाएँ, लोकमित्र. पृ26

8. कमलेश्वर- दलित साहित्य सम्मेलन, जनवरी 1969, औरगाबाद स्मरणिका.

9. Meena Kandasamy - Translating Feminisms page 23

,

अध्याय- दो

दलित सौंदर्यशास्त्र की अवधारणा

भूमिका

सौंन्दर्य अपने आप में विलक्षण है। असीम आनन्द प्रदान करने वाला है। सौन्दर्य को व्यख्यायित करने का प्रयास निरन्तर किया गया है l उसकी कसौटियाँ भी निर्धारित की गयी हैl परन्तू इतने व्यापक प्रयोग के बावजूद सौन्दर्य का कोई सर्वमान्य प्रतिमान आज तक नहीं बन पाया है। अनुभूतिगत भाव से जुडकर ही सौन्दर्य की परख एवं उसकी अभिव्यक्ति संभव है। सौन्दर्यशास्त्र के अध्ययन में सौन्दर्य को केवल वस्तुगत अथवा आत्मसात मानने से हटकर अनुभूतिगत एवं आनन्द प्रदान करनेवाला विषय माना गया है।

सौन्दर्यशास्त्र विश्व स्तर पर चिन्तन का विषय बना हुआ है। हिन्दी साहित्य में सौन्दर्यशास्त्र शब्द अंग्रेज़ी भाषा में Aesthetics के पर्यायवाची शब्द के रूप में प्रयोग करते है। ऐस्थेटिक्स शब्द ग्रीक के एटोटिक्स से व्युत्पन्न है जो कि आगे चलकर ऐस्थेटिक्स में परिवर्तित हो गयाl जिसका संबन्ध इन्द्रियगोचर अथवा संवेदनात्मक स्पर्श से है। सौन्दर्यशास्त्र का सामान्य अर्थ 1"वह शास्त्र जिसमें सौन्दर्य का विवेचन विश्लेषण किया जाता है वह चाहे प्रकृति, मानवमन और कलागत मूल्य किसी से भी संबन्धित हो"। 1

साहित्य जगत में सौन्दर्यशास्त्र ने आलोचना के अनेक मानदण्ड खडा किया है एक ओर स्थूल है तो दूसरी तरफ वह अनुभूतिगत है जो विचारों में घुसकर रस का संचार करता है।

,

2.1 सौन्दर्यशास्त्रीय धारणा

सौन्दर्य शास्त्र संवेदनात्मक एवं भावनात्मक मूल्यों का अध्ययन है l साहित्य की अभिव्यक्ति का मूलाधार सौंदर्य ही है l एस्थेटिक्स ग्रीक भाषा का शब्द है जिस अर्थ के लिए सौंदर्य शास्त्र प्रयुक्त होता है उसका अर्थ है ललित कला के तत्वों का सही सैद्धांतिक निरूपण और उसके आधार पर कलाकृतियों का मूल्यांकन l जीवन में सुंदर और असुंदर का अध्ययन करना अर्थात सुंदर और असुंदर के अंतर्विरोधों का अध्ययन करना सौंदर्य शास्त्र की पहली समस्या है l

सौंदर्य की अनुभूति आनंद और सुख प्रदान करती है l अनुभव की गहराई सौंदर्य के स्वरूप को और भी अधिक निखारती है l सौंदर्य से उत्पन्न होने वाले सुखद रस का अनुभव से असीम आनंद प्राप्त होता हैं l सौंदर्य से उत्पन्न होने वाले रस का अनुभव से प्राप्त होने वाले आनंद की अवस्था ही वास्तव में सौन्दर्य शास्त्र है l भारतीय विचारक हरिद्वार लाल शर्मा ने बहुत ही स्पष्ट ढंग से इस प्रकार से व्यक्त किया है 2"सौंदर्य का अनुभव व्यापक और महत्वपूर्ण है इसे हृदय सरस और जीवन उर्वर होता है बुद्धि को नवीन चेतना और कल्पना को सजीवता प्राप्त होती हैं इस महत्वपूर्ण अनुभूति का अनुशीलन करने उसके स्वरूप और स्वभाव को समझने जीवन की दूसरी अनुभूतियों के साथ इसका संबंध स्पष्ट करने तथा इसकी पुष्ट और रचनात्मक शक्ति को समझने के लिए जिससे कला का जन्म होता है हमें एक विशेष विचार माला की आवश्यकता होती है इस व्यवस्थित विचार माला को हम सौंदर्य शास्त्र कहते हैं"2

समसामायिक संदर्भों में सौन्दर्यशास्त्रीय आलोचना ने नये प्रतिमान स्थापित किये है। सौन्दर्य निरंतर मानवीय विकास के साथ सहज बना है। विशाल परिप्रेष्य में सौन्दर्य की परिकल्पना विद्यमान हैं। इसमें कल्पना, बिम्ब, प्रतीक, मिथक ,फॉटसी, व्यंग्य और यथार्थ

,

आदि सौन्दर्यशास्त्रीय धारणा सम्मिलित है। जिसको हम एक एक करके आगे विश्लेषण करेंगे।

2.1.1 कल्पना

कल्पना मनुष्य के निरपेक्ष विचार एवं भाव को सापेक्ष रूप प्रदान करती हैं। सौन्दर्यशास्त्र का संबन्ध ललित कला एवं साहित्य से है और दोनों में कल्पना की भूमिका अनिवार्य है। कल्पना के माध्यम से साहित्य में रचनाकार अनुपम रचना का तथा कला में अनूठी कलाकृति का निर्माण करता है।

कल्पना शक्ति के आधार पर कलाकार की प्रतिभा प्रौढ होकर अपना वास्तविक रूप धारण करती है। सौंन्दर्य कल्पना द्वारा और अधिक सुन्दर हो जाता है। आधुनिक विचारकों ने सौन्दर्यशास्त्र के सिद्धान्त एवं विविध आयामों पर विचार करते हुए कल्पना को सौन्दर्यशास्त्र का अनिवार्य तत्व माना है। कल्पना काव्य का अभिन्न अंग है,इसके सुखद क्षणों से जुडने पर रस की उत्पत्ति होती है और रस से आनन्द का। आनन्द ही सौन्दर्यशास्त्र का उद्देश्य है।

कल्पना की सहयोग से रचना शक्ति का विकास होता हे। साहित्य में अभिव्यक्त होनेवाली सुखद कल्पना जो रचना सौंदर्य है पाठक को आनंद और जीवन की नई दिशा प्रदान करती है। कल्पना उपयोगी एवं अर्थपूर्ण होना चाहिए। कल्पना को अनुभूति एवं अभिव्यक्ति का आधार मानते हुए प्रमुख आलोचक नंद दुलारे वाजपेयी लिखते हैं की 3"कल्पना शब्द उसे संपूर्ण प्रक्रिया का द्योतक है जो काव्य मेंआदि से अंत तक व्याप्त रहती है कल्पना का मूल स्रोत अनुभूति है और उसकी परिणति है काव्य के रुपात्मक अभिव्यंजना इस प्रक्रिया में गतिमान तत्व अनुभूति हैं। इस प्रकार कल्पना अनुभूति की अभिव्यांचना तक विस्तृत है" 3

,

2.1.2 बिम्ब

बिम्ब ललित कला का मुख्य तत्व है। बिम्ब का शाब्दिक अर्थ- छाया अथवा चित्र है। कल्पना शक्ति द्वारा बिम्बों का प्रयोजन कर कलाकार कला में आकर्षण पैदा करके अपनी कृति को गूढ़ और गम्भीर अर्थ प्रदान करता है। सौन्दर्यशास्त्र के नये आयामों में बिम्ब का उल्लेख अपेक्षित है। कलाकार की कल्पना और उसके चिंतन से प्रस्तुत गंभीर और अमूर्त आकृतियाँ बिम्ब के माध्यम से आकार ग्राहण करती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने बिम्ब की अनिवार्यता पर, प्रकाश डालते हुए कहा है कि- 4"काव्य न अर्थग्रहण मात्र से काम नहीं चलता, बिम्ब ग्रहण अपेक्षित होता है। यह बिम्बग्रहण निर्दिष्ट, गोचर और मूर्त विषय का ही हो सकता है। बिम्ब ग्रहण वही होता है जहाँ कवि अपने सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा वस्तुओं के अंग, प्रत्यंग, वर्ण, आकृति तथा उनके आसपास की परिस्थितियों का परस्पर संशिल्ष्ट विवरण देता है। बिम्ब का अर्थवता के कारण उसको कला एवं साहित्य जगत में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हैं। बिम्ब से रचनाकार की प्रतिभा उबरती है और रचना का सौन्दर्य दुगुना हो जाता है" 4

बिम्ब विधान साहित्य का क्रिया पक्ष होता है इसका निर्माण कल्पना के उपयोग से होता है। कविता में रूप तत्व या बिम्ब महत्वपूर्ण है । बिंब विधान की दृष्टि से समकालीन कविता का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है इसमें इंद्रियबोध का भरमार है । साहित्यकार बिम्ब योजना के द्वारा काव्य सौंदर्य को अधिक मार्मिक एवं चेतनामय बनाता हैं । वह बिंम्बो के माध्यम से काव्य में अपने भावों को व्यक्त करता हैं। इस तरह बिम्ब, काव्य सौंदर्य को मार्मिक एवं चेतनामय बनाता है । ऐन्द्रिय बिम्ब के माध्यम से साहित्यकार काव्य में भावों को साकार रूप प्रदान करते है ।

,

2.1.3 प्रतीक

अपनी गुणात्मक आवश्यकताओं के आधार पर जब कोई वस्तु, चिन्ह अथवा आकार किसी धर्म, जाति एवं देश केलिए रूढ होकर उसका अर्थबोध कराने लगती है तब उसे प्रतीक मानते है l कल्पना, बिम्ब एवं प्रतीक में परस्पर संबंध होता है। कल्पना शक्ति द्वारा मस्तिष्क में जन्म लेती आकृतियाँ बिम्ब के रूप में शब्द अथवा रेखा के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप में आकार ग्रहण करती है। यही अभिव्यक्त आकृतियाँ ढल होकर प्रतीक बन जाती है।

प्रतीक और उसमें छुपे गूढ अर्था को जब हम पहचानते हैं तो सौन्दर्यशास्त्र के सैद्धान्तिक अध्ययन के अनिवार्य तत्व के रूप में प्रतीक का महत्व स्पष्ट होता है। यह प्रतीक अपने व्यापक अर्थ-बोध के साथ हमारे भाव और हमारी कल्पना का अभिन्न अंग बन गया है। प्रतीक में अनेक भाव और मनःस्थितियों की अभिव्यक्ति होती है lइसमें मानव अनेक संलिष्ट भावों को प्रकट करती है l

प्रतीक में संपूर्ण स्थिति का नहीं बल्कि किसी खास संदर्भ के विशेष का ही समाधान किया जाता हैl कविता या काव्य के प्रतीक का लक्ष्य किसी अनुभूति का उसी रूप में पुन प्रस्तुतीकरण नहीं होता बल्कि एक नयी अनुभूति व भाव जगाना होता हैl प्रमुख आलोचक कुमार विमल का मत है 5“ प्रतीकों,विशेष कर काव्य प्रतीकों में अभिव्यांचना की शक्ति प्रचुर मात्रा में रहती है l इस शक्ति का प्रचुरता के कारण है मनुष्य अपनी मूल्यवान अनुभूतियों को, जो व्यावहारिक भाषा में व्यक्त नहीं की जा सकती, प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करता है”5

किसी अमूर्त, अप्रस्तुत विषय को प्रतीक के द्वारा मुर्त किया जाता है l काव्य अभिव्यक्ति को कलात्मक एवं सौंदर्यात्मक बनाने के लिए प्रतीक की जरूरत होती है l

,

समकालीन कवियों ने अपनी काव्य अभिव्यक्ति के लिए प्रतीकों को बहुत इस्तेमाल किया है।

हिंदी साहित्य कोश के अनुसार 6"प्रतीक शब्द का प्रयोग उसे दृश्य या गोचर वस्तु के लिए किया जाता है जो किसी अदृश्य अगोचर या अप्रस्तुत विषय का प्रतीक विधान उसके साथ अपने सहचार्य के कारण करता है"6

समकालीन कवियों ने संवेदना की ताजगी के लिए नए-नए प्रतीकों का प्रयोग किया है। प्रतीक योजना कवि की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का विषय है। उन्होंने भावाभिव्यक्ति के लिए तदनुरूप प्रतीकों का भी प्रयोग किया है। समकालीन कवियों ने सामाजिक,सांस्कृतिक, राजनीतिक, पौराणिक एवं प्राकृतिक आदि कविता के लिए प्रतीक योजना को आवश्यक ठहराया है।

2.1.4 मिथक

मिथक शब्द का अर्थ है परम्परागत पौराणिक लोक विश्वासमूलक संदर्भ। मिथक ऐसे संदर्भ है जिनके पीछे पूर्वधारणा या विश्वास की शक्ति निहित होती है। लोक मानस में गहरी जड़ होने के कारण नये माध्यम से मिथक का सृजन अधिक सरल एवं प्रभावी होते हैं। अग्रेज़ी शब्द 'मिथ' को ही हिन्दी में मिथक कहा गया है। मिथक परम्परागत तथा अनुश्रुत कथा है जो किसी अतिमानवीय घटना से संबन्ध रखती है। मिथ और आख्यान के सत्य में उल्लेखनीय अंतर यह होता है कि जहाँ आख्यान का सत्य भौतिक होता है, वहाँ मिथ का सत्य अतिभौतिक होता है। मिथ का प्रयोजन सृष्टि के आदिम युग की उस वास्तविकता की व्याख्या प्रस्तुत करना है, जो वर्तमान के संदर्भ में भी अपने सार्थकता रखती हैं।

,

रमेश कुन्तल मेघ ने मिथक पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि 7"मिथक का संबन्ध मनुष्य के बजाय मानवता के सामूहिक इतिहास से है। अतः सामूहिक चेतना की विरासत है। मिथकों के द्वारा ही हम प्रतीकों के माध्यम से ऐतिहासिक एवं आधुनिक अनुभव करते हैं।"7

मिथक काव्यार्थ को सघन, व्यापक एवं विस्तीर्ण बनाता है। यह काव्यार्थ को जातीय संस्कृति एवं चेतना से संबन्ध करके अधिक प्रभावपूर्ण बनाता है। मिथक काव्य के प्रतीकात्मक आयाम को सुदृढ़ बनाकर रमणीयता एवं लालित्य में वृद्धि करता है। इसका अटूट संबन्ध जातीय संस्कृति और सभ्यता के विकास के साथ होता है।

मिथक परम्परागत एवं रूढ़ीपरक होते हुए भी अत्यंन्त गतिशील होता है। वह युगीन संदर्भ को परम्परा के साथ जोडकर सार्थकता एवं व्यापकता प्रदान करता है। वह मनुष्य की कलात्मक क्षमता पर आधारित तथा प्रतीकात्मक महत्व से संयुक्त होता है।

मिथक के साथ हमारी परम्परा और संस्कृति जुडी है वास्तव में यह हमारी वास्तविकता का प्रमाण चिन्ह है। 8 "मिथक एक प्रकार का रहस्यरूप शक्तिशाली स्त्रोत है। जब भी जहाँ भी हमारी रियालिटि की पहचान संदिग्ध होती है तब हम वही मिथक का सहारा लेते है क्योंकि मिथक रियालिटि की पहचान का सबसे पुराने साधन है।"8

मिथक सौदर्यशास्त्रीय आलोचना के नये आयाम के अन्तर्गत सौन्दर्यशास्त्र के तत्व के रूप में मान्य होने की पूर्ण सार्थकता का संकेत करता है।

2.1.5 फैंटेसी

फैंटसी असल में मनोविज्ञान का विषय है। सौन्दर्यशास्त्रीय आलोचना के अन्तर्गत फैंटेसी को सौन्दर्यशास्त्र के अनिवार्य तत्वों में से एक माना गया है।

,

फैंटेसी का साहित्य के साथ जोडते हुए बच्चन सिंह ने लिखा है कि 9"इसका संबन्ध स्वप्न और अवचेतन मन में घटित होनेवाली घटनाओं की विघटित और बेतरतीब बिम्बावलियों से है। साहित्य या काव्य में यह एक टेकनिक रूप में प्रयुक्त की जाती है एक फैंटेसी रूपक हो सकती है। फॉटसी केवल मानसिक शक्ति नहीं है उसकी बिम्बात्मक और गूढ अर्थवत्ता, उसके विघटन और विश्रंखलन पद्धति में निहित होती है।" 9

यद्यपि फॉटसी हताश अहम मनोभावों की उपज है, परन्तु यथार्थ से दूर नहीं है फॉटसी का मूल आधार तथ्यात्मक जीवन है। क्योंकि कलाकार का उद्देश्य मूलरूप से फैंटेसी रचना नहीं वरन् फैंटेसी के माध्यम से यथार्थ जीवन की निगूढ़ अर्न्तधाराओं का उद्घाटित करना है। फैंटेसी का आधार सदैव परिवेश से प्राप्त होने वाला अनुभव है।

रचनाधर्मिता का निर्वाह करते समय फैंटेसी सहायता करती है। फैंटेसी सौन्दर्य संबन्धी अनुभव का विकास करती है जो जीवन के गूढ अर्थों को खोलने के साथ कलाकार को नयी दिशा भी प्रदान करती है। मुक्तिबोध कहते है कि 10"फैंटेसी के कल्पना कार्यरत रहती है वह मन के निगूढ तत्वों को प्रोदभाषित करते हुए विभिन्न रंगों में उन्हें अपने समस्त सौन्दर्य के साथ उद्घाटित करती रहती है।"10

फॉटसी यथार्थ को स्पष्ट करते हुए मनुष्य के भीतर पल रहे द्वन्द्व को बिम्बावलियों द्वारा अभिव्यक्ति देती है। कविता में फैंटेसी ने सौन्दर्य का विकास किया है।

2.1.6 व्यंग्य

व्यंग्य एक कला है जिसने अभिव्यक्ति को सघन बनाती है। व्यंग्य में हास्य जैसे हल्कापन नहीं होता इसमें गम्भीरता और तीक्ष्णता होती है। प्रसिद्द व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई

,

व्यंग्य के विषय में कहते हैं। 11 "व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है। विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखण्ड का पर्दाफाश करता है।"

व्यंग्यकार न तो सुधार के रास्ते बताते है न ही उपदेश देता है। व्यंग्य एक कला है व्यंग्य प्रस्तुतीकरण भी बडा कठिन कार्य है। व्यंग्य का अपना सौन्दर्य है जो साहित्य को प्रासंगिक बनाता है। व्यंग्य की विशिष्टताओं ने साहित्य को भी विशिष्टता प्रदान की। व्यंग्य से साहित्य के सौन्दर्य में वृद्धि भी हुई। सौन्दर्य वास्तव में वही है जो वैषम्य के बावजूद साम्य स्थापित कर जीवन से जोड़कर उससे प्रभावित करता है। व्यंग्य का पूरा संबन्ध समाज इस तरह व्यंग्य सौन्दर्यशास्त्र के महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है।

2.1.7 यथार्थ

सौदर्य शास्त्रीय आलोचना के नये आयाम मैं यथार्थ का सौन्दर्य शास्त्रीय अध्ययन साहित्य जगत की महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं l समाज में व्याप्त, विकृतियों को यथार्थवाद प्रकाश में लाता है और वह जीवन में सुन्दर, भावुक, आदर्शवादी अंशों का परित्याग कर प्रभावशाली असुन्दर सत्य का चित्रण करता है l किसी भी सामाजिक साहित्य के प्रति विद्रोह करते समय साहित्यकार उसका यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत करता है। व्यवस्थित रूप का ज्ञान यथार्थ कहलाता है जिसकी होने की संभावना सर्वाधिक हो।

साहित्य में यथार्थ समाज और उसकी सड़ी गली व्यवस्था से किया जाने वाला संघर्ष है l समाज और साहित्य के विकास एवं परिवर्तन की दिशा में यथार्थ का महत्वपूर्ण स्थान है l यथार्थ साहित्य में एक महत्वपूर्ण प्रवृति है जो साहित्य को मानव जीवन के करीब लाता है l साहित्य में जीवन की वास्तविकता ,सामाजिक परिस्थितियों और मानवीय भावनाओं को बिना किसी लाग - लपेट से प्रस्तुत करता है l

,

2.2 सौंदर्य शास्त्र का पाश्चात्य स्वरूप

सौन्दर्यशास्त्र सौंदर्य की शास्त्रीय विवेचना है l 12"ऐस्थेडटिक्स वह शास्त्र है जिसका संबन्ध कला और प्रकृति में व्याप्त समग्र सुन्दर और उदात्त से है। कहा जाता है कि इसी अर्थ में ऐस्थेटिक्स शब्द का प्रचार जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैड, इटली और होलैण्ड में हुआ इस अर्थग्रेहण के पश्चात एस्थेटिक्स का विषय सौन्दर्यानुभूति का संपूर्ण रूप बन गया है।"[12]

क्रोचे ने 13"ऐस्थेटिक्स की अभिव्यक्त की पुनः प्रत्यदात्मक तथा कल्पनात्मक क्रियाओं का विज्ञान माना है। मतलब यह कि क्रोचे के अनुसार- "सौन्दर्यशास्त्र का विषय मनुष्य की कल्पना, पुनःप्रत्यक्ष और अभिव्यक्ति से संबन्ध है। काल की दृष्टि से क्रोचे ने सौन्दर्यशास्त्र को प्राचीन नहीं नवीन माना है।"[13]

लेंगर का मत है कि - 14 "सौन्दर्यशास्त्र ललित कलाओं के दार्शनिक विकल्पों और समस्याओं का सैन्द्धन्तिक निरूपण है।"[14]

सौन्दर्यशास्त्र के स्वरूप पहचानने केलिए सौन्दर्यशास्त्र तथा काव्यशास्त्र के अन्तर को समझ लेना आवश्यक है। जार्ज सैन्ययन ने काव्यशास्त्र और सौन्दर्यशास्त्र के अन्तर को निर्दिष्ट करने हुए लिखा है कि- 15"काव्यशास्त्रीय आलोचना में निर्णय की प्रधानता रहती है जबकि सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन में प्रतिबोधन को प्राथमिकता दी जाती है।"[15.] पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र ने सौंदर्य शास्त्रीय विभिन्न आयामों पर गहराई से दृष्टिपात किया हैl

2.3 भारतीय सौन्दर्यशास्त्र

कला, संस्कृति और प्रकृति का प्रति अंकन ही सौन्दर्यशास्त्र है। सौन्दर्यशास्त्र वह शास्त्र है जिसमें कलात्मक कृतियाँ रचना आदि से अभिव्यक्त होनेवाला अथवा उसमें निहित रहनेवाले सौन्दर्य का तात्विक, दार्शनिक और भावात्मक विवेचना होता है।

,

साहित्य जगत में सौन्दर्यशास्त्र ने आलोचना के अनेक,मानदण्ड खडे किये है। एक और सौन्दर्य स्थूल है तो दूसरी तरफ वह अनुभूतिगत है जो विचारों में घुसकर रस का संचार करता है समसामयिक संदर्भ में सौन्दर्यशास्त्रीय आलोचना ने आध्यात्मिक एवं भौतिक शक्ति के समन्वय के साथ सौन्दर्यशास्त्रीय आलोचना के नये प्रतिमान स्थापित किए है।

कविता के सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन की आवश्यकता इसलिए है कि कविता का काव्येतर कलाओं के साथ घनिष्ठ संबन्ध है और कविता भी अन्य कलाओं की तरह मनुष्य के सृजनात्मक अन्तर्मन की एक रचनात्मक क्रिया है। कविता का अध्ययन केवल काव्य शास्त्रीय दृष्टि से ही नहीं बल्कि सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टि से भी किया जाना चाहिए। भारतीय साहित्यक परंपरा के अनुसार कविता का अध्ययन काव्यशास्त्रीय एवं सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टिकोणों से किया जा सकता है।

2.4 भारतीय सौन्दर्य शास्त्र का विवेचन

भारतीय काव्यशास्त्र को सौन्दर्यशास्त्र का अग्रदूत कहा जा सकता है। भारतीय काव्यशास्त्र में रस, ध्वनि, औचित्य, वक्रोक्ति, रीति एवं अलंकार आदि संप्रदाय का मूल उद्देश्य सौन्दर्य स्थापना है क्योंकि काव्यशास्त्र का संबन्ध मूलतः काव्य के विभिन्न तत्वों और पक्ष के निरूपण से रमणीयार्थ सौन्दर्य की प्राप्त करना ही है। परंपरागत भारतीय सौंदर्य दर्शन का प्रतिपाद्य आनंदवाद है। कला में इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सौंदर्य के प्रतिमान स्थापित किए गए है। जिसमें आत्मा ,भाव ,रूप एवं रसवादी व्याख्याएं मिलती है। सौंदर्य को लेकर प्रतिमान रूढ़ हो गए हैं। किंतु सौंदर्य प्रकृति सापेक्ष परिवर्तनशील है।

,

सौन्दर्य शब्द का काव्यशास्त्रीय अर्थ में सर्वप्रथम प्रयोग भामह द्वारा काव्यशास्त्रीय ग्रंथ 'काव्यलंकार' में हुआ। उनके मतानुसार काव्य का सार तत्व है अलंकार और अलंकार का अर्थ है सौन्दर्य इस प्रकार सौन्दर्य काव्य का प्राण तत्व है-

काव्य ग्रहमलंकारात्। सौन्दर्यमलंकारः।

अर्थात् काव्य सार तत्व अलंकार है अलंकार का अर्थ सौन्दर्य है अर्थात सौन्दर्य का प्राण अलंकार है।

वैदिक काव्यशास्त्र के सौन्दर्य शब्द केलिए विभिन्न विद्वानों ने अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया है। इसमें शोभा, छाया आदि शब्द अधिक प्रचलित आये है। शोभा शब्द का प्रयोग करते ,हुए आचार्य दण्डी लिखती है-

काव्यशोभाकरान् धर्मानलंकारन् प्रचक्षते

आचार्य जागन्नाथ के अनुसार-

रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यमः

अर्थात रमणीय अर्थ का प्रतिपाद करनेवाला शब्द काव्य है और रमणीयता का अर्थ है ऐसी ज्ञानगोचरता अर्थात चेतना जो उदात्त आह्लाद प्रदान करती है।

भारतीय सौन्दर्य दर्शन मुख्यः आध्यात्मिक भावना से संबन्धित है। सम्पूर्ण सौन्दर्य भावना 'सत्यं शिवम सुन्दरम्' में समाहित है। परम आनन्द की अनुभूति भारतीय सौन्दर्य दर्शन में सुन्दर शब्द की व्याख्या से मानी गई है। भारतीय परंपरा में सौन्दर्य शब्द का प्रयोग प्रचुरता से संस्कृत ग्रंथों में प्राप्त होता है।

,

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार-16 "सौन्दर्य शब्द का प्रयोग अधिक प्राचीन नहीं है, वैदिक साहित्य में सुन्दर तथा सौन्दर्य शब्द का प्रयोग नहीं मिलता किन्तु प्रिय, पेशय, चित्र, रूप, भद्रा, मधुर आदि शब्दों का प्रचुरता से प्रयोग हुआ है सुन्दर शब्द का प्रयोग सबसे पहले रामायण में प्राप्त होता है, उसके पश्चात महाभारत में किन्तु यह अत्यंत विरल है।"[16]

भारतीय दृष्टि सौन्दर्य के भावनात्मक एवं वस्तुनिष्ठ पक्ष के समन्वित स्वरूप को महत्व प्रदान करती है। भारतीय कुछ विचारकों ने सौन्दर्य के भावपक्ष को महत्व दिया है तथा वस्तुनिष्ठ दृष्टि से उन तत्वों की चर्चा की है। सौन्दर्य की भारतीय अवधारण के अनुसार भारतीय सौन्दर्य दर्शन और समरस का दर्शन है, अभिव्यक्ति के स्तर पर यह सौन्दर्य है और अनुभूति के स्तर पर आनन्द है।

भारतीय चिन्तन परंपरा में सौन्दर्य तत्व की व्याख्या रस सिद्धान्त के अन्तर्गत की गई है, जिसके अन्तर्गत सौन्दर्य विषय की प्रत्येक विशिष्टता को समाहित कर लिया गया है

पाश्चात्य सौन्दर्यशास्त्र और भारतीय काव्यशास्त्र के अन्तर को स्पष्ट करते हुए। डॉ. के.सि. पाण्डेय ने लिखा है कि-17 "भारतीय काव्यशास्त्र में पाश्चात्य सौन्दर्यशास्त्र की तरह काव्येतर कलाओं के विवेचना की प्रवृत्ति नहीं है। किन्तु काव्य के क्षेत्र में भारतीय काव्यशास्त्र को नाटक अधिक प्रिय है, जिसके कारण भारतीय काव्यशास्त्र में अन्य कलाओं का प्रसंगवश उल्लेख हो गया है, क्योंकि नाटक तो काव्य संगीत चित्र और स्थापत्य सभी कलाओं का समुच्छय है अतः भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की प्रारंभिक सीमा नाट्यशास्त्र है।"17

रस सिद्धान्त इतना व्यापक और स्पष्ट है कि इसके अन्तर्गत सौन्दर्य से संबन्धित प्रत्येक विषय का समन्वय स्वयं हो जाता है और रस सिद्धान्त के माध्यम से सौन्दर्य विषयक भारतीय चिन्तन का स्वरूप भी स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाता है। इस प्रकार के भारतीय सौंदर्य शास्त्र से

,

बिल्कुल अलग है दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र l दलित सौंदर्य शास्त्र में दलित के जीवन यथार्थ,उनके संघर्ष और सामाजिक न्याय की आकांक्षा को व्यक्त करता है l

भारतीय चिंतन परंपरा में सौंदर्य तत्व की व्याख्या रस सिद्धांत के अंतर्गत की गई है जिसके अंतर्गत सौंदर्य विषयक प्रत्येक विशिष्टता को समाहित कर लिया गया है l रस अपने आप में संपूर्ण सिद्धांत है l रस सिद्धान्त इतना व्यापक और स्पष्ट हे कि इसके अंतर्गत सौंदर्य से संबंधित प्रत्येक विषय का समन्यव स्वयं हो जाता है,और इस सिद्धान्त के माध्यम से सौंदर्य विषयक भारतीय चिंतन का स्वरूप भी स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाता है l

2.5 दलित सौन्दर्यशास्त्र की परिचय

दलित साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र की रचना प्रक्रिया को समझने के लिए उनसे संबन्धित अनेक तत्वों पर ध्यान देना आवश्यक है। दलित साहित्य में अनुभव जन्य संवेदनाओं की अभिव्यक्ति केलिए आत्मकथात्मकता के उत्कर्ष को समझना चाहिए।

दलित साहित्य आत्मानुभूति को अभिव्यक्त करता है। वह आशय को महत्व देता हैl इसमें अभिव्यक्ति और शिल्प दूसरे स्थान पर है l इसलिए दलित साहित्य के सौन्दर्य शास्त्र का स्वरूप पारम्परिक सौन्दर्यशास्त्र से भिन्न है। दलित साहित्य को पृथक सत्ता दिलानेवाली उसकी कुछ विशेषताएं हैं, जिनके आधार पर दलित साहित्य के सौंदर्य के कुछ पैमाने निर्धारित किए जा सकते है l वे है निषेद, नकार, आक्रोश,विद्रोह, अस्मिताबोध आदि l यह तत्व परिवर्तन और नए आयाम के साथ आगे चलती हैl

दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र में वर्जनाओं, निषेधों, अवरोधों और प्रतिबन्धों को झेलने वाले दलित समाज को पुराने मिथकों को तोडने में तो अपनी शक्ति लगाने के साथ नये मिथकों

,

का सृजन भी करना पड रहा है। दलित साहित्य में मिथक उस प्रकार से नहीं आते जैसे आभिजात्य साहित्य में आते हैं। रमणिका गुप्ता जी कहती है - 18"आज अनुभव जन्य और यथार्थ आधारित साहित्य अपने दृष्टिकोण से स्वयं को रच रहा है उसकेलिए अपने बिंब, अपने मिथक और अपनी भाषा गाढ रहा है... वैसे साहित्य की अभिव्यक्ति केलिए नये मिथक, नये बिम्ब, नयी भाषा जो आक्रोश को व्यक्त कर सके, नयी शैली, अनुभव जन्य यथार्थ यहाँ तक कि नयी विधा और नया सौन्दर्यशास्त्र भी गाढा जा रहा है ताकि वह नयी चेतना का वाहक बन सके।"[118]

दलित कविता की भाषा दलित संस्कृति की उपज है। इसकी भाषा अन्य कविता की भाषा से मिला, भाषा का पुनर्पाठ या पुनर्निर्माण ही है। दलित कविता की प्रतिद्वन्द्वी स्वर समाज में मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करना चाहता है। दलित कविता का प्रतीक जीवन यथार्थ को व्यक्त करने वाला है। यह अपनी बात को व्यक्त करने केलिए नये प्रतिकों को अपनाता है। दलित कविता पुराने मिथकों को नयी परिभाषाएँ देने के साथ नये मिथकों को ढूँढती भी है। दलित कवियों ने वेदना, विद्रोह और आक्रोश के साथ साथ वैचारिक प्रतिबद्धता को भी भाषा में अपनाया है। सामाजिक यथार्थ के प्रति वे संवेदनशील ही नहीं सजग भी है। इसलिए उनकी भाषा में कलात्मकता की जगह संप्रेषणियता अधिक है।

दलित रचनाकार अपनी कविता केलिए ऐसे ही शब्दावली को चुनते है, जो अपने ही जीवन और इतिहास से जुडे हुए हैं। वे शब्द उनके अपने ही परिवेश से जन्म कर पले है। दलित कविता में ऐसे शब्दों का चयन करना चाहिए जो दलितों को सतर्कता, जागरण और विद्रोह करने का हौसला दिलानेवाला हो l

,

दलित कवियों ने अपनी कविता में ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो सवर्णवादी मानसिकता पर चोट करते है और मुक्ति केलिए संघर्षरत दलित में आत्मभाव जगा देते हैं।

दलित कविता भाग्यवादी, धार्मिक, काल्पनिक तथा हीनताबोध करानेवाले शब्दों को नकारती है। ईश्वर, देवता, परमात्मा, पूजा ,मोक्ष आदि शब्द ब्राह्मणवादी पारिभाषिक शब्द है जिनका प्रयोग विशिष्ट अर्थ में किया जाता है। उनको दलित कवि नकारात्मक ढंग से प्रस्तुत करते है। ये शब्द दलित के साथ हुए अमानवीय शोषण और अत्याचार को याद दिलाते है।

परंपरागत साहित्यकार साहित्य की समाजशास्त्रीय ढंग की समीक्षा में विश्वास रखता है जबकि दलित साहित्यकार दलित समाज को उसकी गुलामी से अवगता कराना चाहता है। वे उस गुलामी के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। इसलिए दलित साहित्यकारों ने साहित्य को जीवनवादी और यथार्थवादी सौन्दर्य के साथ एक अलग सौन्दर्य शास्त्र की माँग की। प्रारंभ में सी.बी भारती ने 1996 में दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र नामक लेख लिखकर दलित साहित्यकारों को दलित साहित्य के सौन्दर्य शास्त्र की एक रूपरेखा प्रदान की। कालान्तर में सन् 2000 में डॉ.शरण कुमार लिम्बाले ने 'दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र' तथा उसी समय वरिष्ठ दलित साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र' की रचना की। ये दोनों पुस्तकें दलित साहित्य में मील का पत्थर साबित हुई।

दलित साहित्य के सौन्दर्य की मीमांसा उसकी निर्मिति, भूमिका, परिभाषा, प्रेरणा, प्रवृत्ति, आदि स्वरूप और प्रयोजन के विचार में किया जाना आवश्यक है 1 दलित साहित्य के इस सौदर्यशास्त्र के विवेचन में वेदना, नकार, विद्रोह, प्रतिकार, प्रतिरोध ज़रूर होगा। दलित कविता के सामाजिक स्वर में दलित साहित्यकार समाज में दलितों के प्रति हो रहे शोषण,

,

अन्याय, अत्याचार आदि के अध्ययन करते हुए सामाजिक परिवर्तन करने का प्रयास करता है।

परंपरा, संस्कृति, मूल्य, जातीय भावना आदि एक तरह से मानसिक पुनर्रचनाएँ होती है। इस पुनर्रचना की प्रक्रिया ज्ञान, सामाजिक तथ्यों और ऐतिहासिक यथार्थ से कटकर नये मिथक, बिंब, तथा प्रतीकों को अपना लेती है। विशेषकर आधुनिक संदर्भ में ऐसी एक दृष्टि दलित कविता की विषयवस्तु और शिल्प में देख सकते है।

दलित साहित्य की भाषा बिंब प्रतीक और भावबोध परंपरावादी साहित्य से भिन्न है। वह विद्रोहात्मक और यथार्थवादी है। यह सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा है।अपने ही जीवन और संस्कृति से जुडे बिंबों, प्रतीकों से दलित साहित्य बनता है।

प्रो. मैनेजर पाण्डेय के अनुसार 19" दलित साहित्य का जो सौंदर्य होगा उसमें प्रिय और सुंदर की जगह कटु और विरूप को पहचानने की क्षमता होनी चाहिए "119

दलित कवियों ने मिथक, बिंब, प्रतीक जैसे शिल्प के विभिन्न पहलुओं का उपयोग अपनी कविताओं में किया है जो अनुभवजन्य यथार्थ से लिये होते है। इनके माध्यम से कविता की अभिव्यक्ति प्रखर बनती है।

2.6 दलित सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका

परंपरागत भारतीय दर्शन का प्रतिपाध्य आनंदवाद है। कला में इसी लक्षय की प्राप्ति केलिए सौन्दर्य के प्रतिमान स्थापित किए गए है। सौन्दर्य को लेकर प्रतिमान रूढ हो गए है किन्तु सौन्दर्य की प्रकृति सापेक्ष परिवर्तन शील है।भारतीय काव्यशास्त्र और पाश्चात्य सौन्दर्यशास्त्र में एक अन्तर यह है कि भारतीय काव्यशास्त्र में रस, ध्वनि इत्यादि के नाम से

,

काव्य आत्मतत्व की अन्वेषण को प्रधानता दी गयी है 1 जबकि पाश्चात्य सौन्दर्यशास्त्र में सौन्दर्य के संवेदनात्मक पक्ष का विवेचन अधिक हुआ है।

डॉ. मिशिकांत आबिदी का कहना है कि- 20"सुन्दरता की कोई निर्धारित कसौटी या पैमाना नहीं है। यद्यपि यह सत्य है कि कुछ वस्तुएँ सुन्दर के रूप में रूढ हो गई है परन्तु सौन्दर्यशास्त्र में उस सौन्दर्य का कोई अर्थ नहीं है जो प्रभावहीन है। वातावरण, परिस्थिति के साथ प्रभाव छोडनेवाली वस्तु, घटना, दृश्य चित्र ही सुन्दर हो सकता है।"[20]

भारतीय सौन्दर्य भावना सत्यम, शिवम, सुन्दरम की भावना पर भी निहित है।भारतीय सौन्दर्यशास्त्र आनंद पर आधारित है ,तो दलित साहित्य पाठक को बेचैन करनेवाला साहित्य है। वह चेतना, आक्रोश, प्रतिरोध, समता, न्याय पर आधारित है। इसलिए दलित समीक्षकों को सौन्दर्य की कल्पना बदलना महत्वपूर्ण लगता है। सौन्दर्य की कल्पना हर युग में होनेवाली विचारों से संबन्धित होती है। सौन्दर्य की कल्पना बदलना इसलिए भी ज़रूरी हो गया है कि पारंपरिक सौन्दर्य शास्त्रीय कल्पना स्वीकार करके दलित साहित्य का सृजन एवं दलित साहित्य में विद्रोह और नकार की अन्वेषण करना संभव नहीं है।

दलित साहित्यकार शरणकुमार लिंबाले के अनुसार-21 "स्वातन्त्र्य की भावना दलित साहित्य का प्राणतत्व तो है ही पर वह उसमें सौन्दर्यतत्व के रूप में भी है। समता, स्वतंत्रता और बन्धुत्व इन तीनों जीवन मूल्यों को दलित साहित्य के सौन्दर्य तत्व मान सकते हैं। दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र कलाकारों की सामाजिक प्रतिबद्ध कलाकृति में जीवनमूल्य पाठकों के मन में जाग्रत होनेवाली समता ,स्वतंत्रता, न्याय और भ्रातृभाव की चेतना जैसे मूलतत्वों पर टिका रहने वाला है।"[21]

,

दलित साहित्य कलावादी या रंजनवादी साहित्य नहीं है इसलिए कलावादी साहित्य के सौंदर्य शास्त्र के आधार पर दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र सिद्ध करने की चर्चा नहीं की जा सकती। दलित साहित्य की सौंदर्य शास्त्र का क्षेत्र बहुत व्यापक है 1 यह परंपरागत सौंदर्य शास्त्र के सीमित अभिजात्यवादी मान्यताओं को तोड़ते हुए अपने लिए नए प्रतिमान गढ़ता है 1 दलित साहित्य की सौंदर्य शास्त्र में रूप सौंदर्य ,विचार ,मूल्य, वैशिष्ट्य ,प्रवृत्ति एवं प्रयोजन तथा स्वतंत्रता बंधुत्व एवं न्याय, वेदना और बेचैनी ,प्रतिरोध, अनुभव की प्रमाणिकता सपाट बयानी , सामाजिक परिवेश समर्थन एवं परिवर्तन और मुक्ति संकेत इत्यादि परंपरावादी सौंदर्य शास्त्र के प्रतिमानों से अलग विवेच्य है वरिष्ठ साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि सटीक विचार करते हुए कहते हैं कि 22"दलित सौंदर्य शास्त्र का विकास दलित समाज उसकी चेतना ,संस्कृति ,विचारधारा और सौंदर्य के विकास पर निर्भर है जो एक लंबी प्रक्रिया में होगा"22

जब साहित्य में दलित शब्द जुड जाते है तब उसकी व्यापकता और गहनता अधिक तीव्र बन जाती है। साहित्य में यह शब्द जुड़ने पर अर्थ ओर अधिक व्यंजनात्मक होकर साहित्य की भूमिका और सामाजिक उत्तरदायित्वों को और अधिक विश्लेषित करने की क्षमता हासिल कर लेता है। दलित शब्द विरोध की अभिव्यक्ति का प्रतीक बन जाता है। मानवीय संवेदाओं के सरोकारों से जुडकर सामाजिक प्रतिबद्धता स्थापित करता है।

दलित साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र में प्रमुख तत्व के रूप में दलित चेतना की वैचारिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत होती है। डॉ. सी बी भारती इस तथ्य पर ज़ोर देते है उनका मानना है- 23"प्रतिबद्धता ही दलित साहित्य का सौन्दर्य विधान है। दलित साहित्य लेखन दलित अस्मिता की तलाश है यह सामाजिक परीक्षण व उनके छिन्न-भिन्न कर देने की एक अनबुझी प्यास है। वर्ण व्यवस्था से उपजी अमानवीय त्रासदी से मुक्ति की छटपटाहट ही दलित साहित्य

,

का मूल स्वर है। जातिविहीन, वर्ग विहीन समाज की संरचना ही इसका मूल प्रतिपाद्य है।"[23] सौन्दर्य वास्तव में चेतना या प्रतीति रूप में वस्तु रूप नहीं है संरचना की समन्विति उन्हें मान्य नहीं। परन्तु वह समन्विति विषयगत नहीं है भावगत है अर्थात यह वस्तु नहीं प्रतीति है।

पारंपरिक साहित्य में सौन्दर्यशास्त्र के मूल उपादान तो वस्तुतः कला, कल्पना, अनुभूति एवं अभिव्यक्ति ही है। सौन्दर्यशास्त्र में सौन्दर्यबोध एवं सौन्दर्याभिव्यक्ति की विवेचना ही उसे शास्त्र के रूप में परिगणित कराने में समर्थ है। सौन्दर्यशास्त्र का स्वरूप का निर्धारण सौन्दर्य सृजन, सौन्दर्य ग्रहण एवं सौन्दर्यानुभूति के आधार पर किया जा सकता है।

भारतीय साहित्यशास्त्र विषयक स्थापनाओं का सीमांकन करते हुए मार्क्सवादी विचारक प्रो. शिवकुमार मिश्र ने भी कहा है- 24"जिस काव्यशास्त्र या साहित्यशास्त्र के द्वारा निर्धारित प्रतिमानों से प्राण रस लेकर सदियों से भारतीय रचनाशीलता विकसित और पल्लवित होती रही है, महान रचनाकारों की विश्वविख्यात रचनाएँ जिसकी कीर्तिपताका फहरा रही है, वह काव्यशास्त्र या साहित्यशास्त्र भी अलग उसी कुलीन मानसिकता की देन है जो हमारे सामाजिक विधान की भी स्रष्टा है इस साहित्यशास्त्र के अभिजनोयित रुझानों, संस्कारों और सौन्दर्यबोध का ही तो वर्चस्व है उच्च कुलोत्पन्न धीरोदात्त व्यक्ति ही इनमें नायकत्व का अधिकारी कहा गया है। सौन्दर्य के प्रतिमानों और भावों का गम्भीर्य और उज्जलता भी यहाँ अभिजनोयित रूढ़ियों के आधार पर तय की गयी है और देखी गयी है।"[24]

दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र पारम्परिक सौन्दर्यशास्त्र से भिन्न होगा क्योंकि इसकी निर्मिति, तत्व, परिभाषा, बोध सामग्री सभी कुछ अलग है। इसलिए इस साहित्य के सौन्दर्यशास्त्रीय मानक भी भिन्न होगा l दलित साहित्य सुख और आनन्द भोगी साहित्य नही है दुःख और वेदना भोगी है। दुःख, वेदना और संघर्षमूलक होने के कारण यह साहित्य

,

अलौकिक अनुभूति प्रदान नहीं करता है। वह कलात्मक सौन्दर्य के बोध और मूल्यों का शास्त्र है और बोध की प्रक्रिया तथा मूल्यों का निर्माण में जाति, वर्ग और लिंग से जुडी विचारधाराओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। दलित सौन्दर्यशास्त्र का विकास दलित समाज उसकी चेतना संस्कृति, विचारधारा और दलित साहित्य के विकास पर निर्भर है।

दलित साहित्य अस्मितावादी साहित्य है 1 दलित साहित्य का सौन्दर्यबोध स्थापित मान्यताओं को तार्किक आधार पर नकारता है और सौन्दर्य के नये आयामों की तरफ इशरा करता है। दलित लेखकों ने अपने साहित्य की जीवनवादी, यथार्थवादी समीक्षा के साथ-साथ ही दलित साहित्य के अलग सौन्दर्यशास्त्र की एक नई शैली को रूपायित किया1 भारतीय दलित कविता यथार्थ की भावभूमि पर विकसित हुई है। दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त शब्दावली, क्षेत्रीय या आँचलिक प्रभाव इसकी स्वाभाविकता को सम्पुष्टि प्रदान करता है। दलित कविता की भाषा जन सामान्य की भाषा है 1

दलित साहित्य ने संस्कृत निष्ठ परम्परागत साहित्यक भाषा, काव्यशैली, प्रस्तुतीकरण को नकार कर साधारण भाषा का प्रयोग किया है ऐसी भाषा जो दलितों की पीड़ा, अपमान की सही और यथार्थवादी अभिव्यक्ति बन सके। दलित साहित्य की भाषा नकार और विरोध की भाषा है, जिसमें युगों की यातनाएँ साकार हो उठी है1 दलित कविता व्यक्तिगत अनुभवों से स्पष्टता होने के साथ ही समूह मन के अनुभवों की अनुभूति भी है। इसलिए इसमें भाषा की परिवर्तन बहुत ही आवश्यक है। दलित कविता केलिए सम्प्रेषणीयता भी एक अनिवार्य तत्व है। आभिधा शब्द शक्ति का दलित कविता में प्रमुखता से इस्तेमाल किया गया है।

दलित कविता की अपनी अलग पहचान है इनकी प्रहारक्षमता तीक्ष्ण है। भाषा का सहज रूप इसमें प्रयुक्त होती है। तत्सम, तत्भव, देशज, शब्दों के अलावा अग्रेज़ी, फारसी,

,

अरबी भाषाओं का भी प्रयोग किया गया है। दलित कविता की भाषा का सीधा संबन्ध दलित जीवन से है। दलित कवियों द्वारा प्रस्तुत वाक्य विन्यास,मिथक और रूपक कट्टरपंथी तरीके से प्रस्तुत होंगे मुख्य कारण वे अपने जीवन में जिन विषयों से निपटते है उसकी ऊर्जा और अंतर्दृष्टि से होता है l जिन्हें हम मुख्य धारा की कविता में नही देख सकते हैl

2.7 दलित साहित्य की भाषा शैली

दलित साहित्य अपने परिवेश एवं समाज से गहरा सरोकार रखता है। इसलिए इसमें निजी दुख से अधिक दलित समाज की पीडा का व्यापक चित्रण मिलता है l दलित समाज में सामाजिक चेतना उत्पन्न करना इनका सदियों से खोया आत्मसम्मान लौटाना, सामाजिक रूपान्तरण आदि दलित साहित्य का मुख्य प्रयोजन है। इसलिए दलित साहित्य भारतीय संवैधानिक अधिकारों की प्राप्ती की बात करता है। दलित साहित्य आक्रोश के साथ-साथ वेदना का साहित्य भी है। यही दोनों तत्व इसे साहित्य की गहराई से जोड़ता है।

दलित साहित्य की भाषा पर अंनगढ़ और अशलील होने का आरोप लगाया जाता है l दलित साहित्य की भाषा और रूप का सम्बन्ध दलित जीवन के यथार्थ से जोड़कर देखना चाहिए l हरिनारायण टाकूर के अनुसार 25 " पहली नज़र में लगता है कि दलित साहित्य कि भाषा गली गालीज कि अशलील भाषा है l लेकिन इसे अशलील और वर्जित नहीं माना जा सकता क्योंकि दलित साहित्य प्रतिरोध और बहुत हद तक प्रतिक्रिया का भी साहित्य है l अतः उसमें क्षोभ, पीड़ा और आक्रोश स्वाभाविक है l दूसरी बात कि दलित साहित्य ने परंपरागत तत्सम प्रधान, संस्कृत निष्ट भाषा काव्य शैली को नकारकर जनमानस को समझने लायक सर्वग्राही भाषा का प्रयोग किया गया है l"25

,

दलित साहित्य अभिधात्मक व सपाट भयानी से युक्त है इसलिए दलित कविता रस प्रतीक आदि परम्परागत साहित्य शास्त्रीय तत्वों से कम प्रभावित है।

दलित साहित्य परम्परागत कलावाद से अलग रहता है l इसलिए इसमें परम्परागत मिथकों व प्रतीकों को नए सिरे से रूपायित किया गया है। भले ही उसमें भाषा का सरलतापन है किन्तु उसकी सहजता और सरलता इसकी प्रामाणिकता को प्रकट करती है और यही दलित साहित्य की वास्तविक सच्चाई व ताकत है।

नये बिम्बों, प्रतीकों एवं भाषा शैली से दलित साहित्यकार में एक नया सौन्दर्यबोध गढ रहा है क्योंकि पारंपरिक सौन्दर्यबोध के प्रतीमानों से भिन्न दलित साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र की आवश्यकता आज दलित लेखक महसूस करता है। दलित कविता में दलित के दैनिक जीवन से जुडे शब्दों से भाषा अपना रूप ग्रहण करती है।

ओमप्रकाश वात्मीकी का कथन इस संदर्भ में सार्थक लगते है- 26"नकार, विरोध, प्रतिरोध विद्रोह को व्यक्त करने केलिए दलित कवि जिस भाषा का प्रयोग करता है वह तेज बहाव की तरह है। नदी के उफतने जल का वेग जो किनारों को तोड बन्धनमुक्त होना चाहता है। आलोचकों का इस भाषा के उद्गम को समग्रता होगा, क्योंकि दलित साहित्य की भाषा का सीधा संबन्ध दलित जीवन से है अपने दग्ध अनुभवों को दलित रचनाकार सीधे सीधे साहित्य में प्रस्तुत करता है, बिना किसी लाग-लापटे का।" [26]

दलित कविता का प्रतीक, जीवन यथार्थ को व्यक्त करनेवाला है। वे मैले कुचले या बीभत्स भी है लेकिन अभिव्यक्ति के स्तर पर सशक्त है l रमणिता गुप्ता के अनुसार-27 "दलित साहित्य के प्रतीक भिन्न है, जो यथार्थ के कोख से उपजे है। ये प्रतीक इनके दैनिक कार्य से जुडे है। वे नफीस और नाजुक नही बल्कि खुरदुरे हैं। मैले कुचले है पर मज़बूत है। वे नये

,

नहीं पुराने इर्ट सामान से इढे- मेढे होते है और जो उनकी अत्यंत दशा और अकिचनता के प्रतीक होते है। वे कल्पना की रंगीनीयाँ लिए हुए नहीं बल्कि तथ्यों, तार्किक, निष्कर्ष तथा सत्य से पैदा होता है।"[27]

दलित साहित्य वस्तु प्रधान है। शैली व शिल्प महत्वहीन तो नहीं है, पर यदि वे अभिव्यक्ति में बाधक बने तो उसे अस्वीकार भी कर दिया जा सकता है। दलित साहित्य में भोगे हुए सत्य यानी कि प्रामाणिक सच्च, विश्वसनीय यथार्थ लिखने का विशेष आग्रह है।

दलित साहित्य न केवल वर्ण व जाति व्यवस्था से मुक्ति का साहित्य है, अपितु यह सामाजिक समानता, स्वतन्त्रता, मानवीयता एवं विश्व बन्धुत्व को प्रतिस्थापित करने का साहित्य है। इसलिए इसे परम्परागत साहित्यक मानदण्डों पर आंका नहीं जा सकता l हूबनाथ ने लिखा है कि 28"इसलिए दलित साहित्य, साहित्य की परम्परागत परिभाषा के पैमाने के आधार पर साहित्य नहीं है, बल्कि सदियों से अन्याय व असमानता के नरक में पलते बेजबानो के अन्तर का हाहाकार है जो सदियों तक पकते पकते तेजाब बन चुका है और आक्रोश बनकर उफन रहा है। इस साहित्य से हम धीरता, गम्भीरता, शालिनता, सभ्यता और सौन्दर्य प्रियता की उम्मीद नहीं कर सकते।28

भोगे हुए सच के आधार पर बने संवेदना का साहित्य ही दलित साहित्य है l इस दृष्टि से परंपरावादी सौन्दर्य शास्त्र के मूल्य और मापद्दंड दलित साहित्य के मूल्य और मापदंडों से भिन्न होंगे l परंपरावादी साहित्य में आनंद है जबकि दलित साहित्य की चेतना पीड़ा है l मुख्यधारा साहित्य में शशवता की मांग है जबकि दलित साहित्य में परिवर्तन की इच्छा है l इसमें विशिष्टता के बदले समानता का भाव मुख्य है l

,

2.7 दलित साहित्य की बिंब एवं प्रतीकात्मकता

बिंब कवि की अनुभूति को सहदय के चित्र में ठीक उसी तरह की संवेदना जागृत करने में सहायता प्रदान करता है। दलित कविता में बिंब की विशिष्टता को रेखांकित करते हुए ओम प्रकाश वाल्मीकि कहते है- 29"दलित कविता में बिंब दलित जीवन की त्रासदी और उसके यथार्थ को व्यक्त करते है दलित कविता में अंधेरा आसपास के परिवेश के गदेगी की सडाँध, सीलन भरे तंग मकानों में सिसकती ज़िंदगी दलित जीन के यथार्थ है जो उसके जीवन का अविभाज्य घटक बन गए है। उन वस्तुओं को दृश्य बिंब के स्थान पर रखकर दलित कवि इन्ही वस्तुओं में अपने जीवन के प्रतिबिंब ढूँढता है।"[20]

कविता में प्रतीकों का अभीष्ट स्थान है जब कवि अभिधा के माध्यम से अर्थ संप्रेषित करने में असमर्थता महसूस करता है या उसे अधिक प्रभावी ढंग से कहना चाहता है तब वह प्रतीकों का सहारा लेता है। दलित कविता में प्रभावी सम्प्रेषण हेतु नये नये प्रतीकों का प्रयोग किया गया है।प्रतीक द्वारा भावना, विचार, बोध आदि की अभिव्यक्ति जहाँ रचना को प्रभावशाली बनती है, वही अर्थपूर्ण भी। प्रतीक द्वारा किसी भी बात को संक्षेप में कहा जा सकता है।

भारतीय साहित्य की एक समृद्धि शास्त्रीय परंपरा है। साहित्य की पहचान और परख अब तक रस, छंद, अलंकार, बिंब, प्रतीक, मिथक आदि सौन्दर्यशास्त्रीय कसौटी पर होती रही है। दलित चिंतन साहित्य के इस महानतावादी कला दर्शन को नकार देता है। इसकी सोच में साहित्य संप्रेषण का सशक्त व्यवहार है इसकेलिए उद्देश्य प्रधान है कला नहीं। दलित साहित्य भाषा शैली और शिल्प की उतनी परवाह नहीं करता जितना उक्ति की स्पष्टता और

,

स्वाभाविकता की। इसकी उद्देश्य है सामाजिक न्याय, मानव और मुक्ति का अवधारणा। 1 अतः दलित साहित्य की सौन्दर्यशास्त्रीय अवधारणाएँ अलग है।

प्रमुख दलित रचनाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित सौदर्यशास्त्र के बारे में लिखते हैं 30"कला और साहित्य में सौंदर्यबोध जहां संस्कारजन्य होता है वही परिवेशगत भी। पसंद ना पसंद जीवन मूल्यों के आधार पर बनती है। दलित साहित्य आंदोलन भर नहीं है दलित समाज की सांस्कृतिक सामाजिक राजनीतिक आकांक्षाएं साहित्य की आवश्यकताओं भाषा में व्यक्त हो रही है। इसलिए वह हिंदी की मुख्य धारा के उसे सौंदर्य शास्त्र के वर्चस्व से मुक्त है जो संस्कृत के काव्यशास्त्र से जुड़ा है"30

दलित साहित्य ने भाषा के विषय में परंपरागत मानकों को नकार दिया है। उनकी भाषा पर चाहे जो भी आरोप लगाए जाए लेकिन यह एक सच्चाई है कि संप्रेषणियता की लिहाज से उन पर आपत्ति नहीं किया जा सकता। उन्होंने जो भी देखा या सुना जाता है वही उनकी भाषा पर प्रभाव डालती है। उनकी भाषा पर अगर उसका प्रभाव है तो यह अस्वाभाविक नहीं परिवेश जन्य है। दलित साहित्य की भाषा में व्यक्त कठोरता और कटुता का स्रोत एक ओर तो परिवेश से सम्बंधित है।

डॉ एन .सिंह की धारणा है कि 31"दलित साहित्य का शब्द सौंदर्य प्रहार में है सम्मोहन में नहीं वह समाज और साहित्य में शताब्दियों से चली आ रही सड़ी- गली परंपराओं पर बेदर्दी से चोट करता है वह शोषण और अत्याचार के बीच हादसा जीवन जीने वाले दलित को लटना सीखना है वह सिर पर पत्थर तोड़ने वाली मजदूर महिला को उसके अधिकारों के बारे में बतलाता है उसे धर्म की भूलभुलैया से निकाल कर शोषण से मुक्ति की मार्ग दिखाता

,

है उसके लिए जी साहित्य जिस शाब्दिक प्रहार की आवश्यकता है वह उसमें है और यही दलित साहित्य का शिल्प सौंदर्य है"।31

दलित कविता की भाषा यथार्थ की भाषा है, दलित कवियों ने अपने अनुभवजन्य बात को समाज से अभिव्यक्त करने के लिए सरल बोलचाल की भाषा को अपनाया है। दलित कविता में भी संप्रेक्षणीयता को अधिक महत्व दिया गया है। भाषा का चमत्कार इस कविता में देखने को नहीं मिलती। दलित कविता में जन भाषा के शब्दों एवं आँचलिक बोलियों को अधिक महत्व दिया गया है। उसकी भाषा अपनी अभिव्यक्ति को सशक्त बनाते हैं

निष्कर्ष

दलित साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र का रूप, विधापन ,उसका सीमांकन व आंकलन सामान्य सौंदर्यदृष्टि से संभव ही नहीं है। दलित साहित्य परंपरागत कलात्मकता से अनगढ शब्दों में सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आक्रोश, सामाजिक परिवर्तन के आह्वान, उत्पीडन एवं शोषण के विरुद्ध विद्रोह का साहित्य है। दलित साहित्य का सौन्दर्य वही निखरता है जहाँ सदियों के संताप, जो दलितों ने सहा है उसे यथार्थ के धरातल पर अभिव्यक्ति किया है। दलित साहित्य का सौन्दर्य काल्पनिक, रोमांटिक, नही, अपितु घटना को अपने यथार्थ रूप से प्रस्तुत है। दलित साहित्य की सौंदर्य दृष्टि निर्जीव तथा बासी पड़ चुके मानदंड पर आधारित नहीं है। दलित साहित्य ने अपनी सजीव संवेदनाओं की अभिव्यक्ति केलिए एक पृथक एवं स्वतंत्र शैली विकसित कर ली है। सामाजिक दायित्वों से जुड़ी रचनाधर्मिता एवं उसके प्रति सच्ची प्रतिबद्धता ही दलित साहित्य का सौंदर्य विधान है।

,

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ कुमार विमल - सौंदर्य शास्त्र के तत्व पृ 3
2. डॉ हरद्वारी लाल शर्मा - सौंदर्य शास्त्र पृ 12
3. नंद दुलारे वाजपेय - नया साहित्य नया प्रश्न -पृ 113
4. रामचन्द्र शुक्ल- आचार्य शुक्ल विचार कोश नेशनल पब्लिशिंग पृ 11
5. कुमार विमलसंस्कृति का दर्शानिक विवेचन, पृ 35-36
6. डॉ. करुणा उमरे= हिंदी कविताभाषा और शिल्प विविधता प्रतीमान पृ 64)
7. डॉ.रमेश कुन्तल मेघ चिति की लीलाओं में प्रतीक को प्राकार्य, आलोचना पत्रिका, जुलाई-सितंबर, 1998
8. सि.ए. राजन- अज्ञेय काव्य में प्राणबिम्ब और मिथक, पृ.76
9. आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द, पृ.75
10. मुक्तिबोध रचनावली कामायनी एक पुर्नविचार, पृ.164)
11. हरिशंकर परसाई- सदाचार का तावीज़, पृ.107)
12. The Earl of Listowel- A Critical History of Modern Aesthetics: George Allen and Unwin London 1933. Introduction P.K
13. Bendelto Croce, Aesthetic: translated by Doughlus Ainstlie. Peter Own London. 1953, p.155-156
14. Susanne, K. Langer Feeling and form. Routledge and Kegan Paul, London, 1953, p.12
15. George Santagance- The Sense of Beauty Power Publication. OkNew York 1955, p.16
16. नगेन्द्र-सौन्दर्य की परिभाषा व स्वरूप, नेशनल पब्लिशिंग, दिल्ल

,

17. Dr.K.C Pandey- Comparative Aesthetics, Volume 1, Banaras, 1950, p.1

18. रमणिका गुप्ता- समकालीन भारतीय साहित्य अंक 77, 2015

19. मैनेजर पाण्डेय -साक्षात्कार - हंस -अगस्त 2004

20. मिशिकांत अभीधि

21. शरणकुमार लिंबाले- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ.120,

22. ओमप्रकाश वाल्मीकि- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र

23. डॉ. सी.बी.भारती- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, हंस 11, अंक 1, 1996, पृ.70-72

24. शिवकुमार मिश्र- दलित साहित्य का आन्दोलन और हिन्दी क्षेत्र नया पथ अंक 25, 1997, पृ.95

25. हरिनारायण ठाकुर दलित साहित्य का समाज शास्त्र पृ28

26. ओमप्रकाश वाल्मीकि- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र पृ56

27. रमणिका गुप्ता दलित हस्तक्षेप पृ24

28. डुबनाथ नवनीत- हिन्दी डाइजेस्ट अप्रैल 2010, पृ.20

29. ओमप्रकाश वाल्मीकि- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र पृ93

30. ओमप्रकाश वाल्मीकि- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र पृ46

31. डॉ एन सिंह भारतीय दलित साहित्य पृ 25

,

अध्याय - तीन

भारतीय दलित कवयित्रियों की काव्यदृष्टि

3.1 स्त्री कविता

भारतीय साहित्य की एक समृद्धिशाली परंपरा है। इसकी पहचान और परख अब तक रस, छंद, अलंकार, बिंब, प्रतीक, मिथक आदि सौन्दर्यशास्त्रीय कसौटी पर होती रही है। भारतीय साहित्य में महानतावादी सोच की प्रमुखता है1 दलित चिंतन साहित्य के इस महानतावादी कला दर्शन को नकार देता है। इसकी सोच में साहित्य संप्रेषण का सशक्त व्यवहार है इसकेलिए उद्देश्य प्रधान है कला नहीं। दलित साहित्य भाषा शैली और शिल्प की उतनी परवाह नहीं करता जितना उक्ति की स्पष्टता और स्वाभाविकता की। इसका उद्देश्य है सामाजिक न्याय, मानव और मुक्ति की अवधारणा1 1 अतः दलित साहित्य की सौन्दर्यशास्त्रीय अवधारणाएँ अलग है1

स्त्री कविता की आधारभूमी केवल अपने सुख दुख में आत्मलीन न होकर, एक नई सभ्यता का विकास करने की आकांक्षा रखती है जो अधिक विनम्र, मानवीय व समतापूर्ण है 1 स्त्री कविता का फलक विस्तृत है उसका महत्व और दायित्व स्त्री के रचना कर्म को पहचानने का है। स्त्री कविता की सबसे बडी उपलब्धि संवेदनात्मक स्तर पर मनुष्यता के तत्व को स्थापित करना है 1

हर स्त्री अपनी विशिष्टाता एवं महत्त्व को रेखांकित करना चाहती है 1 स्त्री अस्मिता में निजता एवं आत्मा निर्णय का भाव प्रबल रूप से आता है 1 स्त्री की अस्मिता, उसकी मुक्ति, अधिकार संबन्धित रचनाएँ स्त्री कविता के अंतर्गत आती है। स्त्री लेखन वास्तव में स्त्री की

,

अनुभूति का साहित्य है। वह अपने अनुभवों को निजी रूप में प्रस्तुत करती है l स्त्री के द्वारा लिखे गये साहित्य में संवेदना की गहराई अधिक प्रभावशील होती है। स्त्री अपने जीवन से संबन्धित रूढियों एवं पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर प्रहार करके लिखती है।

जब स्त्री कविता अपने सरोकार के प्रति गंभीर होकर अपने हक की बात जोर से रखेगी तभी स्त्री अपनी रचनात्मक प्रतिभा और मानवीय सरोकारों के साथ शामिल होगी l आज स्त्री अपनी इच्छा और अस्मिता के प्रति जागृत दिखाई देती है। स्त्री लेखन का उद्देश्य अपनी पहचान और स्वतंत्रता की स्थापना के साथ नवीन विचारों द्वारा समाज के सामने प्रश्न करना भी है। साहित्यक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में स्त्री अपने बदलते स्वरूप को प्रस्तुत करने लगी है। स्त्री लेखन से प्रेरणा पाकर आज की स्त्री अपनी आस्मिता को स्थापित करने केलिए आगे बढ रही है आज की नारी स्वतंत्रता चाहती है वह अपनी स्व की पहचान बनाने की कोशिश कर रही है l

3.2 भारतीय दलित स्त्री कविता

भारतीय दलित कवयित्रीयाँ स्त्री पीडा, उनकी मनोदशा और व्यवहार को अधिक गहनता से समझकर विशिष्ट और प्रभावकारी प्रस्तुति देने में समर्थ हैं। दलित स्त्री के ऊपर हो रहे दोहरे शोषण का ज्वलंत प्रतिबिम्ब इनकी कविताओं में खुलकर मिलता है।

दलित स्त्री अपनी अस्मिता केलिए निरंतर संघर्षरत है। वह दुख का बखान नहीं करती बल्कि अपनी यातनापूर्ण स्थिति को पहचानकर उससे आगे बढने केलिए प्रतिरोध करती है। वह अपने स्वत्व को जगा रही है l दलित स्त्री अब शोषण और यातना में जीना नहीं चाहती है l वह शिक्षा को अपनी मुक्ति का हथियार बनाना चाहती है l

,

दलित साहित्य के शुरुवात में तो दलित लेखकों ने स्त्रीपक्ष पर महत्व नहीं दिया था लेकिन कालान्तर में उनका ध्यान इस ओर गया l उनकी रचनाओं में स्त्री पीडा को भी स्थान मिलने लगा l दलित समाज के भीतर स्त्री के साथ होनेवाला भेदभाव विशेष चर्चा का विषय तब बना जब स्वयं दलित स्त्रियों ने अपनी दुस्थिति को अभिव्यक्त करना शुरू किया।अपनी रिक्तता का अनुभव कर उसकी पूर्ति के लिए स्त्रियों ने स्वयं साहित्य रचना शुरू किया। इससे दलित स्त्रियों की समस्याएँ दलित विमर्श के केन्द्र में आ गया। विमल थोरात, कौशल्या बैंसन्त्री ,सुशीला टाकभौरे, रजनी तिलक, रजतरानी मीनू, अनिता भारती, पूनम तुषामत आदि कई कवयित्रीयाँ इसमें प्रमुख हैं l

आज दलित स्त्री अपनी अस्मिता, विद्रोह, मुक्ति की खोज, अपनी विशिष्ट वैयक्तिक अनुभूति, आत्म निर्भरता और समान अधिकार की बात को उठाती है। स्त्री मुक्ति का अर्थ तमाम सामाजिक परंपरागत-वैयक्तिक शोषण से मुक्ति है l इसमें देह मुक्ति महत्वपूर्ण है।वर्तमान समय में स्त्री अस्मिता का प्रश्न अधिक जटिल हो गया है। अब स्त्री अपनी अस्मिता को नये संदर्भ पर खुलकर चर्चा भी कर रही है। समाज परिवर्तन ,परिस्थितियों का बदलाव तथा नारी संघर्ष की अवधारणा ने स्त्री साहित्य पर गहराई से असर डाला है l इसका प्रभाव हम दलित स्त्री साहित्य पर भी देख सकते है l

आधुनिक साहित्य में यदि दलित साहित्य ने अपनी खास जगह प्राप्त किया है तो इसका एक प्रमुख कारण दलित नारियों के जीवन संघर्ष और मनस्थिति को समझकर उसका चित्रण करना भी रहा है।दलित साहित्य ने नारियों को समाज में गैर बराबरी की स्थिति से मुक्त होने में पूर्ण योगदान दिया है। इस साहित्य ने स्त्री में आत्मविश्वास और दृढ़संकल्प का संचार करने में सहयोग दिया हैं l

,

नई दलित स्त्रीवादी कविता नारी जीवन पर सीधा प्रभावित करती है। दलित स्त्री कविता पर दलित आन्दोलनों का भी स्पष्ट प्रभाव है l दलित स्त्री आन्दोलन का आंकलन करते हुए विमल थोरात ने लिखा है l"स्त्री पुरुष संबन्धों की समतावादी व्याख्या .करने के साथ ही दलित स्त्री के दोहरे शोषण की त्रासदी की अभिव्यक्ति द्वारा दलित स्त्री उनके प्रति नारीमुक्ति आन्दोलन के संकीर्ण l होती है सामाजिक न्याय मांगती अपनी आवाज़ दर्ज करती है"।

स्त्री अस्मिता को स्वाभिमान से जोडकर देखा जाना चाहिए। समकालीन नारीवादी आन्दोलनों ने यह स्थापित किया है कि स्त्री का अस्तित्व, उसकी अस्मिता और पहचान का संकट ही सबसे बडी चुनौती है।

भारतीय दलित स्त्री कविता बंधन से मुक्ति का आह्वान है l उसमें अतीत के प्रति आक्रोश है l वर्तमान के प्रति असंतोष प्रकट करते हुए भविष्य के प्रति प्रतीक्षा भी रखती है l इसमें आज की दलित स्त्री का स्वर मुखरित हुआ है l अब स्त्री अपने सम्मान और स्वाभिमान के प्रति सचेत एवं सतर्क है। आज आत्मसम्मान और सामाजिक चेतना से युक्त प्रतिरोध में स्त्री सशक्त हुई है। यह प्रतिरोध भारतीय दलित स्त्री कविता में रूपायित होनेवाले सामाजिक चेतना का प्रतीक बन गया है।

समाज की ही तरह साहित्य भी गतिशील है। इस गति शीलता के कारण दलित साहित्य ने अपने भीतर की कमियों और सीमाओं का रेखांकन करना भी शुरु किया है। यह आत्मालोचना दलित साहित्य को सही दिशा की पहचान दिला रही है l इसी वजह से दलित साहित्य स्त्री सम्बंधित विषयों को बहुत गंभीरता से ले रहा हैं l नयी दलित स्त्री अपने अनुभवों

,

को खुद भयान करती है। अपनी जिम्मेदारियों से जागरूक और अपने अधिकार के प्रति सजग है। उसका संघर्ष और संकल्प बेहतर वर्तमान के साथ नये भविष्य के निर्माण केलिए है।

वर्तमान सन्दर्भ में दलित स्त्री कविता दलित चेतना या मुक्ति का घोषण पत्र बन गयी है। वह सदियों से सामाजिक शोषण और भेदभाव को मिटाकर मानव अधिकारों की सशक्त आवाज में परिवर्तित हो गयी है। समय और परिस्थितियों के बदलाव तथा नारी संघर्ष ने दलित साहित्य पर बहुमूल्य प्रभाव डाला है। दलित स्त्री के इस बदलते परिवेश को स्त्री साहित्य मुख्य विषय बना रहा हैं l जिसमे स्त्री अस्मिता पर जोर दिया गया हैं l स्त्री के ऊपर हो रहे दोहरे शोषण का सीधा चित्र दलित स्त्री साहित्य में खुलकर मिलता है।

स्त्री अस्मिता के बारे में प्रमुख हिंदी लेखिका रमणिका गुप्ता जी का विचार 2"दरअसल यह पुरुष के समान स्त्री का समान अधिकार स्त्री के प्रति विवेकमूलक दृष्टिकोण तथा स्त्री द्वारा पुरुष के वर्चस्व का प्रतिरोध है। औरत का केवल स्वतंत्र होकर निर्णय ले सकता ही या आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो जाता ही उसकी अस्मिता नहीं है। सही मायने में स्त्री अस्मिता का अर्थ होगा स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण और मानसिकता में बदलाव जिसमें स्त्री का खुद का दृष्टिकोण भी शामिल है। पुरुष के बराबर अधिकार, स्त्री के चयन, वरण और नकारने की स्वतंत्रता स्त्री की अस्मिता की मुख्य शर्ता है।"[2]

भारतीय दलित कवयित्रियों के मूल विषय पर ध्यान दिया जाये तो समता, प्रतिरोध, संघर्ष, अस्मिताबोध आदि समान मूल्य एक ही प्रश्न के रूप में आ जाता हैl वह चाहे हिन्दी में हो या फिर दक्षिण भारतीय भाषा समाज में हो। केवल सामाजिक व्यवस्था और स्थिति में अंतर है जिसके कारण मराठी, तमिल जैसी भाषा कवयित्रियाँ जितना खुलकर लिखती है उतना अन्य भाषा में कम मिलता है। दलित स्त्री साहित्य के केन्द्र बिंदु में स्त्री अस्तित्व और

,

अस्मिता के प्रश्न है। साथ ही पितृसत्ता,आर्थिक शोषण, अधिकार हनन, कानूनी भेदभाव, पारिवारिक संबंध, सत्ताधिकार तथा यौन शोषण और स्त्रियों के प्रति होनेवाले हिंसा भी सम्मिलित है।

दलित स्त्री अपनी अस्मिता को रूपयित करने केलिए संघर्षरत है। इस संघर्ष में उसे सामाजिक न्याय केलिए अपनी आवाज़ को बुलंद करना पड़ता है। इस तरह भारतीय दलित स्त्री कविता समाज में दलित स्त्री की स्वतंत्रता तथा उसकी सामाजिक न्याय का प्रतिस्वर एवं प्रतिबिम्ब बन चुका है ।

3.3 दलित स्त्री कविता की शिल्प विधान

दलित साहित्य ने सामान्य जनजीवन को साहित्यक शैली में व्यक्त कर एक नए किस्म का सौन्दर्यशास्त्र भी गढा है।समकालीन दलित स्त्री कवयित्रियों ने अपने जीवनानुभव के साथ स्त्री की पहचान अपने जीवनानुभव के साथ स्त्री की पहचान, उनका विद्रोह, मुक्ति की चाहत, आज़ादी आदि को साधारण प्रतीक एवं बिंब के माध्यम से प्रस्तुत करने लगी है। उन्होंने अपनी भाषा में स्त्री स्वत्त्व को पहचाना है।

दलित स्त्री कविता की भाषा दलित संस्कृति का पुनर्गठन एवं जैविक है। इसका प्रतिरोधी स्वर समाज में मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करके प्रत्येक जीवन यथार्थ को व्यक्त करने वाला है। इस केलिए दलित कवयित्रीयाँ अपने समाज और संस्कृति से जुड़े प्रतीक एवं बिंब का सहारा लेती है। जो आधुनिक साहित्य एवं समाज के लिए एक नवीन बिम्ब भाषा है। दलित कविता पुराने मिथकों को नई परिभाषाएं देकर नये मिथक को ढूंढती भी है।

,

3.4 भारतीय दलित कवयित्रियों की काव्य दृष्टि

भारतीय दलित कविता मैं कवयित्रियों ने नारी जीवन की विशेषताओं को विभिन्न रूप से दर्शाया है। इसमें बहिषकृत स्त्री,अलगाव, उपेक्षित जीवन ,अस्तित्व की कोशिश आदि विषयों को अभिव्यक्ति मिली हैं ।भारतीय दलित स्त्री कविता की विशेषता विलाप और लुप्त होना नहीं बल्कि संवाद और उपस्थिति है । उनकी चिंताएं, चुनौतीयां,उनके सरोकार एक समान है । दलित कवयित्रियों ने अपनी कविता में नया बिम्ब और नये प्रतिमान गढ़ा है । जब तक औरतें स्वयं अपनी आजादी की बात नहीं कहेगी उनको समता एवं अधिकार मिलना संभव नहीं है । दलित स्त्री कविताएं केवल स्त्री अधिकारों केलिए ही नहीं सम्पूर्ण मानव गरिमा केलिए संघर्षरत है ।

3.5. हिन्दी दलित कवयित्रियों की काव्यदृष्टी

समकालीन परिवेश में दलित स्त्री की स्थिति को हिंदी दलित कवयित्रीयों ने अर्थ गंभीरता के साथ अभिव्यक्त किया है । हिंदी की दलित कवयित्रियों ने यथार्थ के धरातल पर उतरकर दलित स्त्री की सामाजिक विडंबनाओ पर प्रत्याघात किया है। हिंदी कविता में दलित स्त्री ने अपनी जगह बना ली है। यह स्थान उसके अधिकारों और स्वतंत्रता के पक्षधर है । रजनी तिलक, रजत रानी मीनू,कौशल पवार, कुसुम मेघवाल, हेमलता महीशवर, सुशीला टाकभौरे, नीरा परमार, कावेरी ,रजनी दिसौरिया ,पुष्पा विवेक,अनिता भारती आदि कवयित्रियों की कविता का मुख्य स्वर दर्द की अनुभूति को अभिव्यक्त करना और दलितों को संघर्ष करने की प्रेरणा देना है। इनकी कविताओं की प्रेरणा स्त्रोत अम्बेडकर की विचारधारा है। इसलिए इनकी कविताओं में वर्ण एवं जाति व्यवस्था को ध्वस्त करने का स्वर मुख़रित है ।

,

3.5.1 रजनी तिलक

रजनी तिलक मात्र एक कवयित्री या साहित्यकार नहीं बल्कि दलित एवं स्त्री आन्दोलन की सक्रिय कार्यकर्ता भी है l उन्होंने हमेशा महिलाओं और दलित समाज पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ अपनी आवाज़ को बुलंद किया है। उनका कविता संग्रह 'पदचाप' और 'हवा सी बेचैन युवतियाँ' काफी चर्चित रहे है। दलित महिलाओं की आवाज़ उठाने केलिए रजनी तिलक दिल्ली में भारतीय 'दलित पैंथस' नामक संगठन में सक्रिय रूप से कार्यरत रही। उन्होंने 'आह्वान थियेटर' और युवा अध्ययन मंडल नामक समूहों की स्थापना करके दलितों के बीच जागरूकता को बढ़ाने का काम किया। उनके कविता संग्रह 'पदचाप' में संकलित पहली कविता सावित्री बाई फुले पर आधारित है। कवयित्री दलित नारियों से आह्वान करती है कि आज सावित्री बाई को पूजने की जगह उनकी अनुकरण करने की ज़रूरत है, क्योंकि सावित्री बाई फुले ने ही दलित शोषित स्त्रियों को उनकी मुक्ति की राह दिखाई थी l

भारतीय दलित पँथर्स, दलित महिला आंदोलन,दलित लेखक सघ, सेंटर फॉर अलटेरनेटिव दलित मीडिया जैसे कई संघों में उनकी सक्रिय भागीधारी थी lवह सावित्री भाई फूले को अपना पदप्रदर्शक मानती है l

3"तुम्हीं हो हमारी आदर्श
हमारे बर्द संस्कारों की
वर्गीय, दर्प और उत्पीडन की
पथ प्रदर्शक सावित्री
तुम्ही हो दर्शन हमारे नारीवाद की।" 3

,

रजनी तिलक ज़िन्दगी भर समानता के पथ पर चलकर एक नये समाज का सपना देखनेवाली है। वह अपनी कविताओं में दलितों केलिए आत्महीनताओं से बाहर निकलकर अपने लिए स्वाभाविमान का पाठ लिखती है। उनके अनुसार दलित स्त्री कविता में दलित विमर्श और स्त्री विमर्श को आरपार देखा जा सकता है। रजनी तिलक ने समाज में स्त्री की स्थिति को स्पष्ट करते हुए बताया है कि नारी की स्थिति गुलाम जैसी है । सदियों से औरतों को धन संपति और साधनों से वंचित रखा गया है । वह हमेशा संस्कृति के मूल्यों को ढोती रही है । उनकी 'चेरी' नामक कविता में स्त्री अपनी वजूद को इस प्रकार ढूंढ रही है ।

4'हज़ारों हजार नाम में धरी
असंख्य उपमानों से सजी स्त्री
ढूंढ रही है वजूद कि
खुद को पहचान सके।'4

रजनी तिलक की कविताओं में पीड़ा के साथ विरोध और आक्रोश के साथ विद्रोह है। उनकी कविता मिथकों को तोडती हुई अबला नारी के दीन हीन स्थिती को भी प्रस्तुत करती है । रजनी तिलक की कविताएँ स्त्री मुक्ति की सशक्त कविताएँ है। जिनका आधार दलित स्त्री आन्दोलन और सशक्त स्त्री लेखन है। रजनी तिलक के दोनों काव्य संग्रह 'पदचाप 'और 'हवा सी बेचैन युवतियाँ' दलित स्त्री कविता के पहचान देने में सक्षम है। उनकी कविता में मूल्यबोध व समानता उपस्थित है । भारतीय भाषाओं की दलित कविताओं में रजनी तिलक की कविताओं के जैसे संघर्ष की समग्रता, जातीय उत्पीडन का चित्रण,मानवधिकार आदि की ज़ोरदार अभिव्यक्ति कम दिखाई पडती है ।

,

स्त्री अस्मिता को दलित कविता के सामाजिक सरोकारों से कवयित्री ने अपनी कविताओं में बडी बारिकी से पिरोया है। कविताएँ उनकेलिए शौक का विषय नहीं बल्कि उनकी सामाजिक उत्तरदायित्व का आंकलन एवं जातीय ज़िन्दगी के कडवे यथार्थ की प्रस्तुतीकरण है।

3.5.2 रजतरानी मीनू

हिंदी की वरिष्ठ लेखिका रजत रानी मीनू का कविता संग्रह है 'पिता भी होते है माँ'। 'हम कौन है' नामक कहानी संग्रह और 'हिंदी दलित कविता,' 'हिंदी दलित कथासाहित्य की अवधारणाएं और विधाएं,' 'भारतीय साहित्य में दलित स्त्री, अस्मिता मूलक विमर्श और हिंदी साहित्य आदि आलोचनात्मक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुके हैं।

दलित स्त्रीवादी लेखिका रजत रानी मीनू की लम्बी कविता 'पिता भी होते है माँ' में उन्होंने परंपरागत स्त्रीवादी सोच से हटकर पिता के प्रति ईमानदार एवं निष्पक्षतापूर्ण भाव प्रकट किया है। मीनू की इस कविता में पिता का रूप एक विनम्र एवं मेहनती वात्सल्य पूर्ण पिता का है। इस कविता में वे कहना चाहती है कि पुरुष भी वात्सल्यपूर्ण हो सकता है और स्त्री भी पितृसत्तात्मक रुखवाली हो सकती है। स्त्री एवं पुरुषों के ऐसे मिथकों को तोडती हुई दलित स्त्री कविता समाज के नये मूल्यबोध की ओर इशारा करती हुई प्रतीत होती है।

रजत रानी मीनू अपना मत प्रकट करते हुए कहते है।5"दलित स्त्री पितृसत्ता से ज्यादा जातिसत्ता से पीडित है। गैर-दलित स्त्रियों का बहनापा शाब्दिक तो खूब है, लेकिन बौदिक, व्यवसाय और सांस्कृतिक क्षेत्रों में समान अवसर प्रदान करने की दिशा में शून्य है। इसलिए एक सवर्ण स्त्री की मुक्ति और एक दलित स्त्री की मुक्ति के रास्ते समान नहीं है।"5

,

रजत रानी मीनू अपनी लंबी कविता 'आदिवासी' में दलितों और आदिवासियों की सामाजिक स्थिति से सहानुभूति रखनेवाले लोग से कहती है कि उन्हे उनकी झूठी सहानुभूति की जरुरत नहीं है।

6"तुम मत लडो, मेरी मुक्ति की लडाई
मत सिखाओं मेरे बच्चों को क्रांति का पाठ
क्योंकि क्रांति वह नहीं जो तुम बताते हो
क्रांति वह है, जिसकी शिक्षा रूपी राह
बाबासाहेब ने दिखाई थी।"6

दलितों पर होने वाले अन्याय के प्रति समाज की व्यवस्था हमेशा उदासीन ही है। मीनू अपनी कविता में इसी उदासीनता को खोलकर रखने का प्रयास करती हुई समाज की इस उदासीन स्थिति पर व्यंग्य और आक्रोश प्रकट करती है।

3.5.3 डॉ.पूनम तुषामड

1975 में दिल्ली में जन्मी पूनम तुषामड नयी पीढ़ी की दलित कवयित्री है। डॉ पूनम तुषामड ने जामिया मिलिया से पीएचडी की उपाधि हासिल की । इनकी प्रकाशित रचनाओं में'मेले में लड़की'कहानी संग्रह और दो कविता संग्रह 'माँ मुझे मत दो और 'मदारी' शामिल है । पूनम तुषामड का 'माँ मुझे मत दो' कविता संग्रह में कुल 37कविताएं संकलित है। इस काव्यसंग्रह में विशेष रूप से स्त्रीविमर्श और दलित विमर्श की कविताएँ है। पूनम जी दिल्ली विश्व विद्यालय के अम्बेडकर कॉलेज में प्राध्यापिका है।

,

पूनम तुषामड अपनी पहली कविता 'चाँद मुझे है भाए अम्मा' में समाज में फैली जातिभेद की भावना के विरुद्ध चाँद के माध्यम से सामाजिक समता का बिम्ब निरूपित करती है।

7"चाँद न पूछे जाति किसी की
छुआछूत की बात कभी भी
जैसा पंडित ठाकुर के घर
मेरे घर भी आए अम्मा
चाँद मुझे है भाए अम्मा। " 7

'कैद' कविता में कवयित्री ने स्त्री शोषण के साथ स्त्री सबलता का भी चित्रण किया है। आज की दलित नारी अपने शोषण का प्रतिकार करती हुई अपनी मुक्ति का मार्ग स्वयं खोजने लगी है। 'माँ मुझे मत दो' कविता इस संग्रह की शीर्षक कविता है। इस कविता के माध्यम से एक दलित लडकी की सामाजिक विरोध और विद्रोह व्यक्त किया गया है। पूनम तुषामड का काव्य संग्रह 'माँ मुझे मत दो' 2010 में प्रकाशित हुआ।

पूनम तुषामट एक ऐसी दलित कवयित्री है जो परम्परावादी सामाजिक वर्ण-व्यवस्था के सभी आयामों को उगेड़ते हुए सदियों से चली आ रही दलितों के शोषण को रोकने का प्रयास करती है। वह अपनी कविता में मैल ढोना, झाड़ू लगाना, जूते सिलना और दुनिया भर के गन्दे काम करना, जैसे दलितों द्वारा किये जाने वाले गन्दे कार्य करने से रोकते हूए दलितों में आत्मचेतना की भावना जागृत करती है। इसके जरिए वह अपने असली वजूद को पहचान लेती है

,

8"पर खबरदार

अब मेरे समाज के हाथ में

भी चाबुक है शक्ति का

जो तुम्हारे दंभ को चूर-चूर करने का

रखती है हौसला।"[8]

कवयित्री का दृष्टिकोण संघर्ष एवं मानवता से प्रभावित है। वे इस बात को समझाना चाहती हैं कि दलित समाज अब जाग्रत है कि उसको किस तरह अपना हक हासिल करना है।

3.5.4 सुशीला टाँकभौरे

सुशीला टाकभौरे की रचना संसार काफी विस्तृत और उदेश्य परक है। उन्होंने उपन्यास कहानी और कविता , नाटक आदि विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। उनकी रचनाएं समाज में समानता एवं उच्च आदर्शों की वकालत करती हैं। उनके उपन्यास 'नीला आकाश',वह लड़की' और 'तुम्हें बदलना ही होगा' अंबेडकरवादी विचारधारा से प्रभावित है। इसमें दलित सामाजिक समरसता तथा जातिगत व्यवस्था के उन्मूलन की अवश्यकता प्रस्तुत होतो है। सुशील जी की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' वर्ष 2011 में प्रकाशित हुई इसके माध्यम से उन्होंने अपने जीवन के संघर्ष और कटु अनुभवों को प्रस्तुत किया है।

सुशीला टाकभौरे हिंदी की अग्रणी दलित कवयित्री है जिनकी कविताएँ दलित और स्त्री दोनों को संबल प्रदान करती है वह सामंतवादी व्यवस्था पर प्रहार करती है जिसने दलित एवं स्त्रियों को अपने कब्जे में दबाकर रखा है। कवयित्री अपनी कविता "हमारे हिस्से का सूरज' में यह बताती है कि हमारे हिस्से का सूरज कहाँ छिपा है और उस क्रान्ति सूर्य के माध्यम

,

से दलितों को जागृत करने का प्रयास करती है l आगे यह भी कहती है कि दलित समुदाय अपनी स्थिति को समझे और डॉ. अम्बेडकर की विचारधारा को अपने भविष्य के विषय समझने का प्रयास करे।

9"बरसों पैरों में वही है
दासता की बेड़ियाँ
हाथों में वही है
नरक सफाई के औजार
सिर पर भी वही है
त्याज्य अपवित्रता का बोझ
कोई परिवर्तन नहीं।"[9]

'यह कौन-सा समाज है' कविता में कवयित्री कहना चाहती है कि दलित समाज अभी तक परिवर्तित नहीं हुआ है। इस विषय पर वह आक्रोश व्यक्त करती और प्रेरणा देती हुई कहती है कि कब तक तुम इस तरह की शोषित सामाजिक व्यवस्था में घुटते रहोगे, अब तो जागो और अपने अधिकारों के लिए लड़ो।

सुशीला टाकभौरे जी की कविताओं मैं स्त्री और दलित होने का दुख नहीं है अपितु पुरुष सत्तात्मक प्रवृत्ति और भेदभाववादी सामाजिक संरचना के प्रति संघर्ष है l उनकी कविता दोहरी पायदान पर खड़ी होकर वर्ण व्यवस्था, विसंगतियों, दलित जीवन का त्रास, छूआछूत,दलित बोध, भूख और गरीबी आदि विषयों पर चर्चा करती है l सुशीला टाँकभौरे यहाँ उन बिन्दुओं को रेखांकित कर जवाब चाहती है जिनके कारण औरत को गुलाम बनाया

,

गया है l यहाँ यह समीचीन प्रतीत होता है कि समाज ने नारी को अनेक प्रकार के बन्धनों में जकड़ रखा है जिसके कारण वह प्रताड़ित होती है।

10"माँ-बाप ने पैदा किया था गूँगा!
परिवेश ने लंगड़ा बना दिया
चलती रही/निश्चित परिपाटी पर/
बैसाखियों के सहारे
कितने पड़ाव आये।"[10]

भारतीय समाज की सनातनी व्यवस्था में औरत हमेशा किसी-न-किसी के संरक्षण में रहती आयी है। माँ, बेटी, पत्नी और बहन तक तो उसे स्वीकार करते हैं पर एक स्त्री के रूप में स्वीकार कर पाना पुरुष समाज के लिए कठिन लगता है। इसलिए लेखिका यहाँ बताती है कि समाज में हर लड़की गूँगी पैदा होती है और हमारा सामाजिक परिवेश उसे लंगड़ी बना देता है। यहाँ सुशीलाजी ने लड़की की वेदना का चित्रण करते समय दलित या गैर दलित में भेद नहीं दर्शाया हैl सुशीला टाकभौरे जी की कविता एक नहीं दो विमर्शो का सफल मेल है l उन्हें स्त्री और दलित होने का दुख नहीं है अपितु पुरुषसत्तात्मक प्रवृति और भेदभाववादी समाज रचना के प्रति चिड हैl उनकी कविता दोहरे पायदान पर खड़े होकर वर्ण व्यवस्था ,विसंगतियों, दलित जीवन का त्रास, छुआछूत दलित बोध , भूख और गरीबी आदि विषयों पर आग बरसाती हैl

कवयित्री अपनी कविता 'दिवा स्वप्न' के माध्यम से शोषित-पीड़ित जनता को परिवर्तन और जागृत करने का सपना दिखाती है l जिसमें वह बाबा साहब के सपने को साकार करने के लिए प्रयत्न करती है और सामाजिक बुराइयों को त्याग कर अपने समाज से नये

,

जीवन की शुरुआत करने की प्रेरणा देती है। दलित नारी का सभी क्षेत्रों में शोषण हो रहा है किन्तु वर्तमान समय में वह शोषक सामाजिक व्यवस्था ही है। इस कार्य के लिए कवयित्री नारी में संघर्ष चेतना भरने की कोशिश कर रही है । दलित स्त्री की सामाजिक संघर्ष की निरपेक्षता को सुशीलाजी की कविताएं प्रस्तुत कर रही है ।

3.5.5 कावेरी

मशहूर दलित कवयित्री कावेरी का दलित साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है । उनकी कविताओं का पहला संकलन 'नदी की लहर' 1987 में प्रकाशित हुआ था । 'द्रोणाचार्य एक नहीं' कहानी संग्रह और 'मिस रमिया' नामक उपन्यास उनकी अन्य प्रकाशित कृतियां है। दलित स्त्री विमर्श और अंबेडकर का मानवतावादी विचार ने उनकी सृजनात्मकता को काफी प्रभावित किया है

कावेरी जी की दलित कविताएँ वर्ण एवं जाति व्यवस्था को उनमूलन करना चाहती है। दलितों केलिए गाँव दमन और शोषण केलिए पोषक है। सवर्णों केलिए ग्रामय जीवन सुखद और मुग्ध लगते है । लेकिन दलितों केलिए गाँव घृणा, अपमान,उत्पीडन और अस्पृस्यता का दशा ही है। "मेरा गाँव' कविता में कावेरी जी लिखती है।

"ब्याह-बारात का काम कराते
देकर जूठन बहकाते
जब मरता है कोई जानवर
दे देकर गाली उठवाते
दिन रात गुलाती कर-करके
थक गए बिबई फटे पाँव
मेरा गाँव कैसा गाँव
न कही ठौर, नही कही ठाँव"[11]

,

जब सवर्णों केलिय गांव सुनहले यादों से भरे होते है लेकिन वही गांव दलितों केलिए अपमान, वेदना और तिरस्कार की यादों से भरे रहते है l

3.5.6 कुसुम मेघवाल

कुसुम मेघवाल का जन्म 1948 में राजस्थान के उदयपुर नगर में हुआ l राजस्थान में पढ़ लिखकर हिंदुस्तान सिंह लिमिटेड में अधिकारी बनी उन्होंने समसामयिक मुद्दों पर कई पुस्तकें लिखी हैl कुसुम मेघवाल राजस्थान की दलित स्त्री कवयित्री और नेता है उनका कविता संग्रह 'कैसे सहती हो तुम नारी इतनी पीड़ा' समाज के अन्याय पूर्ण सामंती व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगाती हैं l

3.5.7 रजनी अनुरागी

रजनी अनुरागी ने दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से हिंदी साहित्य में पीएचडी की उपाधि प्राप्त कीl जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज दिल्ली में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत है lअब तक उनका कविता संग्रह और साहित्य आलोचना की पुस्तक 'वर्जनाओं के पार खिलता फुल 'प्रकाशित हुआ है उन्होंने कई महत्वपूर्ण पुस्तक और पत्रिकाओं का संपादन किया है lउनकी कविताएं और लेख प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में छपते रहे हैं l 'बिना किसी भूमिका के' उनका कविता संग्रह है l उनकी कविताएं भारत के विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का हिस्सा हैlरजनी अनुरागी अपनी कविताओं में औरत की भावना ,आशा ,आकांक्ष तथा संवेदनाओं को नया अर्थ देने के लिए नए-नए प्रतीकों को चुनती है l वह अपनी लेखनी स्त्री उद्यान तथा समाज हित के लिए प्रयोग करती हैंl

,

3.6 तेलुगु दलित कवयित्रीयों की काव्यादृष्टी

तेलुगु दलित प्राचीन साहित्य के अंतर्गत तेलुगु में रामायण रचनेवाली 'मोल्ला' को प्रथम दलित कवयित्री माना जाता है। तेलुगु में मोल्ला द्वारा रचित रामायण को प्रथम संग्रहित काव्य माना जाता है। जूपका सुभद्रा ,अरुणा गोगुला मंडा,वीनावासिनी थेरेसा, देवादानम्, गोडाढा कस्तूरी, बालाजी विजयलक्ष्मी, राजमणि देवी, गेगू श्यामला, चल्लापल्ली स्वरूप राणी, जाजुला गौरी आदि अनेक कवियत्रियों ने तेलुगु दलित स्त्री काव्यधारा को संपन्न किया है।

सामाजिक संरचनात्मक परिवर्तन में तेलुग दलित महिला आन्दोलन की सक्रिय भूमिका दलित स्त्री अस्मिता बोध के विकास का सूचक है। जातिगत शोषण, अन्याय व अत्याचार के खिलाफ संघर्ष, सामाजिक समानता का आन्दोलन तेलुगु दलित कविता का मुख्य उद्देश्य रहा है।

तेलुगु दलित कवयित्रियों की कविताओं में जाति लिंग वर्गभेद के खिलाफ शक्तिशाली अभिव्यक्ति हुई है। हरिशे शशि निर्मला, सीता महालक्ष्मी नक्का, विजय भारती आदि कवयित्रियां नयी रूप में दलित नारीवादी कविताएँ लिख रही है। तेलुगु दलित स्त्री कविता में जातिवाद का प्रबल विरोध एवं समानता के लिए विद्रोही स्वर मुखरित है। लेकिन स्त्री पुरुष संबंध , स्त्रीत्व के दायित्व आदि विषयों की चर्चा कम ही हुई है। फिर भी तेलुगु स्त्री कविता अपनी सही एवं सटीक दिशा की ओर अग्रसर है ।

,

3.6.1 जूपका सुभद्रा

जूपका सुभद्रा तेलगाना राज्य की एक दलित कवयित्रि है जो अपनी कविताओं में दलित संघर्ष को दर्शती है। उन्होंने दलितों विशेषकर दलित स्त्रियों की जीवन पर प्रकाश डालने वाली कवितायें और लघु कहानियां लिखा है 1 उनकी कविताओं में ग्रामीण पृष्टभूमि के दलित स्त्रियों के संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है। तेलुगु में उनकी कविता 'अप्पाये दम्मक्का' दलित समुदाय के भीतर लैगिक भेदभाव और शोषण को उजागार करता है। उनकी एक और प्रसिद्ध कविता है "कांगू एक चीर नहीं है।' जो मडिग कविता संग्रह के है जिसमें वह सवर्ण महिला द्वारा पहननेवाली घुँघट और दलित स्त्री द्वारा पहननेवाली कोंगू के बीच के अंतर को प्रस्तुत करती है। वह एक ही समय जाति चिन्ह भी बनता है और शोषण का कारण भी 1

जूपका सुभद्रा की कविताएँ दलित महिलाएँ के जीवन और संघर्ष की स्थितियों को सामने लाती है। उनकी कविताओं में स्त्री की पारिवारिक एवं जातिय संघर्ष को बखुबी से चित्रित किया गया है।

तेलुग भाषा के संबन्ध में उनकी कविता है 'तेलगु को आवारा बना दिया' 1 इसमें वह तेलुगु में आर्य संस्कृति के बदलाव पर सख्त विरोध करते हुए तेलुग भाषा के सहजता और स्वाभाविकता को बनाये रखने का आग्रह प्रकट करती है 1 आर्य संस्कृति की सनातन मान्यताओ को अपनी कविता के जरिए निर्भय ढक्कर देती है 1

12"विजेता की भाषा ने
इतिहास में ऐसे सिर उठाया जैसे
पराजित की भाषा
एक काल अवाधित सूरज बन गई।

,

तेलुग की जडें पड़ा और गाँवों में
जहाँ पसीना निकलता है और बहता है
जहाँ हमारे बूढे पुरुषों और महिलाओं के
गंदे पैर चलते है।" [12]

जूपका सुभद्रा ने तेलुग में राजनीतिक निबंध, पुस्तक समीक्षा आदि भी लिखी है। उन्होंने कैनुनाकला ठांडे (मंदिग कविताएँ) से तेलुग साहित्यक परिदृश्य को काफी प्रभावित किया है। उन्होंने सुप्रसिद्ध तमिल दलित महिला लेखिका बामा की 'संगति' नामक उपन्यास का तेलुग में अनुवाद किया है।

दलित नारीवाद के संबंध में उनके विचार है- 13"मुख्यधारा नारीवादियों की मुक्ति और दलित नारीवादियों की मुक्ति में काफी अंतर है। भारत में ऊँची जातियों पितृसत्ता से मुक्ति चाहती है दलित नारीवादी जाति, ज़मीदारी, भुख से भी आज़ादी चाहते हैं।"[13]

3.6.2 अरुणा गोखला मंडा

अरुणा गोखला मंडा तेलुँगाना की एक दलित कवयित्री है 1 वह एक मध्यवर्गीय कृषक परिवार से है। अरुणा गोखला मंडा उन दलित स्त्रियों के इर्द-गिर्द अपनी कविता बुनती है जिन्हें महिला और दलित होने के नाते दोहरे भेदभाव का सामना करना पडता है। उनकी "देवी के देश में एक दलित महिला' नामक कविता में में भारतीय संस्कृति का पाखण्ड को प्रस्तुत किया है। वह अपनी कविता के माध्यम से दलित मज़दूर वर्ग की समस्याओं को भी सामने लाती है। उन्होंने अपनी कविता में रोहित वेमूला नामक दलित छात्र के संघर्ष का चित्र प्रस्तुत किया है । वह संघर्ष कुलीन संस्थानों में विवेचन और अन्याय को सहते हुए दलित छात्रों को आत्महत्या की सीमा तक ले जाती है 1 अरुणा गोगुलमंडा "उसे बताया गया

,

था' कविता में वह बताती है कि आज भी भारत में कई जगह पर दलित महिलाओं को वस्त्र पहनने तक की इजाजत नहीं है l ताकि हर पुरुष उसे एक उपकरण के रूप में उस पर नज़र रख सके। इन सामाजिक कुरीतियों का खुलकर विरोध अरुणा गोखला मंडा अपनी कविता के ज़रिये प्रस्तुत करती है l

3.6.3 वेसपोगो गुलाबम्मा

दलित कवयित्री गुलाबम्मा का जन्म आंध्र प्रदेश के वारंगल जिले में हुआ l दलित स्त्रियाँ अपनी दयनीय स्थिति से बचने केलिए ईसाई धर्म को स्वीकार करती है l इसलिए वह अपनी कविताओं में धर्म परिवर्तन को दलित मुक्ति का मार्ग मानती है lइनकी भक्ति पूर्ण कविताएं काफी प्रभावकारी एवं प्रेरणादायक है l

3.6.4 वीणावासिनी थेरेसा देवादानम

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिए दलित कवयित्री वीणावासिनी ने सामाजिक न्याय को मुख्य विषय बनाकर कई कविताएं और लेख लिखें l उनकी प्रमुख कविता 'अस्पर्शयता उन्मूलन' में सामाजिक अस्पर्शता के विरुद्ध आवाज को सशक्त करते हुए जातिवाद विरोध केलिए लोकतंत्र की महत्व पर विचार किया है l

3.6.5 बालाजी पल्ली विजयालक्ष्मी

आंध्र प्रदेश के वारंगल के दलित कवयित्री विजयालक्ष्मी लिंग भेद, सामजिक असामानता के खिलाफ अपनी कविता से सशक्त संघर्ष करती हैl उन्होने दलित स्त्री पक्ष को प्रेरणा देनेवाले कई सामाजिक कहानियाँ और कविताएं लिखी है l

,

3.6.6 जाजूला गैरी

जाजूला सशक्त कवयित्री और दलित आंदोलन के सक्रिय भागीधार है l उनकी कविता 'मुझे कुचला गया' में जाति के साथ उपजातियों में बांटकर विभाजित होने वाले दलित समाज के घिनौनी प्रयास पर कवयित्री ने बहुत ही व्यंग्यत्मक चोट किया है l

3.6.7 डॉ. चल्लापल्ली स्वरुपा रानी

चललापल्ली स्वरुपा रानी की कविताओं में दलितों के स्वाभिमान को जगाने तथा अपने आपको सुधारने की जरुरत पर जोर दिया गया है l उन्होंने अपनी कविता 'मेकन पूवु' में अपने समाज और परिवार से अपमानित होती दलित महिला की संवेदना को चित्रित किया है l

14"अरे हा अपनी जिंदगी में मैंने जिया कब
घर में पुरुष अहंकार एक गाल पर थप्पड़ मरता है तो
गली में वर्ण अधिपत्य दूसरे गाल पर चोट करता हैl"1

चलापल्ली स्वरूपरानी की कविता 'जल' सामाजिक और भेदभावों प्रस्तुत करती है l कविता में जल का उपयोग दलितों द्वारा झेले जानेवाले व्यवस्था गत भेदभाव को प्रस्तुत करने केलिए किया गया है l

3.6.8 गोगू श्यामला

गोगू श्यामला तेलुगु के सफल कवयित्री एवं नेता है l श्यामला के नेतृत्व में 'रेयतु कुली संघ' नामक संगठन ने सभी प्रकार के महिलाओं के विरुद्ध होनेवाले अन्याय के विरुद्ध

,

आवाज़ उठायी है l भारत का प्रतिनिधित्व करते हूए श्यामाला जी ने 2001 में डरबन में रंगभेद के खिलाफ तीसरे विश्व संगोष्टी में भाग लिया है l

3.7 तमिल दलित कवियित्रीयाँ

तमिल में पहली दलित आत्मकथा दलित महिला बामा द्वारा लिखी गयी थी l जातिगत अधिपत्य के साथ पितृसत्ता भी दलित महिलाओं पर कितना कठोर औऱ अन्याय पूर्ण धमन करता है जिसका चित्रण तमिल कवयित्रीओं ने अपनी कविता में प्रस्तुत किया है l तमिल दलित कविता का आंदोलन चेतना के स्तर पर बहुत गहराई से जुड़ा है l इसकी जड़ में सदियों का अन्याय, अत्याचार और शोषण का इतिहास है l इसलिए तमिल दलित कविता समय के दौर में दलित आंदोलन को स्थायित्व प्रदान करने वाली कविता है l सुकृतिरानी, मीना कंडास्वामी, सलमा, मालती मैत्री आदि तमिल के सशक्त दलित कवयित्रीयाँ है l

3.7.1 सुकृतिरानी

तमिल दलित नारीवादी कवयित्री सुकृतिरानी की ‘कईपात्रियेन कनावुक्कल’, ‘इरावू मृगम’, ‘अवले मोषि पारताल’, ‘थी पेडाता मुत्तम’, ‘कामा ति पू’, ‘इप्पदिकू येवल’ आदि छह काव्य संग्रह प्रकाशित ही चुके है l उनकी कविताएं केवल दलित या नारीवाद की बात नहीं करती बल्कि विभिन्न राजनीतिक उत्पीड़न और अन्याय पर एक दृष्टि अपनाती हैं l उनकी कविताएं अंग्रेजी,मलयालम, तेलुगु,कन्नड़, गुजराती,मराठी,हिंदी और जर्मन में अनुवाद किया गया है l कई विश्वविद्यालय में उनकी कविता पाठ्यक्रम का हिस्सा बन गया हैl वह तमिलनाडु के रानीपेट जिले के एक उच्च माध्यमिक विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्यरत है l

,

वह अपनी कविता के जरिए यह स्थापित करती है कि कैसे जाति व्यवस्था स्त्री की शारिरिक स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करती है। उनके 'इरवु मृग्म', ‘कामायिपु’ आदि कविता संग्रह यह चित्रित करता है कि किस तरह महिलाओं के शरीर को हमेश पुरुष के संरक्षण के साथ देखा जाता है l तमिलनाडु के कालोजों के पाठय क्रम में सुकृतिरानी की कई कविताएँ शामिल है।

सुकृतिरानी की कविता में जाति और पितृसत्ता की जुड़वाँ दमनकारी रचनाएँ सामने आती है। उनकी कविताएं मिथक, दृष्टान्त और सामाजिक रूढ़िवादिता का सहारा लेते हुए समाज द्वारा थोपे गए पदानुक्रम और लिंग, जातिवादी आधार को नकारते है l

तमिल दलित कवयित्री सुकृतिरानी की कविताएं स्त्रीपक्ष की रचना है lउसमें पितृसत्ता और अन्तर्विरोध के असख्य बिम्ब समाहित है l इन अन्तर्विरोधों की सुक्षम पहचान उनकी कविता की पृष्टभूमि है। उनकी कविता की सार्थकता स्त्री पुरुष को विरोधी इकाइयों के रूप में देखने की अपेक्षा सम्बन्धों की रागत्मकता के मध्य एक नई सम्भावना की तलाश करने में है। सुकृतिराणी की कविताएँ स्त्री और दलित जीवन की मृदुल और आन्तरिक साहस पर आधारित समता का नया पाठ रच रही है। सुकृतिराणी की कविता में जाति और पितृसत्ता के जुडवाँ दमनकारी समस्याएं सामने आती है। उनकी कविता ऐसे तत्वों को प्रस्तुत करती है जो किसी को प्रकृति से सीधे संबन्ध रखने केलिए सक्षम बनाते हैं। सुकृतिराणी अपनी कविताओं में उन सभी परिदृश्यों को प्रस्तुत करती है जो एक दलित को सामना करना पडता है। उनकी कविता शुष्क भूमि, सड़ी गंध, मृत जानवरों को दफनाना नंगे पैर चलना, खेती से फटे हाथ, भुख, अछूतों केलिए निर्धारित दूरी पर पानी पीना आदि दृश्यों से सजकता रखती है।

,

सुकृतिराणी की कविता 'शिशु भाषा' में आप एक ऐसी भाषा केलिए अपनी इच्छा व्यक्त करती है जो ताज़ा और संपूर्ण हो1 एक ऐसी भाषा जो उसके लोगों द्वारा झेले गए कष्टों से दूषित न हो यह करुणा की भाषा है जो जीभ को घायल नहीं करेगी बल्कि एक नयी भाषा को जन्म देगी। यह नई भाषा में शरीर के उत्पीडन से मुक्ति के साथ-साथ कलात्मक उपस्थिती को जन्म देनेवाली हो1 यह कविता मुक्ति की तीव्र आग्रह को प्रस्तुत करती है 1

3.7.2 मीना कंदास्वामी

मीना कंदास्वामी का जन्म 1984 में चेन्नई तमिलनाडु में हुई। उन्होंने अन्ना विश्वविद्यालय चेन्नई से भाषाविज्ञान और दर्शनशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है 1 मीना के दो कविता संग्रह 'टच' (2006) और 'मिस मिलिटेंसी' (2010) में प्रकाशित हुए है। 2001 से 2002 तक उन्होंने दलित मीडिया नेटवर्क की द्विमासिक वैकलपीक अंग्रेज़ी पत्रिका 'द दलित' का संपादन किया।मीना कंदास्वामी भारतीय नारीवादी कवयित्री, लेखिका और अनुवादक है। उनकी कविताएँ और लेख मुख्य रूप से आधुनिक भारत में नारीवाद और जाति सुधार पर केन्द्रित है। उनकी कविता तमिल महाकाव्य 'सिल्पथिकारम' की नायिका कन्नकी की यात्रा को दर्शती है, जो महिलाओं को असीम साहस का संदेश देती है। उन्होंने केरल के दलित समाज सुधारक अय्यंकाली की जीवनी "अय्यंकाली-दलित लीडर ऑफ ऑगनिक प्रोटेस्ट" नाम से लिखी है।

एक लेखिका के रूप में मीना का ध्यान मुख्य रूप से जाति उन्मूलन, नारीवाद और भाषाई पहचान पर था। दलित कविता की भाष के संबंध में मीना ने कहा है- 15"मेरी कविता दर्द में छटपटाती है। मेरी कविता से खून की गंध आती है, मेरी कविता बलिदान को सलाम

,

करती है। मेरी कविता मेरे लोगों की तरह बोलती है मेरी कविता मेरे लोगों केलिए बोलती है"।15

मीना कंडासामी उन चंद भारतीय कवयित्रीयों में एक है जो अपनी गहरी पीड़ा को शानदार कविता में बदलने में कामयाब रही है 1 वह क्लासिक मिथकों से अपनी कविता केलिए मिथकों और पात्रों कों लेती है और उन्हें उनकी मूल पहचान से बिलकुल अलग पहचान देकर मिथक से मुक्त करती है 1 कंदसामी अपने काव्य संग्रह को अपनी पहचान और चेतना के साथ आने की प्रक्रिया के रूप में मानती हैं 1 उनकी कविता तमिलनाडु के जाती ग्रस्त सामाजिक परिवेश में एक महिला होने के अर्थ के बारे में अपनी जागरूकता को दर्शाती है 1 अपनी कविता में वह ना केवल जातिगत भेदभाव की बात करती है बल्कि नारीवाद के प्रति अपने दृष्टिकोण भी प्रकट करती है 1

वह अपनी कविताओं में एक स्त्री और दलित के रूप में अपनी गरिमा पर जोर देती है 1 उनकी 'गरिमा ' नामक अपनी कविता में दलित महिलाओं की जागृत चेतना और उनकी गरिमा के बारे में चिंता को प्रस्तुत करती है 1

16। है उत्तपीड़क जातियों के बेटों,

हम तुम्हें सदियों से विकसित सुपारईगो को जारी रखने से नहीं रोकते /

हम तुम्हें पदानुक्रम द्वारा प्रधान की जाने वाली दुर्लभ

खुशी में भी डूबने देंगे/

लेकिन गरिमा के हमारे उचित हिस्से को दबाओ मत 16

एक स्त्री के रूप में उन्होंने अपनी शक्तिशाली भाषा और विद्रोही लेखन के माध्यम से अपने समुदाय का प्रतिनिधित्व किया है1 मीना कंडास्वामी की कविताएँ दलित महिलाओं

,

की आवाज़ को दोहराती है। उनकी कविताएँ यह चित्रित करती है कि कैसे जाति और लिगं एक मानव को दोगुना प्रताड़ित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

3.7.3 मालती मैत्री

मालती मैत्री समकालीन तमिल साहित्य के प्रतिष्टित दलित कवयित्री एवं नारीवादी कार्यकर्ता है । वह एक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता एवं बुद्धिजीवी है। वह पुतुचेरी राज्य से है । वह 1989 से साहित्य और राजनीतिक पत्रिकाओं में अपनी कविताएँ और लेखों से योगदान दे रही है ।वह तमिल की पहली नारीवादी पत्रिका ' अनंगु' के प्रकाशन संस्थापक है । 'शंकरपणी', 'नीरेंडी अमेडेयू 'उल्गू, 'निईली ' आदि उनके प्रमुख काव्य संग्रह है ।

3.8 मलयालम दलित कवयित्रियाँ

दलित महिलाओं के अनुभव की जटिलता सूक्ष्म स्तरों में निहित है । जहाँ दलितों को जाति और लिंग वर्चस्व की स्थितियों और अनुभवों के साथ-साथ जीवन संकटों से भी जूझना पडता है। मलयालम दलित स्त्री कविता मलयालम साहित्य में दलित आवाज शक्तिशाली आख्यानों के रूप में उभरा है जो हाशिए पर पड़े समुदायों के संघर्ष और लचीलेपन को प्रकाश में लाता है।दलित महिलाओं के अनुभव की जटिलता सूक्ष्म स्तरों में निहितहै मलयालम दलित स्त्री कविता महिला लेखन के पारंपरिक धारणाओं को उलटकर, दलित सामाजिक जीवन की सुंदरता और सांस्कृतिक विशेषताओं को उजागर करती है । मलयालम के दलित कविता भाषा और आत्मीयता के नये भाव जगत को जगाता है।

मलयालम दलित कवयित्रीयों ने समकालीन केरल की सांस्कृतिक राजनीतिक क्षेत्र में हाशिए पर पड़े लोगों की स्थिति के बारे में सूक्ष्म एवं जटिल स्तरों तक जाने की कोशिश

,

की है 1 मलयालम दलित कवयित्रीओं में विजिला चिराप्प्पाड , धन्या एम, डी, सती अंकमाली, अम्मू दीपा, राधामणि, इंदुश्री इरविमांगलम,अजिता, सुनीता तोपील,पी लिसा, अम्बिका प्रभाकरन, बिंसी मरिया, सिंदू, प्रीता. के.ओमानूर, विनिता आदि प्रमुख है।

3.8.1 विजिला चिरप्पाड

विजिला चिरप्पाड मलयालम के प्रसिद्ध दलित कवयित्रि है। उनके अनुसार हर महिला का संघर्ष एक जैसा नहीं है 1 केरल में सवर्ण जाति की महिलाओं और दलित महिलाओं के बीच अंतर व्यक्त करती हुई उनकी कविताएँ दलित स्त्रीयों की कठिनाईयों को दर्शती है। विजिला की प्रमुख तीन काव्यसंग्रह प्रकाशित हुई है- 'अडुक्कला इल्लात्त वीडु'। (रसोई के बिना एक घर, 2006) अम्मा ओरु काल्पनिका कविता अल्ला (माँ एक कल्पना की कविता नहीं है,2009), और पकारथी एषुत्तु (कॉपी किए गए नोट्स, 2015) विजिला की कविताओं में स्त्रियों के द्वारा सामना करनेवाली रोजमर्श की वास्तविकताओं के प्रति ईमानदार दृष्टिकोण प्रतिबिंबत होता है।

कैकालथुनिकल (घरेलू चिथडें) नामक कविता में वैवाहिक जीवन के बात रसोईघर में बंधी एक महिला और घर के चिथडों के बीच समानता को बहुत ही शानदार ढंग से दर्शाया गया है, जिसमें वह चाहती है कि बारिश उसे सभी बन्धनों से मुक्त कर दे।

विजिला की कविताएँ केवल जातिगत पहचान की मात्र अनुभूति नहीं है। उससे बढ़कर संपूर्ण मानव के प्रति व्यापक सहानुभूति में परिवर्तित हो जाती है।विजिला की 'वह जो आगे उड गई' (मुनपे परननावल) नामक कविता एक दलित माँ की सच्चाई और निसहाय स्थिति को प्रस्तुत करती है 1

,

अपनी लंबी साहित्यक परंपरा के बावजूद, मलयालम साहित्य इतने लंबे समय तक दलितों और उनकी वास्तविक संवेदनाओं को पूर्ण रूप से शामिल नहीं कर पायी है l अपनी कविताओं की ईमानदारी और स्पष्टता के माध्यम से विजिला दलित को विशेष रूप से दलित महिला को उन पीडाओं से मुक्त करने की कोशिश करती है जिनसे वे दैनिक आधार पर गुजरती है। विजिला की कविताएँ दलित महिला की आवाज़ का मजबूत प्रतिनिधित्व करती है l जाति संचालित समाज में एक दलित महिला के वास्तविक अस्तित्व को जीवंत करके विजिला एक विपरीत प्रभाव प्राप्त करने की कोशिश करती है। वह दलितों को अस्तित्व बनाए रखने और इच्छा शक्ति और आत्मसम्मान की एक मजबूत भावना पैदा करने की प्रेरणा देती है l

विजिला ने दलित समाज की पृष्टभूमि में परवर्ती मानसिक व्यापार से बदलते भारतीय समाज और जाति चेतना के विचारों को कविता की मुख्य विषय के रूप में प्रयोग किया हैl कवयित्री की हर एक कविता स्पष्ट रूप से महिलाओं की पराधीन जीवन एवं सामाजिक विभाजन को बड़ी बारीकी से दर्शाती है l विजिला चिरप्पाड की कविताएँ दलित महिलाओं के साथ सवर्ण जाती द्वारा किए गए अन्यायपूर्ण व्यवहार पर एक तीखी टिप्पणी है l

3.8.2 सति अंकमालि

मलयालम के प्रमुख दलित कवयित्रि सति अंकमालि एक साथ कवयित्रि, दलित कार्यकर्ता और प्रकाशक भी है। सति अंकमालि की कविता में शब्द वास्तविकता को घेरनेवाली सामान्यता से परे है जो बेहद ऐतिहासिक भी है। यही वह मूल कारक है जो उनकी

,

काव्य की राजनीति को निर्धारित करती है। सति की कविता उस प्राचीन गंध को सामने लाती है जो हमारे इतिहास और आख्यान को छुपाकर रखती है।

17"मैं उन शब्दों का
साम्राज बनेगा जो
चेतना को जलाते हैं,
प्रज्वलित करते है
आकर्षित करते है रचते है।
मार्गदर्शन करते है और जलाते है
गहरे है सपनों को
समंदर दूर से नहीं
बल्कि अपने दिल से।"17

सति की कविता की भाषा और अभिव्यक्ति दोनों में एक नया आयाम है। सति ने अपनी कविता में दलित महिलाओं के दयनीय जीवन की स्थिति का वर्णन किया है।

सति की कविता एक ऐसी आवाज है जो दलित जीवन एवं अनुभव को पुनः ग्रहण करता है। सतही तौर पर निष्पक्ष और बिना किसी स्पष्ट उत्तेजना के ऐतिहासिक पीडा और जीवन भावनाओं का प्रवाह होता है। उनकी कविता में जो उस शक्तिशाली आध्यात्मिक भावना को खोलता है जो मनुष्य मनुष्य केलिए महसूस करता है।

सति अंकमाली की दो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुकी है 'ती मरंन्नगल' (आग का पेड) 2011 और 'पूकलुडे वेदापुस्तकम' (2022) आदि। इनकी कविताओं में समकालीन

,

केरल की सांस्कृतिक और राजनीति और प्रतिनिधित्व क्षेत्र में हाशिए पर पडे लोगों की स्थिति के बारे में राजनीतिक सवाल खड़ा करके सूक्ष्म और जटिल स्तरों तक जाने की ताकत है।

सति अपनी कविताओं में आत्मचर्चा के रूप में अंतरंगता और गहराई देने में सक्षम है क्योंकि यह इतिहास और राजनीति को इतनी सावधानी से देखती है कि यह सतर्कता और सूक्ष्मता सति की कविता को अन्य स्त्री कविताओं से अलग करती है।

3.8.3 धन्या एम.डि

धन्या एम.डी की जन्म 1984 केरल के कोल्लम जिले के शुरनाड गाँव में हुआ धन्या की कविताएँ उन लोगों के तीव्र गुस्से की चर्चा करती है जो सदियों से समाज में हाशिए पर रहे हैं। इनकी कविताओं की रीढ़ नई पीढ़ी को प्रेरणा देने वाली धारदार शब्द है। बाधाओं से चलकर साहित्य की विशल दुनिया तक पहूँचनेवाली धन्या ने महिला सशक्तिकरण के नए द्वार ख़ोले है। मलयालम के विविध पत्र-पत्रिकाओं में उनकी कविताएँ प्रकाशित है। 'जीवन की चटाई बुननेवाली', 'त्वजा की नीचे की जडों की गंध' आदि उनकी प्रमुख कविताएँ है।

धन्या एम टी ने ‘ नेयतु न्यूतेडूतावा ‘ नामक कविता में श्रमिक दलित जीवन की खूबसूरत चित्र प्रस्तुत किया हैI कवयित्री ने गीतों की धुन के साथ गति की सघनता के बारे में लिखा है l ऐसे समुदाय का चित्र जो मजदूरी करते हैं जिसमें युवा महिलाएं,बच्चे सब शामिल है कविता के जरिए एक ऐसा अनोखा चित्र खींचा है जिसमें पढ़ाई छोड़कर काम करनेवाले बच्चे और सामाजिक भेदभाव शिकायत करने वाले स्त्रियां आदि का चित्रण किया गया हैl धन्या दलित जीवन को करीब से अनुभव करने वाली कवियत्री है l

,

3.8.4 राधामणि. एम.आर

राधामणि जी का जन्म केरल के कोट्टयम जिले के कारापुष्पा में हुआ था l वे केरल सरकार के सिंचाई विभाग से जूनियर सूप्रण्ड के पद से अवकाश प्राप्त हुई l उनकी प्रकाशित काव्यसंकलन है 'वरक्याता कण्णुकल' (काजल न लगी आँखे) दलित स्त्री संघर्ष की अति गहराई से प्रस्तुत करने मैं राधामणि की कविताएँ कामयाब रही है।

3.8.5 इंदुश्री इराविमांगलम

दलित कवयित्री इंदुश्री अपनी कविता में स्त्री पर लगायी गयी सीमाओं और प्रतिबधों की आलोचना करती है l इंदुश्री 'पेन्नालावुकल' नामक कविता में चित्रित करता है कि जीवन की हर अवस्था में वह चाहे बचपन या युवावस्था में हो महिलाओं को बहुत अधिक सामाजिक नियमों का पालन करना पड़ता है। यह कविता यह प्रश्न उठाता है कि ऐसे नियमों का पालन सिर्फ स्त्री को ही क्यों करना पड़ता है l इंदु श्री की कविताएं शिल्पपरी दृष्टि से भी बहुत कामयाब है l

3.9 कन्नड़ दलित कवयित्रीओं की काव्य दृष्टि

कन्नड़ दलित साहित्य में सबसे अधिक क्रन्तिकारी अभिव्यक्ति दलित कविताओं में हुई है l कन्नड़ की दलित कवयित्रीयों की कविताएं सिर्फ साहित्यिक अभिव्यक्तियां ही नहीं है बल्कि दलितों द्वारा सदियों से झेले जा रहे उत्पीड़न और भेदभाव के खिलाफ विद्रोह भी है l उनकी कविताएं बेजुबानों को आवाज देती है और हाशिए पर पड़े समुदायों पर हो रहे अन्याय पर प्रकाश डालती हैं l कन्नड़ काव्यधारा में बसवेशवर, शिशु नाल शेरीफ आदि की प्रेरणा से कन्नड़ की महिला कवयित्रियों को संवेदनात्मक अभिव्यक्ति प्राप्त हुई l कन्नड़ दलित

,

कवयित्रीओं की संख्या कम है फिर भी वे सशक्त रूप से साहित्य के क्षेत्र में अग्रसर हो रही है 1 कन्नड कवयित्रीयों में वी.टि ललिता नायक, सरस्वती, मीना मैसूर, सुकन्या मारुति, एच.एल.पुष्पा आदि प्रसिद्ध है।

3.9.1 बी.टि.ललिता नाईक

बालाजी तंगाली ललिता नाइक एक सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिज्ञ, लेखिका, फिल्म अभिनेत्री है जो कर्नाटक के कन्नड़ संस्कृति और महिला एवं बाल कल्याण विभाग की मंत्री थी 1 नाइक ने एम एल ए के रूप में भी स्थान प्राप्त किया है 1 1991 में उन्होंने कर्नाटक साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता 1 ललिता जी कर्नाटक की बंडाय आंदोलन और गोकक अन्दोलन जैसे महत्वपूर्ण साहित्यिक सामाजिक और भाषा अधिकार आंदोलनों के नेतृत्व में सशक्त रूप से कार्यरत कवयित्री है

बी.टि ललिता नाइक ने एक दलित समुदाय लेब्राणी समुदाय के जीवन संस्कृति के बारे में पहली बार लिखकर कन्नड लोक साहित्य का परिचय कराया। इस समाज की गरीबी, असहायता का शोषण ज़मीन्दार वर्ग किस प्रकार से करते है यही उनकी काव्य का मुख्य विषय था। दलित कवयित्री बी टि ललिता नायक ने दलितों पर हो रहे हर तरह के शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठायी है।

उन्होंने शोषण करनेवाले के प्रति अपने आक्रोश को एकतेय कूगु 'एकता की आवाज़' नामक कविता में इस तरह व्यक्त किया है।

18 "क्षेम इल्ल निम्मी कृप्पक्के
बंदूकर नलिगेयन्नु

,

तागिसुवरों जन निम्न गुडिगोग

उरुलिसुवरो निम्न देहगल

सागरद जलचरगलिगे उग बडिसुवरो

ई नेलद जीविगल तल्लज दुखगिरी

फिरंगी बायल्ली प्रेमगीत तुडिसुवरो।"18

इसका अर्थ है "क्षमा नहीं तुम्हारे इस कृत्य केलिए बंदूक की नली और तानेंगे लोग तुम्हारे सीने पर मारकर गिरा देंगे तुम्हारे शरीर को समुन्दर के जीव जन्तुओं को खिला देगी इस धरती का दुर्दशा मिटा के फिरंगी की जुंबा से प्रेमगीत गवाएंगे"18

ललिता नायक दलित कवयित्री के रूप में दलित व नारी दोनों के दर्द को अपनी कविता में व्यक्त करती है। आज भी हमारा समाज भारतीय रीति रिवाज धर्म व सत्ता की शिकंजे में झगड़ा हुआ है जिससे बचने की राह के रूप में कवयित्री ललिता अपनी रचनाओं का प्रयोग करते है।

3.9.2. सुकन्या मारुती

सुकन्या मारुती कर्नाटक के बेल्लारी जिले का निवासी हैं। जिन्होंने कन्नड़ में एम.ए करने के बाद धारवाड़ में प्रोफेसर के रूप में कार्यरत है। उन्होंने कर्नाटक साहित्य अकादमी कन्नड़ विकास प्राधिकरण के सदस्य के रूप में काम किया है। वह स्वदेशी कलाओं के विकास के लिए संस्कृति संग्राम प्रतिष्ठान की स्थापना जैसे सामाजिक कार्यों में सक्रिय रूप से शामिल रही है। उन्हें अखिल भारतीय दलित साहित्य सम्मेलन मानक पुरस्कार और अंबेडकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

,

सुकन्या मारुति कर्नाटक में दलितों के बीच होनेवाले अंध विश्वास के नाम पर होनेवाले अत्याचार का ज़ोर विरोध अपनी कविता से करती है। दलित समाज को ऐसे बंधन से मुक्त करते हुए शिक्षित होने, संघटित होने तथा संघर्ष करने की आवश्यकता के बारे में वह अपनी कविता के माध्यम से कवयित्री प्रस्तुत करती है। व्यवस्था परिवर्तन इनकी कविता का मुख्य लक्ष्य रहा।

3.9.3 पुष्पा एच. एल

पुष्पा जी के कविताओं में मुख्य रूप से समाज परिवर्तन का आशय ही दिखाई देता हैं ।कवयित्री अपनी कविता में केवल स्त्री के दुख दर्द को वाणी नहीं देती बल्कि उम्मीद के साथ अपने अनुभवों को भी प्रामाणिक रूप से व्यंजीत करती हैं 1

3.10 मराठी दलित कवयित्रियाँ

जब से सावित्री बाई फूले ने उन्नीसवीं शती में जब से शिक्षा अभियान शुरू किया तब से दलित महिलाओं ने लिखना पढ़ना शुरू किया। 1980 के बाद मराठी दलित साहित्य के विकास में महिलाओं का योगदान भी अनगिनत है। बेबी कांबले, कुमुद पावडे, मुक्ता सर्वगोड, शांताबाई कांबले, शांताबाय दाणी, हीराताई बनसोडे, प्रतिभा आहिरे,प्रज्ञा दया पवार ,सुरेखा भगत,ज्योति लांज़ेवर जैसी दलित महिलाओं ने कलम के माध्यम से अपनी आवाज़ उठायी। जिस जाति व्यवस्था ने दलितों के मानव अधिकार से नकारा था उसके प्रति अपना विद्रोह उन्होंने अपनी कविताओं के जरिए प्रतिपादित किया हैं। अपनी रचनाओं से सामाजिक अव्यवस्था, जातीयता के आधार पर किया गया शोषण और अत्याचार से बेहाल समाज का चित्रण किया है।

,

3.10.1 ज्योति लांजेवार

प्रख्यात मराठी दलित कवयित्री व राजनैतिक कार्यकर्ता थी l उन्होंने अनेक पुस्तकों लिखी जिनमें अंबेडकरवादी महिला आन्दोलन के विभिन्न आयाम निखरकर आये है l 'दिशा' ,'शब्दाना दे आभाल', 'आज ची सावित्री' आदि उनकी प्रकाशित कृतियाँ है lमराठी दलित स्त्री लेखन के लिए ज्योति लांजेवाल पहले पंक्ति के रचनाकारों में शामिल हैl ज्योति लांजेवाल वरिष्ठ कवयित्री ही नहीं बल्कि एक प्रमुख समीक्षक भी हैl उनके कई कविता संग्रह प्रकाशित है l दिशा' 'तूफान अभी उठा नहीं आदि' चर्चित कविता संग्रह है और समीक्षात्मक ग्रन्थ 'दलित साहित्य समीक्षा' 'फूले अंबेडकर स्त्री मुक्ति आंदोलन' उनके उल्लेखनीय समीक्षात्मक ग्रन्थ है l

ज्योति लांजेवाल ने अपनी रचनाओं से दलित-नारीवादी पहचान की सक्रिय रूप से वकालत की, जिसने दलित महिलाओं को आन्दोलन के केन्द्र में रखा और परंपरागत इतिहास को मिटाने का प्रयास किया। वह दलित आन्दोलन में महिलाओं की अमूल्य भूमिका को उजागर करते हुए एक नये इतिहास बुनने केलिए अपनी काव्यात्मक स्वतंत्रता का उपयोग करती है। ज्योति लांजेवर की कविता दलित नारीवादी अनुभव को समझकर एक दलित नारीवादी पहचान का निर्माण करती है जो इन दमनकारी सत्ता संरचनाओं का सक्रिय रूप से विरोध करती है और उन्हें चुनौती भी देती है।

ज्योति लांजेवार 'माँ' कविता में डॉ.अम्बेडकर के आन्दोलन का सक्रिय चित्रण है। वह दलित मुक्ति हेतु अंबेड़कर के विचारों पर कार्य करने तथा अपना आत्मसम्मान के खातिर संघर्ष की प्रेरणा देती है।

,

मराठी कवयित्री ज्योति लांजेवाल की कविता 'माँ' दलित स्त्री जीवन के संघर्ष को रेखांकित करने केलिए अनोखे सौन्दर्यशास्त्र का गठन करती है। ज्योति लांजेवार 'माँ' कविता दलित स्त्री के श्रमसाध्य जीवन की वास्तविकता से न केवल रुबरू करती हुई उसके कष्टमय जीवन के हर पहलू को रेखांकित करती है। 'माँ' कविता में ज्योति जी ने एक दलित माँ के अपने बेटे से प्रतीक्षा का चित्रण करती है।

19"पांच पैसे मेरी हथेली पर धरकर कहती
मिठाई लेकर खा, लेकिन स्कूल ज़रूर जाना
पालने में नन्हे को दूध से लगाती
कहती-अम्बेडकर जैसे बनना बेटा
तब ही छुटेगा हाथ का तसला"19

प्रस्तुत कविता धार्मिक आधार पर किए गए काम के बटवारे को यहाँ स्पष्ट होकर हमारे सामने सफलता से प्रस्तुत करती है। श्रमजीवि माँ अनथक श्रम के बाद भी भूख से लडकर, अपने बालकों के सुनहरे भविष्य के सपने देखती है। जीवन के प्रति यही जीजिविषा दलित समुदाय की जीवंतता को दर्शती है।

3.10.2 अनुसूया कांबले

डॉ. अनुसूया काम्बले की उभरती हुई दलित लेखिका है। उनके दो काव्य संग्रह प्रकाशित हुए है। 'मुल्लु कंठिय नदुवे', 'कांठ अंडे की बीच', मत्य गंधीय हाइ 'मत्स गंधी के गीत' आदि। इनकी कविताओं में केवल दलित ही नहीं समाज के उन सभी लोगों के प्रति

,

हमदर्दो है, जो शोषण का शिकार हुए है। वे केवल स्त्री का पक्षधर न बनकर मानवीयता के पक्ष में खडे हो जाते है।

अनुसूया जी की कविताएँ प्रेम श्रृंगार का चित्रण नहीं करती भक्ति की भाव विभोरता में नहीं डूबती। उनकी कविताएँ समाज में सबसे निचले स्थान पर खडे व्यक्ति की दयनीयता एवं परिक्षम का परिचय देती है।

3.10.3 प्रज्ञा पवार

प्रज्ञा पवार की कविताएं बदलते सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था के प्रति सजग है 1 प्रज्ञा पवार ने मराठी दलित स्त्री कविता को एक नया आयाम दिया है 1 वह कविता को केवल नारी के दुख दर्द से बाहर निकलकर पूरी मानवता की ओर सजग करती है 1 प्रज्ञा पवार अपनी कवितावों में आत्माचेतना के विकास के साथ पारम्परिक बिम्ब को तोडती हुई लिखती है 1

20 औरतें भाषा रही हैं/पर हिलते नहीं उनके होंठ/औरतें देख रही हैं
पर आँखों हो चुकी हैं चकमक पत्थर /औरतें सुन रही है
पर परदा पड़ा हैं /समूची तीव्रता पर 20

3.10.4 हीरा बनसोडे

हीरा बनसोडे मराठी के प्रमुख दलित कवयित्री एवं समाज सेविका हैं 1 उनकी 'पूर्णिमा,''फिर याद,'फिनिक्स' आदि उनके कविता संग्रह है 1 भारत की संस्कृति जो वर्ण व्यवस्था के आधार पर गढे सामाजिक व्यवस्था ने स्त्री को कितना बेदखल कर दिया है उसकी अभिव्यक्ति बनसोडे जी की कविता में देख सकते हैं 1 हीरा बनसोडे मानती हैं कि उच्च जाति

,

की महिलाएं समाज में स्थापित है लेकिन दलित महिलाओं को अपनी बुनियादी जरूरत के लिए तक संघर्ष करना पड़ता है1 हीरा ताई बनसोडे दलित स्त्री समस्याओं से युक्त गहन भावनाओं की परिपक्व मराठी दलित साहित्य में दलित आवाज़ शक्तिशाली रूप में कविताएं लिखी और अपनी स्वतंत्र शैली बनाने में भी सक्षम हुई है 1 अपनी कविता में माध्यम से वह व्यक्तिगत अनुभवों को सामूहिक संघर्ष से जोड़ती है और एक शक्तिशाली आख्यान की रचना करती है जो जीवन की सभी क्षेत्रों की पाठकों को प्रभावित करता है 1

इन कवयित्रीओं के साथ औऱ भी बहुत कुछ कवयित्रीयाँ है जिसमें प्रतिभा अहिरे, उषा अंभोरे, कविता मखिण, विमल गादेकर,नंदा तय वाड़े, निर्मला लोढ़े आदि प्रमुख है 1

निष्कर्ष

भारतीय दलित स्त्री कविताएं समाज में स्त्री की स्थिति और उसके अधिकारों को आत्म सम्मान के प्रति जागरूकता का आह्वान करती हैं 1 यह संघर्ष जातिवाद और पितृसत्ता दोनों के खिलाफ है 1 इनकी कविताओं में विद्रोह और आत्मनिर्णय की भावना का प्रबल रूप से दिखाई देती है 1

भारतीय दलित स्त्री कविताएं सिर्फ व्यक्तिगत संघर्ष नहीं बल्कि सामूहिक चेतना और एक जुटता का आह्वान करती है 1 ये कविताएं यह संदेश देती है कि दलित स्त्रियां केवल अपनी स्थिति को सुधारने के लिए नहीं बल्कि दलित समाज के उत्थान के लिए संघर्ष कर रही है 1 मराठी, तेलुगु और तमिल कविताओं मैं दलित स्त्री कविता का स्वर काफी तीखा और आक्रोश भरा है 1 दलित स्त्री कविता मध्यवर्गीय मूल्यों को बदलते हुए समाजव्यवस्था, सौन्दर्य, बाजारवाद, शोषण,मिथक आदि सभी पहलूँ की आलोचना करती है 1 कवयित्रीयों की सोच, सामाजिक वातावरण, व्यवस्था का बदलाव, व्वैयाक्तिक विकास, भाषाई उनमेष,

,

शिक्षा एवं राजनीति का सकारात्मक प्रभाव आदि सब ने भारतीय दलित स्त्री कविता को काफी प्रभावित किया है l पुरे भारतीय दलित स्त्री की समस्याएं काफी हद तक एक समान है इसी कारण दलित स्त्री कविता में समानता भी हैl लेकिन भारत की हर एक राज्य और भाषा समाज की सामाजिक उन्नति और स्थिति अलग है जिसके प्रभाव के कारण दलित स्त्री कविता में बहुत सारी बदलाव भी देखने को मिलता है l भारतीय दलित स्त्री कविता को गहराई और विस्तार से पहचानने केलिए उसकी सामाजिक परिवेश को समझना अवश्यक जिसका अध्ययन अगले अध्याय में विस्तार से करेंगे l

,

सन्दर्भ ग्रंथ

1. विमल थोरात विमल थोरात सूरज बडत्य भारतीय दलित साहित्य का विद्रोही स्वर पृ 58
2. रमणिका गुप्ता - दलित हस्तक्षेप पृ43
3. रजनी तिलक-'स्त्रीमुक्ती की मशाल हो। 'पदचाप कविता संग्रह, पृ.40
4. रजनी तिलक- 'पदचाप' कविता संग्रह, पृ.52
5. रजत रानी मीनू- ' हम कौन हे' पृ 5
6. रजत रानी मीनू - 'आदिवासी' रजतरानी मीनू- 'पिता भी होते है माँ'
7. पूनम तुषामठ - 'चांद मुझे भाए अम्मा' 'माँ मुझे मत दो'
8. पूनम तुषामठ - 'वजूद' 'मां मुझे मत दो'
9. सुशीला टाकभौरे- 'स्वाति बूँद और खरे मोती'- काव्यसंग्रह, पृ.18
10. सुशीला टाकभौरे -'विद्रोहिणी ' तुमने उसे कब पहचाना पृ35
11. कावेरी -'मेरा गांव 'पृ28
12. जूपका सुभद्रा - 'तेलुगु को आवारा बना दिया' पृ63
13. जूपका सुभद्रा- ' नल्ला रगड़ी सल्लू' पृ 6
14. चलापल्ली स्वरूपा रानी - 'मेकन पूव '
15. www.sampsoniaway.org/literary/voices 20/8/09
16 मीना कंडासमी - 'गरिमा 'पृ 31
17. सती अंकमाली - 'तीमारांगल पृ36
18. बी टी ललिता- विदिश मेलो कटियाली, 1997, पृ.38
19. ज्योति लांजेवाल -माँ मेरे हृदय की चट्टान में पृ17
20. प्रज्ञा पवार -'निखरकर आना है ' पृ 28

,

,

अध्याय 4

भारतीय दलित स्त्री कविताओं का सामाजिक स्वर एवं संघर्ष

भूमिका

साहित्य विवेचना में समाजशस्त्रीय पहलू का विशेष महत्व है। समाज के परिवर्तन के साथ साहित्य और साहित्य के परिवर्तन के साथ सामाजशास्त्रीय दृष्टि में भी परिवर्तन आ जाता है। प्रत्येक साहित्यक विधा के अनुरूप समाजशस्त्रीय अध्ययन किया जाता है। साहित्य का समाजशस्त्रीय अध्ययन एक ऐसा शास्त्र है जिससे साहित्य एवं समाज की वास्तविकता की जानकारी मिलती है।

समाज पर साहित्य के व्यापक और गंभीर प्रभाव के कारण उसके अध्ययन का समाजशास्त्रीय महत्व है । इसलिए इस शोध में समाजशास्स्त्रीय अध्ययन की आवश्यकता है । दलित सामाज की दयनीयता और संघर्ष की नीव को पहचानने केलिए उसकी सामाजिक स्थिति और विकास की पहलुओं के समझने की जरुरत है।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री अगस्त कामते ने समाजशास्त्र को 1 'Science of human Association' अर्थात 'मानवीय संबधों का विज्ञान' कहा है।

समाज की धारा परिवर्तन शील है । समय के साथ एक परिवर्तन शील समाज की मूल्यों में स्वाभाविक रूप से बदलाव आता है। सामाजिक बदलाव लाने में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है । साहित्य पर समय और समाज का स्पष्ट प्रभाव होता है। साहित्य का सामाजिक दर्शन दलित चेतना और अनुभूती को प्रभावित करनेवाली गहन संवेदना से ही

,

पूरा होता है। दलित साहित्य की मान्यता है कि साहित्य को सामाजिक दायित्व का निर्वाह करना चाहिए। दलित साहित्य की मान्यता है कि साहित्य को सामाजिक दायित्व का निर्वाह करना चाहिए।

4. साहित्य का समाजशास्त्र

साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन में लेखक और समाज परस्पर पूरक है 1 रचना प्रक्रिया में लेखकों की व्यक्तित्व की छाप साहित्य पर पड़ती है 1 अपने व्यक्तित्व के माध्यम से लेखक समाज को अपना विचार अभिव्यक्त करता है 1 लेखकीय व्यक्तित्व को रुपायित करने में समाज का भी योगदान है 1 2"साहित्य की निर्माण में इस बीच की कड़ी लेखक का व्यक्तित्व का बहुत महत्व है और इसी महत्व की महता इस बात में है कि एक ओर इसका संबंध समाज से है तो दूसरी ओर साहित्य से1 साहित्य की रचना प्रक्रिया में समाज ,लेखक और साहित्य परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करते हे कि इनमें से प्रत्येक क्रमशः परिवर्तित और विकसित होता रहता है - समाज से लेखक ,लेखक से साहित्य और साहित्य से पुनः समाज"12 इससे स्पष्ट है कि साहित्य का समाज शास्त्रीय अध्ययन साहित्य और समाज के जैसे का वैसा चित्रण नहीं उसका क्षेत्र व्यापक है 1

3"साहित्य की विश्लेषण का समाजशास्त्रीय नजरिया साहित्य की व्याख्या को ही अपना मूल कार्य नहीं मानता साहित्य के स्त्रोतों का ही अध्ययनकर्ता है वह न केवल प्रकार का उत्तर देकर नहीं हो जाता कि साहित्य क्या है और वह सहृदय को किस सीमा तक आनंदभिभूत करता है,वरन इन प्रशासी आगे जाकर वह ऐसे सवालों को भी हल करता है किसका सामाजिक क्रिया है,और समूचे मानव परिवेश में उसकी स्थिति कहां पर है" 13

,

दलित समाज की दयनीयता और संघर्ष की नींव को पहचानने केलिए उसकी सामाजिक स्थिति और विकास के पहलुओं को बारिकी से विचार करना आवश्यक है। दलित साहित्य सामाजिक संरचना की तह में जाकर पूरे समाज की न केवल पडताल करता है बल्कि उसमें छुपी हूई विसंगतियों को उजागर कर उसके परिष्कार करने का प्रयत्न करता है। भारतीय सामाजिक संदर्भ में दलित साहित्य वर्ण व्यवस्था का विरोध करके एक समरस समाज की स्थापना करने के साथ साथ मानव गरिमा को स्थापित करना चाहता है। सामाजिक संकिर्णता और विसंगतियों से मानव को मुक्त कराना तथा दलित समाज को समानता और सम्मान दिलाना इस साहित्य का उद्देश्य है। इसलिए इसके लक्ष्य और सरोकर समाज ही है यानि दलित साहित्य का सामाजिक होना स्वाभाविक ही नहीं आवश्यक भी है l

4.1 दलित कविता की समाजशास्त्र

दलित साहित्य की समाजशास्त्रीय अध्ययन के बारे में वरिष्ट लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि का कथन है 4"दलित साहित्य के मूल्याकंन के पूर्व परंपरावादी समीक्षकों को भारतीय समाज व्यवस्था, वर्णव्यवस्था जातिभेद, जातिसंघर्ष, विषमताओं, ब्राह्मणवादि दृष्टिकोण, अन्तर्विशेध,भारतीय मनस्थितियों, और सांस्कृतिक पृष्टभूमियों का विश्लेषण करना होगा। भारतीय राजनीति को समझकर ही साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना होग"4

दलित कविता का मुख्य उदेश्य भारतीय समाज की वर्णों एवं जाति व्यवस्था के खिलाफ प्रतिरोध उत्पन्न करके उसे समाज से मिटाना हैl दलित कविता के सामाजिक स्वर में समाज में दलित के प्रति हो रहे अन्याय, अत्याचार, आदि के अभिव्यक्ति के साथ दलित के सामाजिक परिवर्तन का प्रयास भी हैं l

,

सामाजिक स्तर में भी भारतीय स्त्री का विश्लेषण करना भी बहुत आवश्यक है। भारतीय समाज के जातिसत्ता एवं पितृसत्ता ने स्त्री को सदैव अधिनस्थकी श्रेणी में रखा है।

पितृसत्तात्मक मूल्यों ने स्त्री को समाज में दोयम दर्जे का मानते हुए उसके मानवीय मूल्य एवं अधिकारों का हनन किया है। दलित स्त्री कविता अपने भीतर इन्ही पितृसत्तावादी मूल्यों को तोडकर सामाजिक न्याय,समता और स्वतंत्रता की रचना करता है। दलित कविता का समाजशस्त्रीय अध्ययन में सबसे प्रमुख स्थान उसके समतावादी और मानवतावादी स्वर ही है। क्योंकि समाज वर्ण, जाति एवं धर्म के आधार पर विभाजित है। यह कविता इस भेदभाव को मिटाकर मानव को पहचानता है और समाज दर्शन को स्थापित करता है।

दलित कवियों ने कविता का समाजशस्त्रीय अध्ययन से मानवीय मूल्यों एवं मनोभावों को सामने लाने की कोशिश की है। दलित कविता के सामाजिक स्वर में समाज में दलित के प्रति हो रहे शोषण, अन्याय आदि से अवगत करते हुए एक नये समभाव समाज की स्थापना करने की प्रतिबद्दता है।

दलित लेखक रमेशकुमार सामाजिक परिवर्तन पर दलित साहित्य के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहते है कि 5"दलित साहित्य सामाजिक परिवर्तन का पूर्ण पक्षधर है, सामाजीक परिवर्तन ही दलित साहित्य की पहचान है। अतीत का सच्चा इतिहास, वर्तमान का समभाव,समबोध प्राप्त करने का प्रयास और मानवता की बेहतर संभावनाओं का नाम है। दलित साहित्य"।5

भारतीय समाजव्यवस्था की असमानता पर आधारित जीवन की विसंगतियों एवं विषमताओं के बीच दलित कविता का जन्म हुआ है। इसमें सामाजिक बदलाव तथा जीवन मूल्य भी है। इसलिए दलित कविता की विषयवस्तु स्वानुभूती पर आधारित है। यह कविता

,

दलित स्वत्वबोध का निर्माण में अपना सर्जनात्मक योगदान दे रही है। प्रस्तुत अध्याय में उपयुक्त विचारों को ध्यान में रखते हुए भारतीय दलित स्त्री कविता का समाजशास्त्रीय स्वर को प्रस्तुत किया गया है।

4.2 भारतीय दलित स्त्री कविता की सामाजिकता

दलित कवयित्री अपनी कविताओं में सामाजिक परिवेश का यथार्थ और प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत कर रही है। समाजशास्त्रीय चितंन दलित कविता को महत्वपूर्ण बनाता है। दलित स्त्री कविता में निहित बहुस्तरीय अर्थ की संरचना जटिल होने के साथ साथ बहु आयामी भी है। कवयित्रीयाँ अपनी कविताओं को केवल शव्दों से संपन्न करना नही चाहती बल्कि अपनी और अपने समाज के मुक्तीसंघर्ष का रास्ता बनाना चाहती है। यही कारण है कि भारतीय कविता में दलित स्त्री की उपस्थिती एंव विश्लेषण शोध की नई संभावनाएँ प्रस्तुत करती है। दलित कवयित्रियों के काव्य में सामाजिक बदलाव का आह्वान है। इनकी कविताओं में आक्रोश , गुस्सा ,संवेदना तथा मानवीयता है। दलित कवयित्रियों ने काव्य से केवल आत्मचेतना भर देने का ही काम नही किया बल्कि अपने भीतर की अपार शक्ति को जानने और जागने का प्रयास भी किया है। साथ ही अपने शब्द से अपने समाज को जागृत कराने का महत्वपूर्ण प्रयास अपने कविताओं के जरिए किया है। उनकी कविता में स्पष्टता, प्रखरता एवं स्त्री विषयक तथ्यात्मकता का चित्रण मिलता है।

भारतीय समाज चिंतन के अंतर्गत स्त्री की स्तिथि की विवेचना इसलिए भी प्रासंगिक हैं। क्योंकि सवर्ण वर्चस्व दलित औऱ स्त्री दोनों की अस्मिता पर प्रहार करते हूए अतार्किक अमानवीय व्यवस्था को पैदा करते हैं। इसलिए इसके विरुद्ध आवाज उठाना दलित कवयित्रीयाँ अपना दायित्व मानती है।

,

4.2.1 दलित सामाजिक चेतना

सामाजिक चेतना में सामाजिक मुद्दो की जागरूकता, दुसरे की पीड़ा और समस्या को महसूस करके उनके प्रति सहानुभूति और करुणा प्रकट करना, समाज के सकारात्मक बदलाव के लिए कार्यरत होना आदि शामिल है l दलित सामाजिक चेतना दलितों के एतिहासिक उत्पीड़न, सामाजिक भेदभाव और राजनितिक सशक्तिकरण की जागरूकता है l यह चेतना समानता, सामाजिक न्याय और सम्मान केलिए उनके संघर्ष का एक प्रेरक शक्ति है l भारतीय दलित स्त्री कविताओं में भी यह चेतना भरी पड़ी है l नारी विमर्श को दलित चेतना के परिप्रेक्ष्य में देखने की कोशिश समकालीन दलित कविता में है l

सामाजिक चेतना से ओत प्रोत दलित स्त्री कविताओं की शुरुआत बौद्दकालीन थेरी गाथाएँ और सावित्रिबाई फूले की कविताओं से होती है। दलित चेतना की कविता में आत्मसम्मान की भावना एवं शोषण के विरुध संघर्ष का स्वर है। सावित्रीबाई फूले की कविताएँ स्त्री व दलित चेतना से भरपूर है l उनकी कविता धर्म ,जाति,लिंग भेदभाव की जडों को पहचानकर उन पर प्रहार करती है।

दलित चितंक कंवल भारती ने वर्तमान दलित स्त्री कविता के

बारे मे लिखा है।6“यह वह कविता है, जिसे शेषित, पीडित दलित अपने दर्द को अभिव्यक्त करने केलिए लिखता है यह वह कविता है जिसके दलित कवि अपने जीवन के संघर्ष को उतारता है। यह दमन, अत्याचार, अपमान और शोषण के खिलाफ युद्दगन है”। दलित स्त्री कविता स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व भाव की स्थापना और लोकतंत्र की प्रतिष्ठा करती है। इसलिए इसके समतामूलक और समाजवादी समाज की परिकल्पना है। संक्षेप के

,

दलित कविता जाति और वर्ग विहीन समाज की स्थापना करनेवाली दलितों द्वारा लिखी गयी क्रान्तीकारी कविता है"।6

आज दलित स्त्री स्वयं अपनी लड़ाई लड़ना सीख गई है 1 वह अपनी लेखनी को स्त्री उत्थान तथा समाज हित केलिए प्रयोग करती है 1 'स्त्री' नामक कविता में सुशीला टाकभौरे लिखती है

7 "वह सोचती है / लिखते समय कलम को झुका लें
बोलते समय बात को संभाल ले/
समझने के लिए सबके दृष्टिकोण से देख
क्योंकि वह एक स्त्री है"7
5. सुशीला टाकभौरे - स्त्री

कन्नड की दलित कवयित्रि बी.टी.ललिता नायक ने दलितों पर हो रहे हर तरह के शोषण के विरुद्द आवाज़ उठाई है। उन्होंने शोषण करने वालों के प्रति अपने आक्रोश को एकतेय कूगु (एकता की आवाज़) नामक कविता में इस प्रकार से व्यक्त किया है।

8"क्षेम इल्लत निष्मी कृत्यवके
बंदूकर नालिगेयनु
नागिसुबरो जन निस्म गुडिगोग
उसलि सुबरो निम्न देहगल
सागरद जालचरलिगे उस बडिसुबेरा
ई नेलद जीविगाला तल्लण दुखगिरी
फिरेणी बायल्ली प्रेमगीते नुडिसुबरो"8

,

अर्थात् क्षमा नही तुम्हारे इस कृत्य केलिए बंदुक की नाली तानेंगे लोग तुम्हारे सीने पर मारकर गिरा देंगे 1 तुम्हारे शरीर को समुन्दर के जीव-जंतुओं को खिला देंगे। इस धरती की दुर्दशा मिटाकर फिरेगी की जुबा से प्रेमगीत गवाएँगे। शोषण के प्रति आक्रोश , दलित सामाजिक चेतना प्रस्तुत कविता में झलकती है 1

4.2.2 सामाजिक भेदभाव

दलित नारी सवर्ण समाज के भेदभाव के खिलाफ लडती है। वह अपनी दुनिया खुद बनाना चाहती है। स्त्री सर्वप्रथम स्त्री होने के कारण शोषित होती है 1 उसके साथ दलित होने के कारण उसे स्त्री को दोहरे रूप में शोषण और पीडा को सहना पड़ता है 1 लेकिन आज वह इन पीड़ाओ को चुपचाप सहने को तैयार नहीं है lवह अब प्रतिरोध करने लगी है 1 कभी कभार दलित स्त्री अपने ऊपर होनेवाले सामाजिक भेदभाव को पहचानती तक नहीं 1 इसी कारण से दलित स्त्री कविताएं अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी सामाजिक भेदभाव से जोड़ती है।

डाँ. रजतरानी मीनू 'क्यों हिलता नही पत्ता एक भी' नामक कविता में सवर्ण स्त्री और दलित स्त्री के शारिरिक शोषण पर सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध आवाज़ उठाती हुई लिखती है।

9''हमारे साथ जब होता है बलात्कार
सामूहिक बलात्कार तब क्यों
हिलता नही पत्ता एक भी
और जब तुम्हारे साथ हुआ बलात्कार
तब क्यों हिल गई संसद भी''
रजत रानी मीनू

,

प्रस्तुत कविता में कवयित्री कहती है कि जब कोई दलित स्त्री दुराचार का शिकार होती है तो प्रशासन उस पर कभी ध्यान नहीं देता l भारत के कोई भी महिला आयोग भी इनकेलिए आवाज नहीं उठाता l लेकिन सवर्णों पर हुए अत्याचार पर समूचा शासन तंत्र सक्रिय हो उठता है l इस विवेचन पर कवियत्री ने अपना सख्त प्रतिरोध व्यक्त किया है l

भारत में हर स्त्री की सामाजिक स्थिति अलग है l रजनी तिलक सवर्ण स्त्री और दलित स्त्री में अंतर प्रस्तुत करते हुए उनकी कविता 'औरत औरत में अंतर है 'शीर्षक कविता में बताती है।

10 "एक सतायी जाति है स्त्री होने के कारण
दूसरी सतायी जाति है स्त्री और दलित होने पर

एक तडपती है सम्मान केलिए /

दूसरी तिरस्कृत है भूख और अपमान से" 10

यह कविता बहुत ही सटीक रूप से व्यख्या करती है कि भारत की सामाजिक स्थिति में जाति किस प्रकार से मनुष्य के बीच विभाजन प्रस्तुत करता है l इस कविता में कवयित्री ने समाज में स्त्री जीवन के प्रति सम्मान और अपमान के अंतर को काफी गहाराई से रेखांकित किया है l

सामाजिक वातावरण और सामाजिक भेदभाव के कारण अपने संस्कृति एवं रहन - सहन से दलित किस प्रकार तिरस्कृत होता है इसका चित्रण दलित स्त्री कविताओं में मिलती है l

,

11 “ बाबा! तुम सोचते होंगे क्यों पैदा हुआ ऐसा पुत्र?

पर बाबा! मैं भागा/क्योंकि मुझे मंजूर नहीं

कोई करे मेरा अपमान

अछूत कहकर

माँ ढोए सर पर मैला

घर-घर जाकर

बिना वजह ही

मास्टर जी बरसाएँ मुझ पर डंडे

और दे मुझे गाली मुर्गा बनाकर

मैं भागा नहीं भगाया गया हूँ

गाँव में इतना सताया गया हूँ।"[11]

गांव में दलित पर अन्याय, अत्याचार इस तरह से किए जाते हैं कि उन्हें अपने बचाव के लिए मजबूरी में गाँव छोड़ना पड़ता है। दलित को अपने मान और अपमान का एहसास है। फिर भी उसकी मजबूरी उसे लाचार बना देती है। इसलिए वह विवश होकर अन्याय सहन करता है या वहाँ से पलायन कर जाता है। यहाँ कवयित्री ने दलित के अपमान और उसकी मजबूरी एवं विवशता को वाणी प्रदान किया है। इसमें भी कवियत्री दलित को गांव छोड़कर आधुनिक होने की अम्बेडकर दर्शान की आवश्यकता को महसूस करती है । हिंदी कवयित्री पूनम तुषामट के ‘हमने छोड़ दिया गांव' नामक इस कविता में उन परंपरा का चित्रण करते है जो अभी भी गांव में वर्ण और जाति भेद के रूप में मौजूद है। गांव में कठिन श्रम के बाद भी

,

रोटी नहीं मिल पाती, शहर में प्रगति और विकास का अवसर मिलते हैं1 इसी कारण से दलित को अपने जड़ से निराश या मजबूर होकर गांव छोड़ना पड़ता है1

दलितों पर होने वाले अन्याय पर व्यवस्था कितनी उदासीन है इसका आक्रोश भी दलित कवयित्रियाँ प्रस्तुत करती है। जैसे रजत रानी मीनू अपनी कविता "मरघट से गुजर कर' में लिखती है-

12"तू जिने देख रही है
वे सब जिंदा है पर लाश है
हर पाँच साल बाद
होते है हरे इनके दिन घास की तरह
मरा सिर लगा चकराने,
और दिल घबराने
क्या इतनी संवेदन शून्य हो गई
मेरे देश की व्यवस्था
सब सुधार योजनाएँ हो गई है बांझ
पार्लिमेंड निष्प्राण क्या देश ने
सचमुच पूरी कर ली प्रगति।12

प्रस्तुत कविता दलितों पर होने वाले अन्याय के प्रति समाज की व्यवस्था कितना उदासीन है,इसकी व्याख्या करती है 1 सामाजिक अंतर एवं भेदभाव को भारतीय समाज के जड़ से मिटाने केलिए दलित कविता संघर्षरत है I

,

4.2.3. परंपरा और इतिहास बोध

दलित स्त्री अपनी कविता में केवल स्व की बात ही नही करती बल्कि स्वयं को अपनी पूरी पंरपरा से जोडते हुए अपनी अस्मिता की तलाश भी करती है। युवा कवयित्री सुनिता लिखती है।

13"मेरी माँ और मुझमें थोडा सा फर्क है/
वह कल की औरत और में आज की/
बहुत कुछ बदल गया है।
चुल्हों और बिस्तर की गणित के सिवाय" 13

दलित स्त्री के इतिहास, मुक्ति और उसके संघर्ष को मुख्यधारा में कभी शामिल ही नही किया गया। लेकिन अब मुख्याधारा के इतिहास में अपनी अनुपस्थिति और उपेक्षा पर उसने प्रश्नचिन्ह लगाना शुरू कर दिया है lशोषण के ऐतिहासिक जड़ों को प्रतिरोध करने की आवश्यकता दलित में इतिहास बोध जताता है l यह इतिहास बोध प्रतिरोध की अनूठी छाप कविता में जोड़ देता है l

मलयालम की कवयित्री सती अंकमाली अपनी कविता ' 'न्नान अतीने तिरिचू कोंडू वरूम' (मैं उसे वापस लाऊंगा) नामक कविता में दलित स्वत्व को प्रस्तुत करते हुए इस बात को रेखांकित कर रही है कि वह प्राचीन दलित स्मृतियों को पुनः प्राप्त करके उस शांती को वापस लाएंगे जो दलित पहले अनुभव करते थे l यह एक राजनीतिक सोच है कि दलितों का जीवन टूटा हुआ है l लेकिन कवयित्री साबित करना चाहती हैं कि दलितों का समाज एक बहु जातीय समाज है और उनका जीवन सफलताओं से भरा हुआ हैंl उनमें खुशियां पाने के कई

,

स्रोत है1 सती अंकमाली की कविता दलित जीवन के इस दूसरे पक्ष को अद्वितीय रूप से चित्रित करता हैं 1

14“एक सपना जो पुराने दर्द कों घावों से
पिघला देता है सब कुछ
और पंखो की काले नीले रंग से मिला देता है
सभी कटे हुए लोगों को
एक लक्ष्य पर बांध देता है 14

मलयालम की कवयित्री पी लिसा की कविता ‘उथप’ दलित इतिहास को प्रस्तुत करती हैं 1 कविता समाज के सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ट्भूमि के कई संकेतों के माध्यम से आगे बढ़ती है 1 यह कविता लोकगीत के लय ,छन्द और शौली को अपनाती हैं 1 यहां ँ उन लोगों के इतिहास को प्रस्तुत किया गया है जो धरती से जुड़कर रहते थे 1

भारतीय दलित स्त्री कविता इतिहास में उनके द्वारा अनुभव की गई पीड़ा से उनकी स्थिति को परिभाषित करती हैं 1 यह कविताएं अपने समाज के लोगों की समस्याओं को दर्शाती हैं जिनमें पुरुष भी शामिल है1 इन कविताओं में दमित लोगों की आवाज भी सुनाई देता है 1 इसमें हम सामाजिक लोकतंत्र के लिए जगह बनाने का कठिन प्रयास देख सकते हैं1 भारतीय दलित कवयित्रियाँ यह घोषित करता है कि उनके ईश्वर ,उनके लोग ,उनका इतिहास उनके दुनिया की अवधराणा और संस्कृति अलग है 1 ब्राह्मण्य मूल्य व्यवस्था द्वारा नियंत्रित संस्कृतिक वातावरण के खिलाफ दलित स्त्री कविता आक्रोश प्रकट करती है 1

,

4.2.4 अंबेटकर दर्शन का प्रभाव

अंबेडकरवादी दर्शन से प्रेरित दलित स्त्री कविता स्वाभिमान और आत्मसम्मान की भावना जागृत कर उन्हें मनुष्य के रूप में उपस्थित करना अपना ध्येय मानती है l मानवतावादी अवधारणा पर आधारित अंबेडकर दर्शन का मूल शोषित मानव की मुक्ति है l यह मुक्ति तभी संभव है जब उनमें अपने अस्मिता बोध जागृत हो इसी मकसद से दलित स्त्री कविता रची जाती है l दलित कविता साहित्यिक विशेषताओं की ओर ध्यान न देकर सामाजिक व्यवस्था पर ही अधिक विचार करती हैl इसका आशय मानवतावादी मूल्यांकन ही रहा है l यह मानवतावादी विचार ही दलित साहित्य में अम्बेडकरी विचार है l

हिन्दी दलित कवयित्रि पूनम तुषामठ अपने कविता के प्रेरणा स्तोत्र के रूप में अम्बेडकर को मानती है। डा.अम्बेडकर के प्रति अपनी आस्था और विश्वास व्यक्त करते हुए वे लिखती है।

15"मेरे निगाहों मे उतर आता है
तैरता हुआ नीला रंग
जो उस युगपुरुष के
नीले वस्त्रों से निकलकर
फैल जाता है चारों ओर" 15

अनसूया अनु की प्रसिद्ध कविता 'पीडा जो चीख उठी' डा. अंम्बेडकर का आदर्श वाक्य 'अपना दीपक आप बनो ' का अनुसरण करती है। यह वाक्य स्त्री के संदर्भ में सबसे ज्यादा सही और सार्थक है। आत्मनिर्भरता स्त्री की सबसे बडी आवश्यकता है। इस कविता में अनु ने इसी आत्मनिर्भरता पर ज़ोर दिया है।

,

स्त्री सशक्तीकरण की स्थापना और रक्षा वक्तव्यों से नही की जा सकता l स्वंतत्रता की समझ का जो सपना डा. अम्बेडकर ने देखा था वास्तव में उसी सपने को साकार करने का काम दलित कवयित्रियां कर रही है।

कवयित्री सुशीला टाकभौरे अम्बेडकर को मुक्तिदाता के रूप में देखती है। अम्बेडकर की विचारधारा ने दलित लेखिकाओं को काफी हद तक प्रभावित किया है। सुशीला टाकभौरे की कविता "लौट जाओ तुम' में कवयित्री लिखती है-

16"सदियों से संतान रहा
फूले-अम्बेडकर ने न्याय दिया।
समझे तभी हम समता और सम्मान
जागृत विचार-धाराएँ हमारी
बहने लगी है सही दिशा में, मत समझाओ
गलता दिशा का ज्ञान।" [16]

4.2.5 विद्रोह और आत्मनिर्भरता का आह्वान

दलित स्त्री कविताओं में भोगे हुए सत्य यानी प्रामाणिक सत्य का विश्वसनिय यथार्थ प्राप्त होता है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक बराबरी केलिए संधर्षरत ये दलित कवयित्रीयाँ समाज में हो रहे अन्याय के खिलाफ अपने आक्रोश का पूर्ण स्वर प्रखर कर रही है। दलित रचनाएँ मनोरंचन के साधक नही, बाल्कि प्रतिबद्द एवं परिवर्तन की सृजनशीलता से भरपूर भविष्य के प्रति प्रत्याशा से भरा साहित्य है।

,

रजनी तिलक की कविताओं में पीडा के साथ विरोध और आक्रोश है। उनकी की कविता 'शिक्षा की परचम' मिथकों को तोडती हुई सामाजिक स्थिति को बदलने का संदेश देती है।

17"तू पढ़ महाभारत न बन कुन्ती, न द्रोपदी।
पढ़ रामायण न बन सीता, न कैकेयी।
पढ़ कानून मिटा तिमिर, लगा हलकार
पढ़ समाजशास्त्र, बन सावित्री फहरा
शिक्षा का परचम"।17

कवयित्री इस कविता में अपने समाज को शिक्षा के महत्व को स्वीकार करने केलिए प्रेरित करती है।परंपरागत मिथकों की षडयंत्र को समझकर उसका विरोध करने का आह्वान भी देती है।

तेलुग के प्रसिद्ध लोखिका चल्लापल्ली स्वरूपारानी ने अपनी कविताओं में दलितों के स्वाभिमान को जागने तथा अपनो आप को सुधारने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया है। अपने ही समाज एवं परिवार से अपमानित दलित महिलाओं की संवेदना को कवयित्रि स्वरूपारानी अपनी कविता 'मेकन पूवु' में चित्रित करती हुई कहती है कि-

18"अरे हाँ, अपनी जिन्दगी में मैंने जिया कब
घर के पुरुष अहंकार एक गाल पर थप्पड़ मारता है तो
गली में वर्ण आधिपत्य दुसरे गाल पर चोट करता है"।18

'खाईयाँ' नामक कविता में हिंदी कवयित्री कावेरी पूरी गंभीरता से परिवार, जाति, समाज और धर्म को उन खाईयों के रूप में देखती है जो राष्ट्रिय और अंतराष्ट्रिय स्त्री अस्मिता को विभाजित करती है। वे इस कविता में उस स्त्री के संघर्ष को रेखांकित करती है जो लीक

,

से हटकर अपना स्वंतत्र विकास एवं आत्मनिर्भरता चाहती है l पर परिवार, जाति,समाज और धर्म उसे टुकराते है और उसके मार्ग में बाधक बनकर खडे हो जाते है।

'कैद' कविता में कवयित्री पूनम तुषामड ने स्त्री शोषण के साथ स्त्री सबलता का भी चित्र खींचा है। आज की दलित नारी अपने शोषण का प्रतिकार करती हुईं अपनी मुक्ति का मार्ग खोजने लगी है।

19"और कितनी चुनेगे/तुम दीवारें
मुझे कैद करने
मै सेंध लगा दूँगी/हर दीवार में
बना दूँगी मार्ग/अपनी मुक्ति का। 19

हिन्दी की मशहूर दलित लेखिका सुशीला टाकभौरे ने अपनी कविता में व्यक्त किया है कि आज की चेतनाशील दलित नारी अपनी रक्षा स्वयं करने में सक्ष्म है। 'विद्रोहिणी' नामक प्रस्तुत कविता में स्त्री के आत्मा सम्मान और मानवीय गरिमा का विश्लेषण हुआ है l

20 "में नही बेबस/ न मैं लाचार हूँ।
अपनी रक्षा स्वयं कर सकती हूँ में
समय आने पर तलवार भी बन सकती है" 20

सामाजिक बिंब को प्रस्तुत करते हुए मलयालम कवयित्री विजिला चिरप्पाड अपनी कविता में बताती है कि साम्यवादी इतिहास के बावभूद भी केरल समाज में जातिवाद कितनी गहराई से अंतनिहित है। वह अपनी कविता में एक सच्चे जातिविहीन समाज के सपने को उतारती है। उनकी 'बंजर' नामक कविता इसका उदाहरण है l प्रस्तुत कविता में जाती व्यवस्था किस प्रकार जनतान्त्रिक व्यवस्था को बेकार बनाता है इस पर व्यंग किया गया है l

,

21“बंजर भुमि की चन्द्रिका दीदी

जिन घर में प्रवेश किया जाता है उनके बारे में

केवल पिछले दरवाज़े से

फलैटों का/ जहाँ कोई प्रवेश करता है।

सामने के दरवाज़े से / जिनके बरान्दे की लाइट जला. रही है

बाज़ार से रोज़ लौटते हुए/ मछली और वह दोनों साथ है

वही रास्ता/जो पिछले दरवाज़ों से है

उसी मार्ग से प्रवेश करते हुए/टेलिविषन में सुनते है

15 अगस्त को शपथ को ज़ोर से बोले/

सभी भारतीय मेरे भाई बहन है। “21

समाज के पितृसत्ता और वर्ण व्यवस्था ने स्त्री के योग्यता,पहचान और भूमिका को अपने संदर्भ में परिभाषित किया है कवयित्री रजनी तिलक अपनी कविता में इसकी पहचान करती हैं

22“जब भी योग्यता की बात हुई/

कमतर आँका गया है मुझे

जातिवादी नजरिए से तोला गया है मुझे

में बहिष्कृत हूं सदियों से

अपनी ही जमीन और अपने आप से

ज्ञान और संपदा से वंचित किया गया मुझे

लेकिन अब में जाग चुका हूँ l”22

,

कवयित्री बताती है कि जब भी सामाजिक योग्यता को आंका जाता है दलित स्त्री को कमतर माना जाता है l वह चाहे शिक्षा के स्तर पर हो या सामाजिक व राजनीतिक स्तर पर lजीवन के किसी भी स्तर में स्त्री और दलित होने के कारण उसे जातिवादी प्रतिमानों को भी पार करना पड़ता है l

हिंदी कवयित्री रजत रानी मीनू की कविताएं पितृ सत्तात्मक और जातीय पूर्वाग्रहों से मुक्ति की तलाश करती है 1 'स्कूल के वे दिन' शीर्षक कविता में कवयित्री स्कूल के दिन को याद करते हुए कहती हैं

23" याद है मुझे वे सहेलियां
जो कहती थी / तू चमार तो लगती नहीं/
और मैं सोचती थी/ यह लगाना क्या है"? 23

कवयित्री की स्कूल की स्मृतियों ही यहां प्रमुख है l यहाँ 'लगना' शब्द उसके कलेजे को उतना चोट नहीं कर देता है जितना जितना चमार होते हुए। सामाजिक व्यवस्था में कोई इस तरह की मानसिकता रखे यह बहुत ही अपमानित कर देता है l यह 'लगना' शब्द जाति संबंधी हमारी सामाजिक वास्तविकता और जाति संबंधी सामाजिक पूर्वाग्रहों को हमारे सामने प्रस्तुत करता हैं साथ ही तीक्ष्ण तीरों की तरह सीधे हमारे जातिगत समाज के मर्म पर प्रहार करता है l

नये सामाजिक मूल्यों की स्थापना करना भी आज दलित कवयात्रियों का मुख्य कर्तव्य है। इसी सिद्धात को अपनाते हुए आज दलित साहित्य परम्परागत समाजिक दायरे के विरोध में आवाज़ उठाते हुए उसके प्रति गुस्सा प्रकट करते है। इस संदर्भ में दलित कविता का पक्ष परंपरागत साहित्यक पक्ष से अलग है । दलित स्त्री कविता वास्तविक जीवन स्थिति से

,

संबन्ध रखती है 1 प्रसिद्ध दलित लेखिका विमला थोरात के अनुसार 24 'दलित कविता दलित जीवन के यथार्थ की कविता है, उसने दलित कविता के हर क्षण, हर एक वेदना और क्राति संवेदना का साकार किया है। दलित कवि के सामने भावावेश में बहने के अनेक अवसर थे, क्योंकि उन्होंने जीवन की बडी घिन्नौनी तस्वीर देखी है। परन्तु उसकी कविता जीवन वस्तुगत यथार्थ को मूलाधार मानती है'124

भारतीय समाज में व्यक्ति को जाति व्यवस्था के तहत ही परिभाषित किया जाता है। जाति प्रधान व्यवस्था होने के कारण यहाँ पर अधिकार, सत्ता तथा सभी प्रकार के सामाजिक संस्थाओं पर उच्च जाति के लोगों का ही हक है 1 उच्च जाति में जन्म लेने के कारण सालों से जाति के विशेषधिकार को स्वीकार करके सवर्णों ने सारी सम्पति पर अपना हक़ जमाया है 1 दलित आज के इस आधुनिक युग में भी पशु के समान जीवन बिता रहा है 1 इन्ही कटु यथार्थ को भारतीय दलित कवयित्रीयों ने खुलकर सामने रखने का प्रयास किया है 1

4.2.6 स्वत्व की पहचान

भारतीय दलित स्त्री कविता सामाजिक बदलाव और जीवन मूल्यों का पक्षधर है1 दलित कविता दलित के भीतर रूपायित नये इतिहास को दर्शती है 1 अब दलित कवयित्रीयाँ पूरी ताकत के साथ अपनी पहचान बना रही है। वह मोमबत्ती के समान जलना नही बल्कि जंगल के आग बनकर पूरी ऊर्जा के साथ धधकना चाहती है 1 सुशीला टाकभौरे की कविता 'आग की दरिया' दलित स्त्री के इस नये चेहरे को प्रस्तुत करती है।

25"गल चुकी। बहुत मोमबत्तियाँ
आज वह जंगल का आग है।
बुझाये न बुझेगी।

,

बन जायेगी आग कि दरिया।

उसके नये तेवर पहचानो।25

दलित स्त्री स्वत्व के सम्बन्ध में विमल थोरात का मानना है कि 26 " दलित स्त्री साहित्य उस विद्रोह का उनमेष है जो किसी विशिष्ट जाति या व्यक्ति के विरुद्ध नहीं बल्कि स्व के खोज में निकले हुए एक पुरे समाज की पूर्व परंपराओं से विद्रोह है एवं अपने अस्तित्व की स्थापना का प्रयास है l26

आज की दलित नारी स्वतत्रता, समानता और स्वाभिमान के प्रकाश में अपने नवीन व्यक्तित्व से साक्षात्कार करना चाहती है। अत्याचार और अपमान से भरे इतिहास को अब वह दोहराना नही चाहती बल्कि एक नया भविष्य को आत्मविश्वास के साथ रचना चाहती है। सुशीला टाकभोरे 'उगते अंकुर की तरह जीओ' कविता में दलित स्त्री अपने इस नये रूप को दर्ज करती है।

27"सुविधाओ से समझौता करके

कभी न सर झुकाओ /अपना ही हक

नयी पहचान बनाओ / धरती पर पग रखने से पहले

अपनी धरती बनाओ"। 27

नारी स्वत्व भावना को दलित चेतना के परिप्रेक्ष्य में देखने की कोशिश समकालीन दलित कविता में है l मराठी कवयित्री प्रतिभा आहिरे की कविता 'हे दोस्त' इसका पक्का प्रमाण है l

28 "मैं नहीं मानती हूं खुद को अर्धांगिन

मैं सिर्फ एक शारीर नहीं हूं

,

तुम मुझे अर्धांगिनी कह कर मेरा अपमान मत कर

मैं हूं एक संपूर्ण शरीर स्वतंत्र मस्तिष्क

मेरे कंधों पर मस्तिष्क का सदुपयोग जाननेवाली एक व्यक्ति हूं

एक इंडिविजुअल' 28

दलित कविता में स्त्री अस्मिता का स्वर आज भी कम है। क्योंकि कि अभी तक बहुत ही कम दलित कवयित्रियों ने अपनी अस्तित्व प्राप्त किया है। भारतीय दलित साहित्य मंच ने दलित कविताओं का एक संग्रह 'पीडा जो चीख उठी' नाम से प्रकाशित किया था। उसमें एकमात्र स्त्री स्वर अनुसूया अनु का था l उसमें शामिल केवल एक कविता 'तू बन जा दीपक' शामिल की थी। जो यह साबित करती है कि दलित कवयित्रियों को अपना रचना संसार और अधिक विस्तृत करना है l समाज में दलित स्त्री स्वत्व को जागाने की प्रेरणा देना है l

29"तू बन जा दीपक अपना आप

संकल्प प्रबल जीवन की धास निर्भर

संताप। भर लो इतना तेल दीप में

घटे न लौ का ताप"।29

यहाँ तेल और दीप आत्मविश्वास और जीवन के अर्थ का सार्थक प्रतीक है। पूरी कविता भाषा और शिल्प की दृष्टि से अत्यंत सुन्दर है l नए मात्रा और लय की कसौटी पर अपना प्रभाव भी डालती है। दलित कवयित्रियों की कविताएँ समाज और समाजवाद की पाखंड पर तीखा असर करती हैI मलयालम कवयित्री बिंसी मरिया कि 'न्जान यानि 'मैं' नामक कविता मैं बताती है '

,

30“नी पतिचू नलकियां अरुतुकल वलिचेरिंजू/

नी कानीचु तन्ना वेलुता आकाशवूम उपेक्षिचू/

इंनीले एन्ने कंडेतुवानायीं ओरु यात्रा पोवाणाम” 30

अर्थात् यहाँ स्त्री पुरुष से कहती है कि

तुम्हारे दिए हुए निषेध को फेंक कर

तुमने मुझे जो सफ़ेद आकाश दिखाया

उसे छोड़कर मुझमें मुझे खोजने केलिए/मुझे एक यात्रा करना है बिंसी मरिया की इस कविता में स्त्री के आत्मसम्मान और व्यक्तित्व के खोज का सामूहिक प्रयास है l यह कविता पुरुष सत्ता को चुनौती देती है और उसे अस्वीकार भी करती है l

4.2.7 दलित स्त्री की राजनीतिकरण

दलित सामाजिकता पहचानने केलिए उनकी राजनीतिकरण की चर्चा करते वक्त दलित राजनीतिक नेताओं ने उनके स्त्रीत्व को नज़र अंदाज़ करके दलित पहचान को बरकरार रखा है l इसी वजह से दलित नारी दलित राजनीती का प्रत्यक्ष हिस्सा नही बन पायी l

प्रसिद्ध नारीवादी शर्मिला रेगे दलित नारीवादी राजनीती के बारे बताते हूए कहती है कि वह 31“सामान्य नारीवादी संगठनों का महत्व को नहीं नकारती लेकिन दलित स्त्रियों के प्रश्न पर दलित स्त्री संगठन होना आवश्यक मानती है” मुख्यधारा नारीवादी दृष्टिकोण से दलित नारीवाद के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आ गया है l नारीवाद के परिप्रेष्य में भूमि के अधिकार, सम्मान के साथ जीवन की सुरक्षा, प्रतिरोध, आन्दोलन की स्वतत्रता, शारिरिक आक्रमण के खिलाफ खडे होना आदि नई परिभाषाएँ और संकल्प जोड़ा गया है। दलित स्त्री राजनीतीकरण सामाजिक विकास केलिए महत्वपूर्ण है।

,

दलित स्त्री की राजनीतीकरण में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है 1 सावित्री बाई फुले के संघर्ष ने स्त्री मुक्ति और दलित स्त्री शिक्षा की प्रेरणा दी है इसलिए हिंदी कवयित्री रजनी तिलक की कविता 'स्त्री मुक्ति की मशाल हो' में उनके प्रति श्रद्धा और आभार प्रकट करते हुए लिखती है -

32"सावित्री बाई फूले / तुम्हारे जीवन एक कसौटी
तुम्ही पहली शिक्षिका / बनी स्त्री मुक्ति की लौ
आभाव और कष्टों में रहकर "32

मलयालम कवयित्री सती अंकमाली की 'पेंसिल' नामक कविता दलित समाज के परिवर्तन को प्रस्तुत करके उनकी संभावनाओं को उकेरता है 1 'पेंसिल' दलित स्त्री की राजनीतिक विचार और अभिव्यक्ति के अस्तित्व को चिन्हित करते हुए उनकी राजनीतीकरण को प्रयुक्त करता है 1

4.2.8 अपमान और वेदना

दलित कवयित्रीयाँ अपनी कविताओं में जाति से उत्पन्न कड़वी एवं वेदनाजन्य अनुभवों को गहराई से उकेरती है 1 दलित में अधिकांश काले रंग के हैं 1 इस काले रंग के कारण उन्हें कई अपमान भी सहना पड़ता है 1 स्कूल और कॉलेज में अध्यापक और साथी लोग उन्हें अपने जाति या रंग के नाम से पुकारते हैं lयहाँ दलित कवयित्री रजत रानी मीनू कहती है कि काले रंग के होने के कारण उन्हें कई पीड़ायें सहनी पड़ी 1 उनके अनुसार एक काली औरत को बचपन से लेकर मृत्यु तक अपने देश में जाति और रंग के कारण अपमानित होना पडता है 1 कविता में जिस रंग भेद की अपमान की वेदना को खोलकर दिखाया है उस

,

पर किसी गोरे का ध्यान कभी नहीं पड़ेगा l यह कविता कवयित्री की आप बीती अनुभव का काव्यात्मक अभिव्यक्ति हैl

33"मेरा रंग/ बन गया पीड़ादायक/

जब बचपन में /अपनों ने कराया था मेरा परिचय मेरे रंग से l 33

मलयालम कवियत्री बिनसी मरिया अपनी कविता 'करुत्तवल' (काली लड़की) नामक कविता में स्पष्ट करती है कि किस प्रकार से काली लड़कियाँ समाज में लड़कों द्वारा अपमानित एवं ठुकराई जाता है l केवल काले रंग के कारण उसे पारिवारिक जीवन में कई प्रकार के शोषण छेलना पड़ता है l उन्होंने इस कविता में यह भी प्रस्तुत किया है कि मुख्यधारा समाज से ये काली दलित लड़कियाँ किस प्रकार से अलग थलग होती है l

मलयालम दलित कवयित्री विजिला चिरप्पड़ की 'उड़लुगल'नामक कविता दलित स्त्री जीवन के यथार्थ को समाज के सामने खुलकर रखती हैं l घड़ी धूप में पसीने से भीगी काली स्याही जैसे लड़की का पतला शरीर,दलित जीवन अनुभव को बहुत दर्दनाक रूप से प्रस्तुत करती है l यह कविता व्यंग्यात्मक रूप से मध्यवर्ती दलित काली महिला के जीवन के यथार्थवादी रूप को दर्शाते हैं l दलित स्त्री जीवन की व्यतिरिक्त जीवन को परिवेश को भी प्रस्तुत करना इस कविता का लक्ष्य है l

4.2.9 प्रतिरोध की नयी तीव्रता (शरीर की राजनीती)

आज दलित महिला अपने आप को पहचानने लगी है l आज उसमें जीवन को नष्ट करनेवाली सारी सामाजिक व्यवस्था को नकार करने की क्षमता है l रजत रानी मीनू कहती है कि अब वह और नहीं सह सकती l कवयित्री कहती है कि हमारे साथ जो अत्याचर हुआ है इसके विरुद्ध लड़ने की रूपरेखा वह स्वयं तैयार करेंगी l

,

34“ में सह नही पा सकती हूँ/अन्याय अपने साथ /

घुटती हूँ मन ही मन/ बनाती हूँ रूपरेखा/ “

अन्याय से बचाव की “34

दलित स्त्री कविता में स्त्री शरीर को पारंपरिक सौंदर्य संबंधी विचारों से परे शक्ति और प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में देखती है l जब दलित महिला के शरीर को सस्ते में प्राप्त यौन शरीर के रूप में देखा जाता है तो उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है l इस प्रकार शरीर की भाषा की राजनीति हर निहितार्थ के साथ हर बंधन की तोड़फोड़ की भाषा है l

तमिल कवयित्री सुकृतिरानी कविता पाठकों को आनंदित करने और कवित्व प्रकट करने केलिए नहीं लिखती l उनकी कविताओं के हर शब्द पाठक की अंतरात्मा को जलाता है l सत्ता और प्रभुत्व के द्वारा हाशिये पर धकेलने वाले लोगों के स्थान और जीवन उनकी कविताओं में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है l उनकी कविताओं में शरीर की राजनीती की कई परतें देख सकती है l वह शरीर को एक राजनितिक स्थान और हाथियार के रूप में देखती है l दलित कवयित्रियों के लिए शरीर ऐसे एक हस्तक्षेप का स्थल और इतिहास है जो सत्ता और उत्पीड़न के अधीन है l सुकृतिरानी की ‘योनि की शक्ति ‘ नामक कविता इस प्रकार के शरीर की राजनीति को स्पष्ट करती है -

35 “जब कहीं लाखों वर्ष के बाद विकास होगा

तो आपके लिंग बेकार हो जाएंगे,और

उस समय आपकी आने वाली पीढ़ियां

हमारी योनि की शक्ति को समझेगी “35

,

दलित स्त्री कविता और साहित्य के सबसे मजबूत आवाज में से एक है सुकृति रानी 1 उनकी द्वारा लिखी गई तमिल कविता है 'येन उड़ल'(मेरा शरीर) बहुत कम उम्र में ही जाति आधारित हिंसा और शोषण को सामना करने वाली सुकृति रानी की कविता दलित महिला द्वारा झेले जाने वाले पीढीगत आघात को दर्शाता है 1 वह इसमें दलित महिला के संघर्ष और शरीर की राजनीति को केंद्र बनाती हैं 1 दलित स्त्री के शरीर पर केवल पुरुषों द्वारा ही नहीं बल्कि जातिगत समाज के सभी लोगों द्वारा लगातार अत्याचार किया जाता है 1 उसे हमेशा अशुद्ध ,गंदा और अश्लील रूप से अधीन माना जाता है 1 इस कविता में कवयित्री अपने उत्पीड़न को मुक्तिदायक शब्दावली में बदल देती है1 वह अपने कविता के बिंदुओं के जरिए शरीर को जाति के संरक्षण से मुक्त करती हैं 1 साथ ही महिला शरीर को एक स्वाभाविक श्रमिक शरीर के रूप में प्रस्तुत करती है1

मलयालम कवयित्री सुनीता तोपिल की 'मैयकाटुकारी' नामक कविता में आत्माजागरुक स्त्री को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है 1 यह भारतीय सामाजिक व्यवस्था के प्रति अलग तरह की प्रतिक्रिया है जो महिला शरीर और श्रम को एक सस्ती वस्तु के रूप में मानती है1 इस कविता में आप बताती हैं कि जाति और लिंग दलित एवं स्त्री के लिए कितना भयानक है 1 वह खुद को एक ऐसी महिला के रूप में परिभाषित करती हैं जो भेदभाव और जातिवाद की दुनिया की सामना करने के लिए बहुत मजबूत है 1 उनकी कविता आत्मसम्मान के साथ जीने की तरीके को बदलती है 1

तमिल कवयित्री मीना कंडास्वामी भी अपनी कविताओं में स्त्री की कामुकता और वेश्यावृत्ति के बारे में लिखती है 1 दलित जाति की महिलाएं कभी अपनी गरीबी के कारण वेश्या बनने के लिए मजबूर हो जाती है1 उच्च जाति के पुरुषों का मानना है कि निचली जाती

,

की महिलाएं उनकी यौन इच्छाओं को पूरा करने के लिए ही बनी है 1 'मस्कारा' नामक कविता में उन्होंने बहुत ही विडम्बनापूर्ण ढंग से इसका वर्णन किया है और प्रतिशोधी महिला शरीर के प्रतीक का उपयोग किया। है 1 जिसमें महिला की पितृसत्तात्मक अधीनता के खिलाफ अवज्ञा और टकराव प्रतिबिंबित है 1

36"The last thing she does/

before she get ready to die/

Once more of violation she applies the mascara" 36

36 मीना कांदास्वामी मस्कारा

यानि मरने केलिए तैयार होने से पहले वह आख़िरी बार काजल लगाती है 1 दलित स्त्री जातिवादी भारतीय समाज से प्रतिरोध के लिए अपने शरीर को ही हथियार बनाती हैं 1 दलित कवयित्रियां अपनी कविताओं में शारीरिक उत्पीड़न के प्रत्येक अनुभव को उसकी भौतिकता में बदल देती है।

शरीर की राजनीति के बारे में लिखना महिलाओं के लिए एक पृथक अनुभूति नहीं बल्कि स्त्री अनुभव के असंख्य संभावनाओं को समाहित करता है 1

4.2.10 शिक्षा और सत्ता ग्रहण

भारतीय दलित स्त्री कविता समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करती है 1 शिक्षा को दलित समाज के उन्नति केलिए सबसे बड़ा हथियार मानता है। स्त्री समाज को शिक्षा प्राप्त करने के रास्ते में बाधक बनने वाले जातिवादी वातावरण और इसकी क्रूरताओं का जिक्र

,

इनकी कविताओं में होती है l दलित कविता का आंदोलन चेतना के स्तर पर गहराई से जुड़ा है जिसके जड़ में सदियों का अन्याय,अत्याचार और शोषण का इतिहास है।

शिक्षा को ही दलित कवयित्री समाज की उन्नति का मार्ग मानती है। हिंदी कवियत्री पूनम तुषामठ की कविता इसका उदाहरण है l

37"माँ मुझे मत दो
मुझको पढना आगे बढना
खुद को नये साँचे में गढना
और सबको है जगाना
सबको उनका हक दिलाना
माँग कर खाने की आदत
और नसीहत
माँ मुझे मत दो"37

शिक्षा एक ऐसी शक्ती है जिसे पाकर मनुष्य अपने अधिकारों के प्रति जागृत होता है। शिक्षा दलित स्त्री को अपनी अस्मिता केलिए विद्रोह करने की प्रेरणा देता है l दलित स्त्री अपनी यातनापूर्ण स्थिति को पहचानकर शिक्षा के जरिए आगे बढकर समाज में अपना स्थान प्राप्त करने की कोशिश करती है l

मराठी कवयित्री ज्योति लांजेवाल की ‘माँ' कविता दलित स्त्री के श्रमसाध्य जीवन की वास्तविकता से न केवल रुबरू करती है बल्कि उसके कष्टमय जीवन के हर पहलू को रेखांकित भी करती है। 'माँ’ कविता में ज्योति जी ने एक दलित माँ के अपने बेटे की शिक्षा

,

के प्रति प्रतिक्षा के बारे में लिखा है l इसमें यह भी दिखाया गया है कि एक माँ किस प्रकार पूरी प्रतिक्षा अपने बेटे के शिक्षा पर निर्भर रखती है l

38 "पांच पैसे मेरी हथेली पर धरकर कहती
मिठाई लेकर खा, लेकिन स्कूल ज़रूर जाना
पालने में नन्हे को दूध से लगाती
कहती-अम्बेडकर जैसे बनना बेटा
तब ही छुटेगा हाथ का तसला" 38

प्रस्तुत कविता में कवयित्री दलित शोषण से मुक्ति के लिए शिक्षा पर उम्मीद और अम्बेडकर दर्शन पर अटल विश्वास को प्रकट करती है l

4.2.11 दलित नारीवाद का अलग प्रभाव

दलित नारीवाद दलित स्त्री द्वारा अपने स्थिति को अलग से रेखांकित किये जाने के बाद उभरा है l दलित नारीवादी कविता जाति व्यवस्था और पहचान के संकट के सामूहिक चेतना को दर्शाता हैl यह दलित स्त्री का हाशिए पर होने का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है l हिंदी की प्रमुख कवयित्री रजनी तिलक ने अपनी कविता में मुख्य धारा नारीवाद और दलित नारीवाद के अंतर को प्रस्तुत किया हैl उनकी 'फर्क नामक कविता में नारीवादी आंदोलन के दो भेद का चित्रण किया हैं l सवर्णों वर्ग के स्त्रियों का नारीवाद और उनके आंदोलन का लक्ष्य अलग हैl दलित अभाव ग्रस्त स्त्रियाँ समाज से अपनी लड़ाई स्वयं लड़ना चाहती है l इस स्थिति को स्पष्ट करते हुए उनकी कविता 'हवा सी बेचैन युवतियां' नामक कविता में वे कहती है -

,

39“तुम्हारे मेरे बीच जमीन आसमान का फर्क है /
तुम लड़ती हो अपनी पहचान के लिए /
लड़ती हूं मैं स्वाभिमान के लिए भी/
मेरा तमाम दर्द पीठ को चीरकर/
सिसकता है मौन आंखों के कोर में
/ तुम्हारा दर्द छुपता नहीं लिपस्टिक लगी मुस्कान में/
तुम्हारे मेरे संघर्ष में बुनियादी फर्क है” 39

प्रमुख दलित आलोचक गोपाल गुरु दलित महिलाओं के सामाजिक प्रतिनिधित्व के महत्व के बारे में बताते हैं कि 40“क्योंकि यह अन्य उच्च जाति के महिलाओं के विपरीत एक नए संघर्ष का सामना कर रही है, उनके पास आंतरिक और बाहरी दोनों कारक है दलित महिलाएं बाहरी कारक यानि दलित महिलाओं के मुद्दों को एक रुप बनाने वाली गैर दलितों की ताकत है और आंतरिक कारक है दलितों के भीतर पितृ सत्तात्मक वर्चस्व के आधार पर अलग-अलग बात करने के मामले को सही ठहराते हैं”40

स्त्री विमर्श और स्त्री संघर्ष में हम सामाजिक भेदभाव को स्पष्ट रूप से देख सकते हैंl सवर्ण स्त्री का संघर्ष केवल उनके सम्मान से संबंधित है लेकिन दलित स्त्री का संघर्ष उनके अपमान, आत्मसम्मान एवं स्वाभिमान से संबंधित है l इसी कारण से रजनी तिलक अपनी कविताओं में मुख्य धारा स्त्रीवाद का विरोध करते हुए लिखती हैं

41“मेरी बस्तियां अथाह गंदगी में है बुझे हुए माहौल में
चुराई छुपाई बिजली के नंगे तार है/
तुम्हारा बहनपा किस काम का /

,

जिसमें मेरा दुख शामिल नहीं है

तुम्हारी स्त्री मुक्ति की लड़ाई किस काम की

जिसमें मेरी लड़ाई शामिल नहीं "41

प्रख्यात अंबेडकरवादी मराठी लेखक डॉ .यशवंत मनोहर जी दलित नारीवाद के बारे में बताते हैं 42"अंबेडकरवादी फेमिनिज्म का पुरुष से विरोध नहीं है। उसकी लड़ाई पुरुष अहंकार से है उसके अंदर की वर्चस भावना से हैं । खुद को विशेष समझने वाले स्त्रियों को दोयमत्व देने वाले अमानवी पुरुष मानसशास्त्र से उसकी लड़ाई है। स्त्री किसी के गुलाम नहीं होगी। वह स्वतंत्र, समंजस, बुद्धि वादी और संपूर्ण मानव होगी ,वह स्त्री के पूर्णांक के संपूर्ण प्रस्थापना होगी, ऐसे आंबेडकर फेमिनिज्म का कहना है। जिस दुनिया में स्त्री का कोई मालिक नहीं होगा और स्त्री किसी की गुलाम नहीं होगी ऐसे तीसरी दुनिया का निर्माण करना अंबेडकर फेमिनिज्म का उद्देश्य है।" 42 दलित कवयित्रियां अपनी रचनाओं से यह स्थापित करती है कि मुख्यधारा नारीवाद दलित स्त्री समस्याओं को सामाजिक प्रतिनिधित्व देने के सक्षम नहीं है ।

4.2.12 अस्पृश्यता और अंधविश्वास का विरोध

अस्पृश्यता भारतीय समाज के अचेतन स्थिति का एक उदाहरण है । आधुनिक सामाजिक जीवन शैली को अपनाते हुए आज के दलित कवयित्रियां भी अपनी रचनाओं के जरिए प्रस्तुत समाज के अंधविश्वास और अस्पृश्यता को दूर करने के पक्ष में रहकर रचनाएँ कर रही है । इसी कारण इनकी रचनाओं में दलित समाज के विभिन्न दृष्टिकोण का जिक्र है। स्त्री कविता में दलित समाज की प्रगति के विरोध में रहे हिंदू संप्रदाय के अंधविश्वास एवं अनाचार का भी विरोध है ।

,

अस्पृश्यता के नाम पर गुलाम बनाने वाली भारतीय व्यवस्था पर आक्रोश करते हुए दलित कवयित्रियां कविता प्रस्तुत कर रही है l मीना कांडास्वामी ने अपनी कविता टच (स्पर्श) में भारतीय सामाजिक व्यवस्था के कुरूप चेहरा 'अस्पृश्यता' का गहराई से चित्रण किया है l यह कविता जातिगत भेदभाव और शारीरिक संपर्क से जुड़ी सामाजिक वर्जना ,विशेष रूप से भारत में विभिन्न जातियों के बीच के विषय का पड़ताल करता है

43"But you will never have known
that touch the taboo
to your transcendence,
when crystallized in caste
was a paraphernalia of
undeserving hate

तमिल कवयित्री मीना कंडास्वामी अपनी कविता टच (स्पर्श) में कवयित्री कहती है कि स्पर्श वह प्राथमिक अनुभूति है जो व्यक्ति को अपने आपसे और साथ ही इस दुनिया के सम्बन्ध से जोड़े रखता है l स्पर्श का सार अलग लोगों केलिए अलग तरीके से है l उच्च जाति के लोगों केलिए स्पर्श आनंद दायक है लेकिन अछूतों केलिए वही स्पर्श वर्जित है l उनका अपना स्पर्श भी उनकी अस्पर्शता से परे नहीं है l उच्च जाति केलिए स्पर्श का अर्थ है 'सम्बन्ध' जबकि निचली जाति केलिए स्पर्श का अर्थ 'अस्वीकृति' है l

'ईश्वर की विरोध' कविता में हिंदी कवयित्री पूनम तुषामठ ने बताया है कि धर्म के नाम पर ही छुआछूत और भेदभाव के साथ दलितों पर अन्याय अत्याचार किया जाते हैं l

,

वह आगे कहती है ईश्वर के नाम पर चंदा देने का कोई लाभ नहीं होता इसके बदले में हमें अपने बच्चों की जरूरत और खुशियों को पूरा करना चाहिए।

44“इससे तो अच्छा था/ तुम्हारा नाम का चढ़ावा
वह अपने बच्चों को खिला देता
ना देता तुम्हारे नाम पर चंदा
अपनी नन्ही बेटी को / खिलौने दिला देते 44

भारतीय दलित स्त्री कविता पारंपरिक भारतीय जाति व्यवस्था और उसके द्वारा पोषित पूर्वाग्रहों की आलोचना करती है और हाशिए पर पड़े समुदाय पर अस्पृश्यता के अमानवीय प्रभाव को उजागर करती है।

4.1.13 संघर्ष केलिए प्रेरणा

सामाजिक तौर पर दलित नारी में जो पिछड़ापन, और आत्मविश्वास हीनता है। इसको समझते और पहचानते हुए दलित कवयित्रियों ने उनको मुख्य विषय बनाकर कविताएँ प्रस्तुत किया है।

दलित स्त्री कविताएं संघर्ष के लिए प्रेरणा देने वाली है। संघर्ष से ही समाज में परिवर्तन आ सकता है। दलितों के इतिहास में संघर्ष हमेश केंद्र में रहा है। दलित कवयित्रियां अपने महत्व को पहचानकर संघर्ष करने केलिए आह्वान दे रही है। सुशीला टाकबोरे अपनी कविता में दलित स्त्री से अपने महत्व को पहचाने केलिए प्रेरित करती है।

,

45“अब मैं शर्मिंदा नहीं होती /

क्योंकि मुझे लगने लगा है /

मैं भी / मील का एक पत्थर हूँ/

जो टोकरी ही नहीं /

पहाड़ो से भी अधिक महत्व रखता है l”45

मराठी कवयित्री हीरा बनसोडे की ‘फरियाद’ नामक कविता दलितों को गुलाम बनकर जीने के विरुद्ध ऐलान करती हुई प्रेरणा देती है l

46 ‘अपमान की भीख झोली में डालनेवाले

अभद्र भूतकाल को

बारूद से भर दे/लगाए आग जलते वर्तमान को

जल जाने दो शतकों से दासता स्वीकार करनेवाले

लाचार थके हुए मनों को’46

भारतीय दलित स्त्री कविताएं स्त्री को आत्मा सशक्तिकरण और किसी भी प्रकार के उत्पीड़न का प्रतिरोध करने करने के लिए प्रेरित करता हैl

4.2.13. जीवन यथार्थ का प्रस्तुतीकरण

दलित कविता यथार्थ का चित्रण करती है। दलित कविता में रंजकता नहीं होती है बल्कि कड़वे यथार्थ का गहराई से चित्रण होता है l

रजनी अनुरागी अपनी "हमारी कविता' में लिखती है

47"तुम कल्पना पर होकर सवार

लिखते हो कविता

,

और हमारी कविता

रोटी बनाते समय जल जाती है अक्सर

कपडे धोते हुए

पानी में बह जाती कितनी ही बार

झाडू लगाने हुए साफ हो जाती है मन से

पौछा लगाने हुए गँदले पानी में निचुड जाती है।"[47]

प्रस्तुत कविता में कवयित्री दलित कवयित्रियों के रचना संसार के संघर्ष को चित्रित करती है, जो सवर्णों कवयित्रीओं के काल्पनिक एवं स्वच्छ लेखन संसार से काफी भिन्न है l उनकी कविता अलंकार एवं छंद की अपेक्षा मानवीय संवेदनाओं से जुडा है। इस कविता में स्त्री जीवन के उत्पीडन , विशिष्ट अनुभूतियों से अलग जीवन समाज और राजनीति के विविध पक्ष को लेकर वस्तुनिष्ट एवं यथार्थ परक व्याख्या करती है।

मलयालम कवयित्री सती अंकमाली अपनी 'पोलीपोलीचा पेन्नुगल' नामक कविता की विषय दलित स्त्री की आजादी की तीव्र इच्छा को बनाए रखते हुए जीवन संकट को सामना करने की ऊर्जा को रेखांकित करती है l वे अपनी जिंदगी से प्राप्त न होनेवाले वस्तुओं से ज्यादा प्राप्त वस्तुओं पर संतुष्ट रहती है और इससे जीवन को सफल बनाने की कोशिश करती हे 1 दलित अपने जीवन में अभाव की चिंता नहीं बल्कि जो कुछ भी उपस्थित है उसमें आनंद लेना चाहती है। ऐसे सुख और खुशी खोजने का उनके पास जो विशेष कौशल है उसका चित्रण सती अपनी कविता में करती है।

,

मलयालम कवयित्री विजिला चिरप्पड़ अपनी कविता 'पाड़ियों वरचूम इरंगी पोयावर ' नामक कविता में भारत माता केलिए एक दलित वैकल्पिक छवि प्रस्तुत करती है l वे अपने भारत माता के लिए एक परिचित छवि बनाएंगे

48"गोल नाक मोटे होंठ/धुंधराले बाल और काले रंग वाली मां को चित्रित किया /जो एक बॉल्स, कुर्ती और तौलिया पहने हुए थीl 48

इस प्रकार दलितों के परिचित छवियों भारत माता का चित्रण करके कवयित्री हमें एहसास दिलाती है कि दलित भी राष्ट्रवाद में भागीदार है l

4.2.15 खेती संस्कृति की झलक

प्रकृति और कृषक व्यवस्था से जुड़े इस जनता की संस्कृति का गहरा एवं सच्चा आंकलन भारतीय दलित स्त्री कविता में देख सकती हैl खेत से जुडी सुखद स्मृतियों एवं दर्दनाक अनुभवों को कवयित्रियां प्रस्तुत करती है lइनकी कविताएं इसका उत्तम प्रमाण दे रही है कि श्रम करनेवाले ये समाज प्रकृति के कितना करीब होती है l भारतीय दलित कवयित्रियों की कविताओं में पर्यावरण की निरन्तर उपस्थिति है l यह कविताएं प्रकृति के कई बिंबों और प्रतीकों से भरा है l दलित स्त्री कविताएं अनगिनत पीढ़ियों के अनुभवों से प्राप्त स्थानीय ज्ञान से भरी एक दुनिया बन जाती हैI दलित स्त्री कविता का संगीतमकता का मुख्य कारण कृषक संस्कृति है l मलयालम कवयित्री एम . आर . राधामणि की 'तरीचा कातिरुकल ', सती अंकमाली की 'ओटाचेला',हिंदी कवयित्री कुसुम मेघवाल की 'कृषक की पत्नी' , विजिला चिरप्पड़ की'वेरूकल निरंतरम 'आदि कविताएं इस प्रकार के कृषक संस्कृति से जुडी हुई है l समकालीन समाज में दलित दमित समस्याएं और चुनौतियां कवयित्रियों को अपने स्थानीयता के साथ गहरे रिश्ते बनाने और उन्हें अभिव्यक्त करने के लिए तैयार करती है l

,

सामाजिक बदलाव के नए रुप में दलित समाज की स्त्री हर क्षेत्र में पुरुष के बराबर है l फिर भी वह सामाजिक व्यवस्था के भीतरी और बाहरी रूपों से टकराकर अपने आप को मनुष्य रूप में पहचान प्राप्त करने केलिए संघर्ष करना पड़ता है साथ ही अपने भीतर के अंतर्विरोधों से भी लड़ना पड़ता है l अब उनका स्वर दबे कुचलकर नहीं बल्कि मुखर होकर निकलने लगा हैl वह सामाजिक अन्याय करने वाली व्यवस्था को ही छिन्न भिन्न करना चाहती है l जब तक स्त्री की शक्ति को सामाजिक ढांचे में स्वीकारा नहीं जाता तब तक सामाजिक फलक में उनकी प्रतिष्ठा नहीं हो सकती है l दलित कवयित्रियां चाहती है कि दलित समाज में नारी को उचित सम्मान मिले एवं उनको आर्थिक सांस्कृतिक स्तर पर सफल बनाने केलिए समाज हमेशा सहायक रहे l

डॉ रजत रानी मीनू जी कहते हैं 49"दलित साहित्य स्थिति चित्रण के साथ-साथ स्वतंत्रतामूलक मुक्ति की की छटपटाहट है "आज जरूरत है कि स्त्रियां स्वतंत्र हो अपने विचारों को समाज के सामने रखें तभी उनकी सामाजिक पहचान बन सकते हैं"49 भारतीय दलित कवयित्रियां इसी सामाजिक पहचान के लिए अपनी रचनाओं में संघर्ष कर रहे हैं l

निष्कर्ष

भारतीय दलित स्त्री कविताएं वास्तविक सामाजिक जीवन स्थिति से सम्बन्ध रखती है l दलित स्त्री केलिए शिक्षा हासिल करने एवं उसके लिए संघर्ष करने के पीछे दलित मुक्ति आंदोलन हमेशा प्रेरणा रही है l यह उनकी सामाजिक जीवन और व्यवस्था को बेहतर बनाने में सहायक रही है l भारतीय दलित कवयित्रीयों की कविताओं में वर्तमान व्यवस्था, शोषण, अन्याय और विषमता के प्रति भयानक रोष हैं l उनका आक्रोश शब्दों में फूट पड़ा हैं l दलित स्त्री अपनी विसंगतियों और विवशताओं के प्रति लाचार नहीं लगती बल्कि विद्रोह से जागृत

,

होकर अपने खुद का रास्ता बनाती है l कवयित्रियां दलित स्त्री में एक नव चेतना जगाने केलिए कविताओं को अपना माध्यम बनाती हैं lभारतीय दलित स्त्री कविताएँ समाज में स्त्री की स्थिति ,उसके अधिकार और आत्मसम्मान के प्रति संघर्ष का आह्वान करती है l यह संघर्ष जातिवाद और पितृसता दोनों के खिलाफ है l इनकी कविताओं में विद्रोह और आत्मनिर्णय की भावना प्रबल रूप से दिखाई देती है l

दलित समाज के पुरुष और सवर्ण स्त्री की दृष्टि से लिखी गई कविता की तुलना में दलित स्त्री के अपने अनुभव से लिखी गई कविता में पीड़ा की अभिव्यक्ति बहुत शक्तिशाली और ठोस हैl इस अभिव्यक्ति से वह समाज में चेतना जागृत कर अशिक्षा,अज्ञान व जड़ता के अंधकार में सो रहे दलित जन मानस को अपनी कविता से प्रेरणा दे सकती है l आज की समसामायिक परिस्थितियों में दलित स्त्री का उत्थान आवश्यक है l दलित सामाजिक विकास में रचनात्मक संघर्ष करने वाली दलित कवयित्रियों का योगदान काफ़ी महत्वपूर्ण हैl

,

संदर्भ ग्रन्थ

1. Brown kin – An Introduction to Sociology Pg 23)
2. नामवर सिंह- इतिहास और आलोचना पृ46
3. शिवकुमार मिश्र -साहित्य के सामाजिक संदर्भ पृ 20
4. ओमप्रकाश वाल्मीकि -दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र पृ.सं 32-33 -राधाकृष्ण प्रकाशन -नई दिल्ली
5 ओमप्रकाश वाल्मीकि- बस्स बहुत हो चुका- संवेदना और शिल्प का अध्ययन -रमेश कुमार-पृ-सं-4
6. कंवल भारती- दलित कविता का संघर्ष पृ 23
7. सुशीला टाकभौरे -'स्त्री ',तुमने उसे कब पहचाना
8. बी टी ललिता -बिदिरु मेले कंटियाली 1997 पृ 38
9. डॉ. रजतरानी मीनू -'क्यों हिलता नही पता एक भी' पृ42
10. रजनी तिलक - 'औरत औरत में अंतर है' पृ 28.
11. पूनम तुषामट - 'हमने छोड़ दिया गांव' पृ 38
12 रजत रानी मीनू - ' मरघट से गुज़र कर' पृ 23
13 सुनीता - 'अपने पिंजरे में कैद 'पृ59
14 सती अंकमाली - 'पूकालूड़े वेदा पुस्तकम' पृ 2
15 पूनम तुषामठ - यह नीला रंग , 'माँ मुझे मत दो'पृ 27
16 सुशीला टाकबोरे- 'लौट जाओ तुम 'पृ 12
17 .रजनी तिलक पदचाप -'शिक्षा का परचम' पृ.51
18 चलापल्ली स्वारूपा रानी - 'मेकन पूव'
19. पूनम तुषामठ -'कैद '' माँ मुझे मत दो' पृ 22

,

20 . सुशीला टाकभौरे- ‘तुमने यह कब पहचाना’ पृ 34

21 विजिला चिरप्पाड़- ‘बंजर ‘

22 रजनी तिलक -’जब भी योग्यता की बात हुई’ ‘पृ12

23 रजत रानी मीनू -’पिता भी तो होते है माँ ‘ पृ160

24 विमल थोरात- दलित चेतना का साहित्य, रमाणिका गुप्ता पृ 133

25 युदुरत आज आदमी- संपादक रमणिका गुप्ता कविता दलित चेतना विशेषांक 32

26 मोहम्मदरफ़ि हांचीलाल - विमल थोरात के दलित साहित्य में नारी पृ 26

27 सुशीला टाकबोले -’उगते अंकुर की तरह जीओ’

28 सर्वेश कुमार मौर्य - यथार्थवाद और हिंदी दलित साहित्य पृष्ठ108

29. अनुसुया अनु- ‘तू बन जा दीपक’ -’पीडा जो चीख उठी’-पृ-54

30 बिनसी मरिया - ‘न्जान’(मैं) पृ 16

31 शामिला रेंगे -Writing caste , writing gender पृ 52

32 रजनी तिलक - ‘स्त्री मुक्ति की मशाल हो’ - ‘पदचाप’ पृ 19

33 रजत रानी मीनू-पिता भी तो होते है माँ पृ-142

34. रजत रानी मीनू - पिता भी तों होते है माँ पृ 129

35 सुकृतिरानी- ‘योनि की शक्ति ‘ येन ऊदल’ पृ25

36. मीना कांदास्वामी - ‘मस्कारा ‘-‘टच’ पृ45

37. पूनम तुषामट- ‘मां मुझे मत दो ‘

38. ज्योति लांजेवाल - ‘माँ ‘पृ 44

39. रजनी तिलक - ‘हवा सी बेचैन युवतियां ‘ पृ 32

,

40 Dalit women talk differently Gopal guru Economic and political weekly oct 14-21 1995 vol 30 oct 14 1995 p254

41. रजनी तिलक - 'पदचाप ' पृ 32

42 यशवन्त मनोहर- साहित्यचे इहवादी सौंदर्य शास्त्र पृ 26

43. मीना कांदास्वामी -'टच'

44. पूनम तुषामठ 'ईश्वर की विरोध' 'माँ मुझे मत दो पृ 46

45. सुशीला टाकबोरे - 'यह तुम भी जानो ' पृ- 24

46 हीरा बनसोडे - 'फरियाद ' समकालीन भारतीय दलित महिला लेखन

47. रजनी अनुरागी - 'हमारी कविता' पृ 33

48 विजिला चिरप्पड़ 'पाड़ियोंवरचूम इरंगी पोयावर ' पृ 23

49. रजत रानी मीनू -भारतीय साहित्य में दलित स्त्री पृ 47

अध्याय-5

भारतीय दलित स्त्री कविता : सौन्दर्यत्मकता की पुनर्व्याख्या

भूमिका

समकालीन भारतीय दलित साहित्य सामाजिक सुधार और जागरूकता का साहित्य है। दलित लेखक एवं आलोचकों ने दलित साहित्य के मूल्यांकन केलिए एक अलग सौन्दर्यशास्त्रीय मानदंड की मांग की है। जो मुख्यधारा सौन्दर्यशास्त्र से काफी भिन्न है। हाशियेकृत साहित्य को आज बहुत सशक्त रूप से मान्यता मिल रही है। मुख्यधारा के साहित्य के विपरीत दलित साहित्य न केवल स्थापित जाति पर आधारित सामाजिक स्तरीकरण का विरोध करता है बल्कि स्थापित साहित्यक सिद्धान्तों एवं सौन्दर्यशास्त्रीय अवधारणाओं को भी मिटाता है।

प्रस्तुत अध्याय में इस बदलते सौन्दर्यशास्त्रीय संकल्पनाओं पर विचार करने और परखने का प्रयास किया गया है।

दलित लेखकों का आक्रोश और विद्रोह सौन्दर्यशास्त्र की शास्त्रीय धारणाओं को उलटने में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। दलित साहित्य का सौंदर्य उसके मनुष्यता, समता, न्याय और आत्मसम्मान जैसे मौलिक मानवाधिकारों में निहित हैं जो मानव की मुक्ति में सौन्दर्य खोजता है।

,

भारतीय सौन्दर्य शास्त्र आनन्द और रस पर केंद्रित है 1 जबकि दलित साहित्य ने इस सौंदर्य शास्त्र का पुनर्व्याख्य प्रस्तुत करते हुए आत्मसम्मान और समता को केन्द्र में लाया है 1 इस प्रतिमान परिवर्तन ने भारतीय सौंदर्य धारणा को काफी प्रभावित किया 1 दलितेतर साहित्य आनंद का महिमामंडन करता है और आनंद चाहनेवाले सौन्दर्यवादियों को केंद्रीय स्थान देता है 1 उसकी तुलना में दलित साहित्य मानव और समाज की केन्द्रियता पर ज़ोर देता है। आनंद देने वाले साहित्य से आनंद और अनुभूति जागृत होती है तो क्रांतिकारी दलित साहित्य से आत्म सम्मान और समता जागृत होता है। यह साहित्य साहित्यकार की सामाजिक प्रतिबद्धता एवं जीवन दृष्टी पर केंद्रित है 1

भोगे हुए सच्च पर आधारित संवेदना का साहित्य ही दलित साहित्य है। इस दृष्टि से परंपरावादी भारतीय सौन्दर्यशास्त्र के मूल्य और मापदंड दलित साहित्य के मूल्य और मापदंड से भिन्न होगा।परम्परावादी सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्यों से दलित साहित्य की समीक्षा नहीं की जा सकती। सी.बी. भारती के विचार में 1"दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र वाक्यों की रसात्मकता , एवं अलंकरण की अपेक्षा कथ्य को महत्व प्रदान करता है। वंचित, उपेक्षित, शोषित व दलित को लेकर की गई साहित्यक सृजनात्मक रक्षात्मकता के अभाव में भी अपना पूरा प्रभाव छोडती है"1

भारतीय सौंदर्यशास्त्र का रसवादी सौन्दर्यबोध दलित साहित्य पर लागू नहीं होता। इसमें जीवन की समस्याएँ ,मानवीय प्रेम, सौहार्द और श्रम ही सौन्दर्य बोध है। सामन्तवादी सोच और विचार द्वारा निर्मित भारतीय रसवादी सौन्दर्य बोध दलित साहित्य धारणा केलिए अपूर्ण है। दलित साहित्य विद्रोह और नकार के संघर्ष से निर्मित है। इसलिए इसका साहित्यक सौंदर्य शास्त्र वर्ण व्यवस्था, जातिगत भेद, आर्थिक-सामाजिक शोषण, अत्याचार, और

,

सामाजिक असमानता का भाव आदि का विरोध कर समरस के निर्माण की दिशा में लक्षित होता है l दलित साहित्य आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति करता है इस पर ही दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र स्थापित हैl यह साहित्य आशय को महत्व देता है अभिव्यक्ति और शिल्प दूसरे स्थान पर आता है l इसलिए दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र का स्वरूप पारंपरिक सौंदर्य शास्त्र से भिन्न है l

कोई भी सौंदर्यशास्त्र एक दिन में नहीं बनता l प्रतिरोध और विकल्प का सौंदर्य शास्त्र तो बिल्कुल नहीं l यह कलात्मक सौंदर्य बोध और मूल्यों का शास्त्र है l सामाजिक बोध की प्रक्रिया और मूल्यों के निर्माण में जाति, वर्ग और लिंग से जुड़ी विचारधाराओं की महत्वपूर्ण भूमिका है l इसलिए दलित सौंदर्य शास्त्र का विकास दलित समाज की चेतना ,संस्कृति और विचारधारा पर निर्भर रहता है l दलित साहित्य का सौंदर्य वही निखरता है जहाँ साहित्य का धार्मिक रूढ़ियों ,सामाजिक अन्याय एवं विसंगतियों को प्रखर वाणी मिलता है l

ओमप्रकाश वाल्मीकी के अनुसार- ऐसी वर्ण व्यवस्था से उपजी विषमताओं और विसंगतियों को दृष्टि में रखकर ही दलित साहित्य का विश्लेषण करके सौन्दर्यशास्त्र और साहित्यक मूल्यांकन के अध्ययन की दिशा आगे बढ सकता है। साहित्यक सृजन दलित जीवन के यथार्थ को प्रतिबिंबित करने के साथ ही उसे पहचान का भी एक साधन है। साहित्य से और कला के प्रति यह दृष्टिकोण सामाजिक व्यवस्था में साहित्य के महत्व का उचित मूल्यांकन भी है। साहित्य, समाज और चिन्तन भी परिवर्तनशील है। ऐसा कोई शश्वत सिद्धान्त नहीं है, जिसके आधार पर सौन्दर्य मूल्य निर्धारित किया जा सके।'2

परंपरा, संस्कृति,मूल्य,जातिय भावना इन सबकी पुनर्रचना की प्रक्रिया सामाजिक तथ्य एवं ऐतिहासिक यथार्थ से हटकर नये मिथक,बिम्ब तथा प्रतीक को उत्पन्न करती हैं l

,

दलित कवयित्रीयों ने अपनी कविताओं में नये बिंब से बदलते स्त्री समाज की सोच को उद्घाटित किया है। जो केवल नए बिंब की प्रतिष्ठा ही नहीं ,बल्कि यह बिंब दलित स्त्री समाज एवं दलित कवायित्रियों की बदलती सामाजिक सरोकार और सौन्दर्य संकल्पनाओं का प्रतीक बन जाता है।

5. दलित स्त्री कविता की सौन्दर्यात्मकता

किसी भी साहित्य की सौंदर्यबोध की अवधारणा निरपेक्ष और शाश्वत नहीं है l यह समय के साथ बदलती रहती है l दलित साहित्य में निहित आक्रोश के पीछे एक ऐसा सौंदर्यबोध छिपा है जो जीवन को समृद्ध करने वाले और यथार्थ परक साहित्य में ही मिलता हैl दलित साहित्य में सौंदर्य शास्त्र की संकल्पना सामाजिक सुधार,स्वतंत्रता, समता, भाईचारा आदि तत्व पर निहित है l इन सबसे बढ़कर मानवतावाद इसकी विशाल परिप्रेक्ष्य है l

दलित कविता का संबंध जिस सामाजिक सरोकारों से है , उसके मूल में दलित वर्ग का क्रंदन ,अपमान और गालियां है l इसका सौंदर्य शास्त्र निर्धारित करना मुश्किल हैl यह सामाजिक वास्तविकता को लेकर चलती है l इसकी भाषा दलित समाज की भाषा है l दलित स्त्री कविता ने भारतीय सामाजिक व्यवस्था की जड़ता, अमानवीयता, कुलीनता आदि को तोड़ने का सफल प्रयास किया हैl यह व्यंग्यात्मक एवं उपहासात्मक शैली को अपनाकर परिवर्तनशील समाजशास्त्र की रचना करता हैl दलित कवयित्रियाँ अपनी रचनाओं में इस नव सौंदर्यत्मक धारणा के ज़रिए एक नई सिरे से समतावादी समाज बनाने का संकल्प लेती हैं l

दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र के संबंध में जयप्रकाश कर्दम लिखते हैं कि "साहित्य का असली सौंदर्यशास्त्र है इस बात में नहीं है कि उसकी भाषा कितनी प्रांज्वल और शिल्प

,

कितना उत्कृष्ट है अर्थात उसकी कलात्मक कितने उच्च कोटि के हैं बल्कि उसका असली सौंदर्य इस बात में है कि वह जीवन से कितना जुड़ा है मानवीय समता और संवेदनाओं को कितना महत्व प्रदान करता है l तथा सामाजिक परिवर्तन में कितना सहायक और उपयोगिता रखती है l जीवन का सर्वोच्च मूल्य को लोकोपयोगी होना साहित्य का अनिवार्य सत्य है l दलित साहित्य वही बात करता है जो मानव के लिए हितकर ,समाज, राष्ट्र की एकताऔर मजबूती के लिए आवश्यक है"3

दलित सौंदर्य बोध जीवन की सच्चाइयों को नए अर्थ देने की कोशिश करता हैं l इसमें अभिजात्य वर्ग के संपन्न एवं कृत्रिम जीवन से जुड़े साहित्य से हटकर सर्वहारा वर्ग के श्रम और यथार्थ परक जीवन के सौंदर्य की अभिव्यक्ति है l सामाजिक स्थिति के कड़वे यथार्थ ,परिवेश के दबाव और जाति का तिरस्कार के अनुभवों को कविता के रूप देने और संप्रेषित करने में परंपरागत लावण्यमय कोमल पदावली असमर्थ है l दलित सौंदर्य बोध इन सबसे काफी भिन्न है l इसलिए दलित कवयित्रियां एक नए सौन्दर्य बोध की खोज में है l

5.1 प्रतिस्थापित प्रतीक

साहित्य में प्रतीक से भावना, विचार, बोध आदि की अभिव्यक्ति अधिक प्रभावशील बनती है। दलित साहित्य में समाज की पीडा, उत्पीडन और शोषण से उपजे आक्रोश को सामाजिक यथार्थ के साथ चित्रित करने केलिए प्रतीकों का प्रयोग होता है। दलित कवयित्री की 'मैं' शब्द 'हम' की अभिव्यंजना बन जाता है। पारम्परिक प्रतीकों के स्थान पर दलित कवयित्रियां मौलिक और नए प्रतीकों की मांग करती है, जो एक नए समताबोध की प्रतिस्थापना है।

भारतीय दलित स्त्री कविता शिल्प और सौन्दर्य के साथ नये बिम्ब और प्रतीकों को प्रतिस्थापित करते हुए दलित साहित्य लेखन की नवीन परिस्तिथियों का चित्रण करती है l

,

प्रसिद्ध हिन्दी दलित कवयित्री रजतरानी मीनू सरल सहज शैली में अपनी कविता में दलित समाज के आधारभूत प्रश्नों को उठाती है। रजत रानी मीनू अपनी कविता में दलित स्थितियों के प्रति आक्रोश भी सुलगाती है। 'मरघट से गुज़र कर' नामक उसकी कविता में सवर्ण और दलितों की यथार्थ जीवन स्थितियों का चित्रण करते हुए उन्होंने समाज के भेदभाव को गहराई से प्रस्तुत किया है।

4"सब के सब सजे थे।
आधुनिक उपकरम आभूषण सरीखे।
रोज़मर्रा की ज़रूरी/
वस्तुएँ वही दूसरी तरफ दलित बस्तियों की अवस्था
गदलां पानी, मच्छरों, मक्खीयों और बीमारियों का स्त्रोत लबालब।
एक जोहड।" 4

मरघट को यहाँ एक प्रतीक के समान उपयोग किया गया है कवयित्री इस कविता में कहती है कि दलित समाज केलिए जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से हीन वंचित परिवेश मरघट जैसा बन गया है। दलित बस्तियों के जीवन की दर्दनाक स्थिति और भयानकता का यथार्थ चित्रण इस कविता में निहित है।

हिन्दी दलित कवयित्री पूनम तुषामड की 'चींटी' नामक कविता बहुत ही सुंदर, सार्थक और प्रतीकात्मक है। चींटी को कमज़ोर मानकर आटा डालकर पाला जाता है। मगर जब वही चींटी बाहर निकलने पर खूंखार हो जाती है, तब अपनी सत्ता बचाने केलिए उसे मसलकर खत्म करने का प्रयास किया जाता है। जिस प्रकार सवर्णों को दलितों से ख़तरा है उसी प्रकार नारी जागृति पुरुष सत्ता केलिए ख़तरनाक है। यह कविता दलित एवं नारी अस्तित्व का प्रतीक

,

है। नारी एकता और सबलता का बिंब प्रस्तुत करती पूनम जी की' चींटी' कविता इस प्रकार है-

5 " वे कहते है
चींटी चल रही है झुंड बनाकर
क्योंकि चींटी अब खुंखार हो गयी है
मारो -मारो रौन्द डालो
अपने पाव से /इसे मसल डालो" 5

'चींटी' प्रतिकात्मक कविता है जिसके माध्यम से कवयित्री बताती हैं कि जब चींटी के पर निकल जाते हैं तो वह खूंखार हो जाती है l ठीक उसी तरह नारी के अंदर जब तक सहने की शक्ति रहती है तब तक वह सहती रहती है l पर जैसे ही उसके अंदर की शक्ति क्षीण हो जाती है वैसे ही वह चींटी के समान खूंखार हो जाती हैं l वह अपने अस्तित्व को बचाने का प्रयत्न करती हैl

दलित महिला के समाज की मौजूद स्थिति को समझाकर एवं उसको प्रेरणा देते हुए दलित स्त्री कविता का सृजन हुआ है l ताकि वे खुद को किसी से कमतर न समझे और दूसरों के सामने खुद को नीचा दिखाना बंद करें l तमिल दलित कवियत्री सुकृति रानी अपनी कविता में बताती है

6 "हे संसार है संसार /हमारी तरह पिछवाड़े में छिप जाता है /
बची हुई चीजों पर टिकी नजरे/ पीछे बरामदो के झूठ गुंथा हुआ है /
अंधेरे में सात्वना पाता है।"6

,

समाज में पति-पत्नी के बीच हमेशा असमानता का भाव ही होता है।दलित कवयित्री रजनी अनुरागी अपनी कविता 'शादी' में इस गैर बराबरी के रिश्ते को प्रस्तुत करती है।इस कविता में कांटे स्त्रियों के जीवन का प्रतीक के रूप में आते हैं, तो फूल पति के जीवन के प्रतीक बन जाता है।

7 "उसने मुझसे कहा था
सुख-दुख झेलेंगे साथ-साथ
अब वह फूल चुनता है और मैं कांटे" 7

मलयालम दलित कवयित्री विजिला चिरप्पाड दलित महिलाओं में होनेवाली अंतरमुख्ता और निराशा को गहराई से स्पष्ट करती है।उनकी कविता कयक्कलात्तुनिकल (घरेलू चिथडें) नामक कविता में दलित स्त्री की निसहायता को बहुत गहराई चिथड़े प्रतीक से स्पष्ट किया है। यहाँ घरेलू चिथड़े प्रतीक है।

8"एल्ला अषुक्कुतुनिकलुम अटकी पिषिन्जु कोन्ड कयक्कलात्तुनिकल
ओन्नु ननंज निवरान अनुवतिकाते।"
"अषुक्कुकलाल्लाम ऊरीयुरंजु पारा पोल उरन्जु"8

जिसका मतलब है कि घरेलू मैला चिथडा जिसमें सारा मैल है एक बार भी धोये बिना बिलकुल पत्थर की तरह दृढ बन सी है। यहाँ "कयक्कलात्तुनिकल" (घरेलू चिथडा) दलित स्त्री की निसहायता का प्रतीक है। इस कविता में कवयित्री स्त्री के परित्यक्त जीवन का वर्णन करती है। स्त्री की एकाकीपन, बुढापा, आदि इसमें प्रतिबिंम्बित होता है। जिसमें सारी गंदगी ढंक जानेवाली 'कयक्कलत्तुनिकल' एक तरह का दलित अस्वीकृति का प्रतीक है। यह कविता जाति के अस्तित्व को दर्शाती है क्योंकि यह एक ऐसी महिला को प्रस्तुत करता

,

हैं जो रसोई की चार दिवारी के भीतर अपना पूरा जीवन बिताती हैं l कवयित्री अपने व्यक्तिगत अनुभवों को प्रस्तुत करने के साथ उत्पीड़ित समाज की एक स्पष्ट तस्वीर भी उकेरती हैं l कविता स्त्री की दुर्दशा का वर्णन करता हैं और उन जीवन को दर्शाते हैं जो मैले चिथड़े की तरह बन गया हैं l यहाँ भाषा और वाक्य विन्यास बहुत संक्षिप्त और अर्थपूर्ण है लेकिन विचारोत्तेजक हैl

तेलुगु दलित कवयित्री चल्लापल्ली स्वरूपारानी की कविता वाटर (जल)सामाजिक अन्याय और भेदभाव का व्यक्त चित्रण है l उन्होंने भारत में खासकर दलित समुदायों द्वारा पानी तक के लिए झेले गए ऐतिहासिक संघर्ष के विषयों को उजागर करके जल को एक प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया हैl यह कविता इस बात पर प्रकाश डालता हैं कि कैसे पानी जो एक बुनियादी जरूरत है, निचली जातियों केलिए अपमान और असमानता का स्रोत बन गया हैl उन्हें अक्सर कुआं तक पहुंचने से वंचित रखा जाता था और पानी केलिए घंटों इंतजार करने के लिए मजबूर किया जाता था l

रजनी तिलक की कविता 'ए लड़की' जंगलराज का प्रतीक हैl जिस तरह शक्तिशाली जानवर कमज़ोर को अपना भक्षय बनाता है उसी तरह सवर्ण सत्ताचारी लोग दलित पिछडों को शोषण का शिकार बनाता हैl बलात्कारी जंगलराज में दलित लड़कियों को शोषण का शिकार बनाया जाता है l यह कविता नारी जाति की युवा पीढी को सतर्क करने वाली है l समाज में स्त्रियों के साथ खुले आम हिंसा एवं बलात्कार की घटनाएं घटती रहती है ,जो उसके जीवन को पूरी तरह ध्वस्त कर देता हैl इस स्थिति से बचने के लिए सबल बनकर सतर्क रहने की आवश्यकता को कवयित्री अपनी कविता में सूचित करती है l

,

9‘‘ए लड़की अंधेरे में आंख फाड़कर चल

बलात्कारी घूम रहे हैं अंधेरे में

तुम्हारे दोस्त,संगी साथी

में छुपा है कोई बलात्कारी मन/ आंख खोलकर चल ‘‘9

इस कविता में जिस दर्द का भाव व्यक्त किया है वह प्रतिरोध की भावना है1 कवयित्री कहती है कि अभी तक हमने जो दर्द सहा है, उस दर्द का स्वाद ज़रा तुम भी समझ लो1 इस कविता में व्यक्त दर्द की भीषणता दलित जीवन यथार्थ का प्रतीक है1

10 "अब गाँव शहर औ गली कुचे से

होती हुई गरजती आवाज़

तो फाड डोलेगी तुम्हारे कान के पर्दा

तुम्हारे चाबुक की। चोट का जवाब देंगे तुम्हे अब हम

आखिर दर्द का स्वाद। तुम भी तो चखो"10

हिंदी कवयित्री रजत रानी मीनू की ‘बूंद और समुद्र’ एक प्रतीकात्मक कविता है जिसमें बूंद स्त्री का प्रतीक है और समुद्र पुरुष वर्चस्ववादी मानसिकता का प्रतीक है 1 बूंद रूपी स्त्री की ललकार पुरुष वर्चस्ववादी सामाजिक व्यवस्था से है

11 ‘‘इक बूंद चली

इतरा कर इठला कर

सदियों पुरानी परिपाटी तोड़कर /किनारों को पार कर

समुद्र को ललकार कर 11

,

कवयित्री ने स्त्री के अस्तित्व को बूंद के प्रतीक के रूप में हमारे समक्ष रखने की कोशिश की है। समाज में स्त्री और पुरुष समान है। जिस प्रकार से बूंद और समुद्र अलग अस्तित्व है उसी प्रकार से स्त्री- पुरुष दोनों का अलग अस्तित्व है।

कुसुम मेघवाल की 'आह से उपजे वेदना के स्वर' काव्य संग्रह की 'में तो धरती हूं ' नामक कविता की 'धरती' स्त्री का प्रतीक है। इस धरती को मानव निर्मित यंत्रों द्वारा नष्ट करने की कोशिश हो रही है उसी प्रकार से स्त्री को भी पुरुष वर्चस ने नष्ट करने की भरपूर कोशिश की है। हिंदी की दलित कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं में सशक्त रूप से प्रतीकों का प्रयोग किया है

तेलुगु के कवयित्री चल्ला पल्ली स्वरुपा रानी अपनी कविता 'मेकेन पूवू' मैं बताती है कि दलित महिलाओं का शोषण यह कह कर किया जाता है कि है वह यौन संबंध बनाने योग्य है ,लेकिन वह साथ रहने के लिए योग्य नहीं है। शिक्षा एवं नौकरी प्राप्त करके एक स्वतंत्र महिला बनने पर भी जीवन के हर मोड़ पर उसे अपमान सहना पड़ता है। उसे एहसास होता है कि वह अब अपमान सहने के लिए तैयार नहीं है। वह शोषण के सभी धाराओं को पार करके एक लाल फूल 'मेकेंनपूव' की तरह खिलने और सम्मान और आत्माविश्वास के साथ व्यक्ति के रूप में उभरने के लिए तैयार होती हैं।

'मेकेंनपूवू' जंगलों और खेतों में पाये जाने वाला एक लाल फूल है। जिसे स्वरुपा रानी ने क्रांति के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया है। वह आग्रह करती हैं कि प्रत्येक दलित स्त्री को इस लाल फूल की तरह होना चाहिए जो कांटो और झरनों के बीच प्रकृति का अनुसरण करते हुए अपने आप खिलता है। लेकिन कभी भी खिलने से नहीं चूकता । प्रस्तुत कविता

,

स्पष्ट रूप से दलित स्त्रियों की जिजीविषा और समाज में एक क्रन्तिकारी बदलाव की आवश्यकता की घोषणा करती है।

5.2 नवीन बिम्बत्मकता

सौन्दर्य शास्त्र के नए आयामों में बिंब का उल्लेख अपेक्षित है। दलित स्त्री कविता में दलित जीवन से संबंधित बिंबो को भरपूर जगह मिला है। दलित कवयित्रियों द्वारा निर्मित बिम्ब में मानवीय संवेदना का बोध सर्वोपरि है। उन्होंने कविता में दलित चेतना जागृत कर यथास्थिति से विद्रोह करने और अशिक्षा के अंधकार से निकालकर दलित जीवन को प्रभावित करने वाले बिंबों को स्थापित किया है।

बिंब संयोजन में मलयालम कवयित्री विजिला चिरप्पड़ की कविता सामन्यीकरण से अलग होकर व्यक्तिगत रूपों को प्रस्तुत करती है। विजिला की कविताएँ केवल जातिगत पहचान की अनुभूति नहीं है बल्कि उससे बढ़कर संपूर्ण मानव के प्रति व्यापक सहानुभूति में परिवर्तित हो जाती है। अपनी कविता "अम्मा ओरु काल्पनिका कविता अल्ला" में उन्होंने एक माँ के संबंध में केरलीय धारणा को तोड़ दिया है जो अपनी गीले बालों में तुलसी की टहनी पहनती है और माथे पर चंदन लेप लगाती है। विजिला बताती हैं उनकी समाज की चारों ओर की माँ बिल्कुल ऐसा नहीं है बल्कि वे अपना जीवन बिताने के लिए संघर्ष करती हुए दिखाई देती है। विजिला की पूर्वानुगमन करनेवाली (मुनपे परन्तावल) नामक कविता माँ की सच्ची और निसहाय स्थिति को प्रस्तुत करती है।

12 "हमारे घर में/कोई टीवी नहीं है/कोई फ्रिज नही/न तो मिक्सर न ही चक्की/कोई एल.पी जी तक नही

यहाँ तक कि एक लोहे का बक्सा भी नहीं

,

फिर भी जानती थी वे/इन्हें कैसे संचालित किया जाता है

मुझसे बहुत पहले /क्योंकि,

माधवीकुट्टी की कहानियों की तरह

और एम टी को उपन्यासों कि तरह

वह जानू है- नौकर"12

समाज में सवर्ण के लिए नौकरानी के केवल एक ही चेहरा होता है l वह एक वस्तु से अधिक कुछ नहीं जिसे पारंपरिक नाम से जाना जाता है l जानू एक नाम नहीं बल्कि एक प्रतिनिधित्व है

इस कविता में जानू एक ऐसा बिम्ब के रूप में दलित विश्लेषण में आ जाता हैं l यह कविता अधिकांश दलित महिला के वंचित और यथार्थ स्थिति पर प्रकाश डालती हैं l इस कविता के माध्यम से विजिला एक गरीब और शोषित दलित महिला की संवेदनाओं को चित्रित करती है जो सामाजिक सीढ़ी पर चढ़ने में असमर्थ है l

हिंदी कवयित्री पूनम तुषामड की पहली कविता' चाँद मुझे बाये अम्मा ' में समाज में फैले जातिभेद की भावना के विरुद्ध चाँद के माध्यम से सामाजिक समता के बिम्ब को निरुपित किया है l भारतीय सौंदर्य धारणा में चाँद हमेशा मुख सौंदर्य के बिंब के रूप में माना जाता है l लेकिन इसके विरुद्ध दलित कवयित्री पूनम जी ने सामाजिक समानता की बिंब के रूप में प्रयोग किया हैं दलित कवयित्रि पूनम जी ने इस पारंपरिक सौंदर्य बिंब को दलित सौन्दर्य शास्त्र के अनुरूप परिवर्तित किया l उन्होंने चाँद को सौंदर्य वस्तु से हटाकर जाति पांत एवं भेदभाव के विरुद्ध प्रतिष्ठित किया है l उनकी कविता 'चाँद मुझे बाये अम्मा' में उन्होंने चाँद को सामाजिक समानता का बिंब बनाया हैl इसके द्वारा उन्होंने जातिगत

,

भेदभाव के विरुद्ध एक नए बिंब की प्रतिष्ठा की है। चाँद अब केवल सौंदर्य एवं रूमानी परिकल्पना से बाहर निकलकर जातिगत विद्रोह की बिंब बन जाती है।

13"चाँद न पूछे जाति किसी की
छुआछूत की बात कभी भी/
जैसा पंडित ठाकुर के घर मेरा घर पर आए अम्मा
चाँद मुझे है बाये अम्मा "13

तेलुगु कवयित्री चलापल्ली स्वरुपरानी की कविता 'ढाक के फूल' मैं लिखती है

14" मैं काँटीली झाड़ियों मैं फसकर/तड़पनेवाली गौरैया हूँ
किसी भी तरह हिलू/काटें चुभेंगे मुझे ही "14

इस कविता में सामाजिक व्यवस्था रूपी काँटीली झाडी में तड़पनेवाली गौरैया रूपी बिम्ब के रूप मैं दलित स्त्री को प्रस्तुत किया गया है। जाति रूपी काँटीली झाडी में फंसकर रहने वाली गौरैया जैसे दलित को इस व्यवस्था से बाहर निकलना बहुत मुश्किल है। यह कविता सामाजिक व्यवस्था के भयानकता को प्रस्तुत करतीं है।भारतीय समाज और संस्कृति में पिता को पितृ सत्ता के बिंब के रूप में माना जाता है। परंतु हिंदी दलित कवयित्री रजत रानी मीनू ने 'पिता भी होते हैं माँ' शीर्षक कविता से यह साबित कर दिखाया कि कुछ पिता या पुरुष ऐसे भी होते है कि जो माँ से भी ज्यादा अपने बच्चों को लाड प्यार करते हैं। इस प्रकार से कवयित्री पिता के बिंब को नवीन बिंबात्मकता देकर अपनी कविता की शिल्प को बेजोड़ बनाती हैं और संवेदना को गहराई से दर्शाती है।

,

"15 मैं उत्तीर्ण होती थी पापा को लगता था
वहीं पास हो गई परीक्षा में / बांटते थे मिटाई
मनाते थे खुशियां उनकी आंखों में चमकता है
मां जैसा प्यार/ पिता में आज भी"15

मलयालम कवयित्री सती अंकामाली की 'ओटा चेला' नामक कविता में ओटा चेला में एक ऐसी गहरी बिम्बत्मकता है जो दयनीय दलित जीवन का सच्चा चित्र दर्शाती है l इस कविता में एक ही वस्त्र में लिपटे हुए बूढ़े शरीर की बात की गई है जो एक ही वस्त्र से पूरे जीवन बिताता है l सती लिखती है कि वस्त्र का गीला सिरा धूप से सूख जाता है और दूसरा सिरा शरीर के साथ सूख जाता है

आज भी हम दलित समुदाय में ऐसे पिछड़ापन और दयानियता देख सकते हैं l उसके पास मरने के बाद दफनाने तक जगह नहीं होता l उनके शवों को पत्थर के साथ झील में डुबा दिया जाता है l भारतीय सामाजिक व्यवस्था के सामाजिक अन्याय पर सती अंकमाली की कविता करारा चोट करती है l लाचार दलित की विवशता को 'ओटा चेला' नामक एक ही बिंब से कवियत्री बहुत गहराई से स्पष्ट कर देती है l

दलित स्त्री कविता स्थापित मिथकों को तोड़कर नये बिम्ब गढ़ती हैl जैसे कन्नड़ की दलित कवयित्री सुकन्या मारुति अपनी कविता में विद्रोही भावना प्रकट करते हुए समाज में हो रहे अन्याय एवं अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाती हैं l ' सूअर और निंदक' नामक कविता में कवयित्री निंदक के साथ न देकर सूअर का साथ देती है l सूअर दलित संस्कृति का प्रतीक है उच्च वर्ग के लोग सुअर की निंदा कर दलितों का अपमान करते हैं तो कवयित्री

,

कहती हैं कि सूअर लोगों के घर बर्बाद नहीं करता मगर निंदक यानि सवर्ण लोग जाति चिंता फ़ैलाकर पुरे समाज में गन्दगी फैलाती है 1

दलित स्त्री कविताएं वैश्विक परिवेश की समस्याओं को भी कविता का विषय बनाते हैं जैसे रजनी तिलक की ''बुद्ध चाहिए युद्ध नहीं'नामक कविता में दलित विचार धारा युद्ध नहीं शांति का संदेश देता हुआ दिखाई देता है l वह समाज में विश्व करुणा और विश्व शांति की स्थापना चाहते है l कवयित्री विश्व शांति के सफल बिंब के रूप में बुद्ध को प्रस्तुत करती हैं l

"16 हम जंग नहीं चाहते जीना चाहते हैं/

हम विनाश नहीं सृजन चाहते हैं/

हम युद्ध नहीं बुद्ध चाहते हैं"16

मलयालम कवयित्री विनीता कुट्टनचेरी की कविता 'मषा' (बारिश) एक ऐसी कविता है जिसे केवल महिलाएं ही लिख सकती हैं यह कविता परिवार के आंतरिक संघर्ष को व्यक्ति और परिवार के नजरिए से देखता हैं l इस कविता में परिवार के क्रमिक विकास को दर्शाया गया है l उनका घर माँ का गर्भ जैसा छोटा सा फूस का घर जहां पिता सिर्फ सिर झुका कर चढ़ सकता है l बच्चे मन के प्यार के साथ हवा की तरह अंदर बाहर आते जाते हैंl मौन जैसा अंधेरा में अम्मा नमक में आंसू मिलाकर पकाया हुआ दलिया आदि विनीता की कविताओं के कई नई बिंब है जो केवल एक दलित स्त्री जरिए ही स्वानुभुति गहराई से प्रस्तुत कर सकती हैं l इस प्रकार भारतीय दलित कवित्रियां अपनी कविताओं में स्थापित साहित्य लेखन के शिल्प को पीछे छोड़कर नये भाषिक चेतना में सुंदर शिल्प और सौंदर्य के साथ नए-नए प्रतीक और बिंब को अंकित करती हैंl

,

.3 मिथक की पुनर्व्याख्या

मिथक आदिम विश्वासों पर आधारित ऐसे आख्यान है जिनकी घटनाएँ और चरित्र प्रायः मानवेतर और तर्कातीत होते है किसी सांस्कृतिक समाज के सामूहिक मन पर उसकी जड़ें गहराई से समाई रहती है जिससे अतीत को वर्तमान में देखने का प्रयास किया जाता है l दलित कवयित्रियां अपनी कविताओं में वास्तविक इतिहास को पुनर्रचित कर रही है l उनका उद्देश्य उस अमानवीय इतिहास और आख्यान की आवृत्ति को रोकना है l

दलित साहित्य में मिथकों का भी पर्याप्त योजना दिखाई पड़ती हैl इसमें पौराणिक मिथकों की पुनर्व्याख्य हुई हैंl यहाँ मिथक सामाजिक - सांस्कृतिक द्वंद और विकास के समानांतर विकसित एवं परिवर्तित हुए मनुष्य की जातीय अस्मिता या सांस्कृतिक पहचान के रूप में अपना अस्तित्व स्थापित करता हुआ दिखाई पड़ता हैं l इसमें पौराणिक मिथकों की पुनर्व्याख्य हुई हैंl

जन्म- मरण , प्रलय और सूजन ,देव और दानव , शंबूक, कर्ण,एकलव्य, सीता, द्रौपदी राम कथा ,कृष्ण कथा आदि सभी के मिथक दलित साहित्य में अर्थ संदर्भ पाते हैंl कर्ण, एकलव्य और शंबूक जैसे वंचित एवं प्रवंचित पौराणिक पात्र साहित्य में नायक और महानायक के रूप में चित्रित हुआ हैं l

दलित साहित्य परम्परागात मिथकों को नकारता है l पुराण एवं इतिहास के अनुसार एकलव्य, महाबली,शंबूक, रावण आदि को मोक्ष दिया गया हैl ब्राह्मणवादी समाज के मिथक यह मिथ्या धारण पैदा करता है कि यह मोक्ष दलित समाज की रक्षा के लिए या मोक्ष के लिए किया गया है l आज दलित उन मिथकों में किये गये षडयंत्र को पहचानने लगे हैं l दलित समाज को बचाने के लिए शिक्षित दलित समूह द्वारा मिथकों की पुनर्व्याख्या की जाने लगी हैं

,

समाज में प्रचलित कुरीतियों के खिलाफ समकालीन दलित कवयित्रियां अपना विचार खडा करती हैं 1 दलित जीवन संदर्भ में सामाजिक प्रतिबद्धता को प्रकट करने केलिए कविताओं में शबरी , शंभुक, एकलव्य जैसे मिथक पात्रों का भी प्रयोग किया है 1 'तुम ओ बाल्या' नामक कविता में हिंदी दलित कवयित्री सुशीला टाकभोरे ने सामाजिक परिवर्तन को संबोधित कर लिखा है

17"क्यों सोचते हो /नई संरचनाओं के विधान/
जो शासक नहीं दलित बहुजन प्रजा केलिए
शोषक नहीं शोषितों के लिए/ शबरी और शंभुक केलिए होंगे
समता, सम्मान , प्रगति और /परिवर्तन के संदर्भ में
जीवन्त प्रेरणापूर्ण संदेश "17

मुख्य धारा साहित्य में जिस तरह मिथक का रूप होता है, दलित साहित्य के मिथक का उस प्रकार से नहीं होता है 1 प्रमुख कवयित्री रमणिका गुप्ता कहती हैं 18"आज अनुभवजन्य और यथार्थ आधारित साहित्य अपने दृष्टिकोण को स्वयं रच रहा है उसके लिए अपने बिम्ब,अपने मिथक, अपनी भाषा गढ़ रहा है 1 उस साहित्य की अभिव्यक्ति के लिए नए मिथक, नयी भाषा जो आक्रोश को व्यक्त कर सके,नई शैली,अनुभवजन्य यथार्थ यहां तक की नई विधा और तथा सौंदर्य शास्त्र भी गढ़ा जा रहा है ताकि वह नई चेतना का वाहक बन सके1'18

मराठी की दलित कवयित्री हीरा बनसोडे ने अपनी कविता 'शबरी' में दलित नये मिथकों को किस प्रकार से रूपंतिर करता है इस पर विचार प्रकट की है-

,

19 '' शबरी बेर के एवता में क्यों नहीं पूछा।

भूत भविष्य जाननेवाले सर्वसाक्षी राम से
एकलव्य के अंगूठे का भीषण इतिहास
क्यों नहीं पूछा
निरपराध सीता का पूर्व नियोजित वनवास
तुमने अपनी जाति का
अभाना शाप भी गर दिखलाया होता
तो मैं हो गई होती कृतार्थ
शवरी यही चूक हो गयी तुमसे
यही चूक हुई।"19

पौराणिक मिथकों, बिबों और वर्जनाओं को तोड-मरोडने की ताकत आज की दलित स्त्री कविताओं ने प्राप्त किया है। परंपरागत मिथक दलित समाज के लिए प्रवंचना है। दलित कवयित्रियां इतिहास एवं पुराण से भी अपनी कविता केलिए विषय चुन लेती है। मिथकीय पात्र एकलव्य भी इसका एक उदाहरण है। 'भील एकलव्य' नामक कविता में सुशीला टाकभौरे जी दलित जीवन की अस्पृश्यनीय अवस्थाओ को प्रकट करती है कविता की पंक्तियां इस प्रकार से है

20"भील एकलव्य /तुम्हारा तो सिर्फ एक अंगूठा कट था /
पर क्या पूरे समाज के हाथ भी काट दिए गए थे /
हाथ नहीं उठाया किसी ने भी/ गुरु भक्ति के नाम पर /

,

आवाज नहीं उठाई/ अंत में महाभारत के विजेता पार्थ प्रशंसनीय है /तुम क्यों दया के पात्र हो "20

भील जाति के एकलव्य के वीरता को किसी ने नहीं पहचाना 1 वह केवल दया का पात्र बनता रहा 1 पर गुरु द्रोणाचार्य के प्रति किसी ने आवाज नहीं उठाई इस तरह शिकार बने अनगिनत दलितों की अनसुनी आवाज़ समकालीन दलित स्त्री कविता में मुख़रित है 1 जो नये मिथकों की पुनर्व्याख्या करती है 1 परंपरागत मिथक दलित समाज के लिए प्रवंचना है 1 आज दलित उन मिथकों के द्वारा किये षड़यंत्र को पहचानने लगा है 1

सुशीला टाकबोरे के अनुसार 21"एकलव्य और शम्बूक के माध्यम से दलित कवियों ने अपना आक्रोश प्रत्यक्ष रूप से सवर्ण समाज के सामने प्रकट किया है साथ ही सवर्ण मानसिकता को ललकारते हुए दलित पोषण के विरोध करने वाले वर्ण भेद की नीति को जड से खत्म कर देने के विश्वास समाज में जगाया है1 अन्याय और कष्ट को चुपचाप ना सहकर उसके विरोध में उठ खड़े होने की हौसला बढ़ाया है1 हिंदू परंपरावादी रीति नीति को छोड़कर प्रगतिशील जीवन के लिए अंबेडकरवादी विचार को अपनाने का सुझाव दिया है"21

दलित साहित्यकारों ने मिथकों की पुनर्व्याख्या को शोषण से मुक्त होने का एक तरीका माना है1

तमिल दलित कवयित्री मीना कंदस्वामी महाभारत के उदाहरण से उस मौलिक ग्रंथ में जातिगत भेदभाव का चित्रण करती है 1 जो हमेशा जातिगत पदानुक्रम को उचित ठहराता है 1 वह हिंदू धर्म का खंडन करती है 1 साथ ही पौराणिक कथाओं की आलोचना करती है जो शुद्र के उत्पीड़न से भरा है 1 'एकलव्य' शीर्षक कविता में वह महाभारत के उस प्रसंग को उठाती हैं जहां द्रोणाचार्य एकलव्य को क्षत्रिय न होने के कारण प्रशिक्षण देने से इनकार कर

,

देता हैं1 गुरुदक्षिणा के रूप में दाहिना अंगूठा सिर्फ इसलिए मांगा गया था कि वह उच्च जाति किसी बालक से धनुर्विद्या में ऊपर न आ सके 1 इस प्रवंचना का घोर विरोध मीनाजी प्रकट करती है 1 आधुनिक द्रोणाचार्य को बहुत गहराई से व्यंग्यात्मक रूप में कवयित्री प्रस्तुत करती है 1

22 "You can do a lot of things
With your left hand
Besides fascist Dronacharya's warrant
Left handed treatment
Also you don't need your right thumb
To pull a trigger or hurl a bomb"22

मलयालम कवयित्री आशा एम की 'अंशावतारम' और विजिला चिरप्पड़ की 'ए चाट वित रामा' नामक कविताओं में राम के मिथक को पुनर्रविश्लेषण करने की हिम्मत प्रकट करती है 1 मलयालम कवयित्री विजिला अपनी कविता ' ए चाट वित रामा ' में सीता के एक नवीन रूप को हमारे सामने प्रस्तुत करती हुई विवाह की विसंगतियों, शंकाओं, भ्रांतियों और स्वार्थ पर व्यंग्यात्मक दृष्टि डालती है 1 सीता अब निडर होकर कहती है कि

23"समत्ववा पाड़ांगल असुरारिल /निन्नू अन्नू पढ़ीकानूलतू "23

यानी इसका अर्थ है समता का पाठ अब हमें असुरों से सीखना है 1 कवयित्री वैवाहिक संबंधों में उलझकर हार जाने वाले स्त्री को सीता के द्वारा एक नए मिथकीय परिप्रेक्ष्य में पुनःस्थापित करती है 1 वर्जनाओं,निषेधो,अवरोधों और प्रतिबंधों को झेलने वाले दलित

,

कविता को पुराने मिथकों को तोड़ने में तो अपनी शक्ति लगानी पड़ रही है 1 साथ ही वह मिथकों की पुनर्व्याख्य भी करती है1 इसका सफल प्रयास दलित कवयित्रियाँ अपनी कविता के जरिए करती है 1

5.4 अनुभव तीक्ष्णता का यथार्थ प्रस्तुतिकरण

भारतीय दलित कवयित्रियों ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से सार्वजनिक जीवन को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है 1 व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से सार्वजनिक चेतना के लिए यह दृष्टिकोण नई दलित स्त्री कविता के अनुभवात्मक अभिव्यक्ति का प्रमाण है 1

दलित कविता व्यक्ति के रूप में दलित स्त्री मुक्ति की आकांक्षा घर परिवार के ढांचेगत दमन को समझ कर सवाल करने लगी है 1 डॉ. सुशीला टाकभौरे अपने काव्य संग्रह 'यह तुम भी जानो' के माध्यम से दलित स्त्री की अपनी सीमित दुनिया को स्वीकारती हुई लिखती है

24"मैंने कभी सागर नहीं देखा
तिमिर घन के कूप में हूं
बरसों से सोचती हूं सागर यही है"24
सुशीला यह तुम भी जानो "24

प्रस्तुत कविता में कवयित्री अपनी स्त्री जीवन की सीमित दुनिया को पहचान कर और उसे लांघकर वह खुले आकाश रूपी नए समाज के साथ स्वयं को जोड़ती हुई दिखाई पड़ती हैं1

,

5.5 व्यंग्यत्मक प्रयोग

भारतीय दलित स्त्री कविता की भाषा यथार्थ की अभिव्यक्ति करने में सरल, सहज और गंभीर भाषा का प्रयोग करने के साथ साथ कही पर व्यंग्य का प्रयोग करने में सफल रही है। यह व्यंग्य भारतीय समाज के सांस्कृतिक ,सामाजिक और राजनीतिक स्तरों पर तीव्र रूप से प्रत्याघात करती है।

5.5.1 राजनीतिक व्यंग्य

राजनीति किस प्रकार से दलित समाज का दुरुपयोग करता है इसका करारा व्यंग्य भी हिंदी दलित कवयित्री रजत रानी मीनू अपनी कविताओं में प्रस्तुत करती हैं। इनका 'घास' नामक कविता में यह दर्शाया गया है कि राजनीतिज्ञ किस प्रकार से दलित समाज को केवल वोट बैंक के रूप में ही देखता है।

25"तू जिन्हें देख रही है/
वह सब कुछ जिंदा लाश है /पर हर पाँच
साल बाद हरे होते हैं/ इसके दिन बारिश के मौसम में घास की तरह"25

केवल पाँच साल के बीच के चुनाव में ही राजनीतिज्ञ को दलित समाज के याद रहता हैं। इस प्रकार घास रूपी बिम्ब के जरिए कवयित्री ने करारा व्यंग्य प्रस्तुत करती है। इसमें वह दलित से सामाजिक भेदभाव रखनेवाले समाज पर व्यंग्य करती है।

हिंदी कवयित्री सुशीला टाकबोरे अपने 'चुनाव' नामक कविता में भ्रष्ट सवर्णवादी राजनीतिक नीति पर व्यंग्य करती हुई कहती हैं

,

26“क्या सजदाज है क्या अपनापन/

कितना प्रीतिभाव/

जी चाहता है होते रहे महीने चुनाव”26

चुनाव के वक्त ही सवर्ण राजनीतिज्ञ नेता दलित बस्तियों में आते हैं1 उस समय दलित बच्चों को हाथ में लेकर प्यार दिखाते हैं इसके साथ दलित केलिए विकास के वादे भी देते हैं1 इस तरह से झूठा अपनापन प्रकट करते हैं 1 चुनाव जीतने के बाद सवर्ण नेता दलित बस्तियों की राह तक नहीं देखते 1 इसलिए चुनावी दौर पर दिखाने वाले झूटी अपनापन पर कवयित्री व्यंग्य करती है 1

5.5.2 सामाजिक व्यंग्य

हिंदी कवयित्री रजनी अनुरागी ने दलित और गैर दलित स्त्री के साहित्य लेखन की परिस्थितियों के अंतर को बहुत संवेदनात्मक रूप से अपनी दलित विमर्श की कविता ‘हमारी कविता’ नामक कविता में प्रस्तुत किया है

27 “तुम कल्पना पर होकर सवार/लिखते हो कविता

और हमारी कविता रोटी बनाते समय जल जाती है अक्सर

कपड़े धोते हुए पानी में बह जाती है कितनी ही बार

झाड़ू लगाते हुए साफ हो जाती है मन से

पोछा लगाते हुए गंदे पानी में नीचे जाते हैं “ 27

यह कविता सामाजिक स्तर पर दलित और गैर दलितों की सुख सुविधा का विश्लेषण करती है 1 कवयित्री कहती है कि कभी कभी दलित कवयित्रीओं के पास इत्मीनान से बैठकर

,

अपने सृजन करने की जगह तक नहीं होती है l श्रम और जिंदगी की अपर्यपतता उनकी सृजनात्मकता में असर डालती है I कवयित्रि ने भारतीय सामाजिक अंतर को बहुत गहनता और संवेदनशील रूप से स्पष्ट किया है l रजनी अनुरागी जी ने सुदृढ़ शिल्प और सौंदर्य के साथ नये बिम्ब और प्रतीकों के प्रयोग से मुख्य धारा साहित्य लेखन और दलित साहित्य लेखन की परिस्थितियों के अंतर का चित्र अंकित किया है l

हिंदी कवयित्री रजनी तिलक की 'फर्क' नामक कविता में दो प्रकार के स्त्री आंदोलनकारियों की बात कही गई हैl एक वे है जो सारी सुविधाओं के बीच पति के साथ रहते हुए अपने अधिकारों की बात करते हैं l दूसरी वे है जो दलित ,शोषित एवं अभावग्रस्त है l साथ ही पुरुषों द्वारा उत्पीड़ित हैं lवह अकेले रहकर अपने अधिकारों की लड़ाई लडती हैंl

'पदचाप' कविता संग्रह के 'हैरान हूं' कविता में रजनी तिलक ने उन लोगों पर व्यंग्य बाण छोड़ा है जो कॉफी हाउस में बैठकर साहित्य रचना करते है l जिन्होंने कभी दलित स्त्री का दुख दर्द स्वयं सहा ही नहीं l

5.6 भाषिक संघर्ष

भाषा एक ऐसा प्रतिरोधी माध्यम है जिसे हाशिए पर पड़े लोग खुद के बचाव का साधन मानते है l पारम्परिक साहित्यिक भाषा मुख्य धारा की सत्ता संरचना द्वारा और उसके लिए बनाई गई हैl इस भाषा स्पष्ट रूप से महिलाओं और पिछडे समाज से दूर रखा गया है l इसीलिए उन्हें अपने अनुभव और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक नई भाषा का पुनर्निर्माण करना पड़ा l यह नई भाषा सरंचना परंपरागत या बोलचाल की भाषा हो सकती है I

,

दलित साहित्य का ध्येय दलित उत्पीड़न,अपमान और जाति व्यवस्था के कटु यथार्थ को ध्वनित कर एक समान ,स्वतंत्र एवं बंधुत्व आधारित समाज के लिए प्रेरित करते रहना है l इस साहित्य की भाषा को उसके लक्ष्य से जोड़ते हुए रमाणिका गुप्ता लिखती है 28"दलित साहित्य को दलित लिखता है और चुंकि वह भुक्त भोगी होता है यानी वंचनाओ, निषेधों, प्रतिबंधों के बीच जिंदा रहने के आदि होता है l इसलिए वह लिखता है जो यथार्थ की जमीन पर गड़ा है कल्पना के आकाश में नहीं इसलिए उसकी भाषा कुलीन नहीं है इधर कुलीन भाषा इस काबिल ही नहीं कि दलित की जिंदगी के हर एक खुदरेपान को समेट सके l वह अपनी नुकली, तीखी, हुए सीधी साधी भाषा में लिखता है lदलित साहित्य एक लक्ष्य रखता है और वह बाबासाहेब अंबेडकर की सोच के प्रति प्रतिबद्ध है l यह साहित्य मनोरंजनकारी नहीं है बल्कि वह चोट करता है कचोटता है या फिर शर्मसार करता है उन्हें जिनके पूर्वांजो ने उनपर जुल्म किये थे" l28

दलित कवयित्रीयाँ उन शैलियों का प्रयोग करती हैं जो साहित्यिक भाषा की सीमा को विस्तार करते हुए हाशिये पर पड़े लोगों के द्वारा बोली जाने वाली साधारण शब्दावली को शामिल करता हैंl लोक कथाओं, मिथक एवं अपशब्द का प्रयोग उनकी आख्यानों को रोजमर्रा की ज़िन्दगी के करीब लाता है l इन कवयित्रीयों का तर्क है कि उनके लिए एक वैकल्पिक सौन्दर्य प्रतिमान की आवश्यकता है,जो दलित जीवन शौली और अनुभवत्मक वास्तविकताओ से उन्हें अवगत कराता है l इन्होंने परंपरागत भाषा , काव्यशिल्प,शैली तथा रूप प्रतिमानों को नकारा है I

देवेंद्र चौबे के अनुसार दलित साहित्य की भाषा परंपरावादी साहित्य से अलग हैl 29 "दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र व्यावहारिक तरीके से दलित साहित्य पर लिखे गए लेखों

,

और विचारों का आलोचनात्मक विशेषण तथा मूल्यांकन करते हुए साहित्य के सौंदर्य शास्त्र के विकास के लिए बने पारंपरिक साहित्य के मूल्यांकन के मानदंडों से भिन्न-भिन्न कुछ अलग प्रकार की प्रतिमान तय करती हैं l कारण दलित साहित्य की भाषा ,बिंब , प्रतीक , भावबोध से भिन्न है, उसके संस्कार भिन्न है"29 lइससे स्पष्ट है कि दलित साहित्य और परंपरावादी साहित्य की भाषा शैली में बिल्कुल अंतर है

तमिल कवयित्री मीना कंडस्वामी अपनी कविता टच (स्पर्श) में कहती है कि स्पर्श वह प्राथमिक अनुभूति है जो व्यक्ति को अपने आपसे और साथ ही इस दुनिया के सम्बन्ध से जोड़े रखता है l यध्यपि स्पर्श का सार अलग लोगों केलिए अलग अलग तरीके से है l उच्च जाति के लोगों केलिए स्पर्श आनंद दायक है लेकिन अछूतों केलिए वह स्पर्श वर्जित है l उनका अपना स्पर्श भी अस्पर्शता से परे नहीं जा सकता l उच्च जाति केलिए स्पर्श का अर्थ है 'सम्बन्ध' जबकि निचली जाति केलिए स्पर्श का अर्थ 'अस्वीकृति' है l इस कविता में मीना कंडस्वामी सामाजिक भेदभाव को बहुत ही गहन रूप से 'स्पर्श ' शब्द के माध्यम से प्रकट करके दलित स्त्री कविता की भाषापरक तीक्ष्णता को अभिव्यक्त करती है l

दलित कविता की भाषा के संबंध में कमलेश्वर का यह वक्तव्य विचाराणीय है 30"दलित साहित्य के सभी लेखक गहरी जीवन संदर्भ से जुड़े हुए लेखक हैं जिन्होंने व्यक्तिगत और किताबी भाषा से अपने को अलग करके समय के विस्तार में जी रहे आम आदमी की बोली को रचनात्मक भाषा के दर्ज दिया हैl इन्होने अपने प्रदेशों, अंचलों, गली कूचों,नगरों, महानगरों में बिखरी ओर और वातावरण में समाई भाषा को नए अर्थ दिए है l"30

,

दलित जीवन संदर्भ की व्याप्ति परम्परागत भाषा सौठव और भाषागत सौन्दर्य के मूल्यों से कही दूर है1 इसीलिए मराठी कवयित्री ज्योति लांजेवार विशेष शब्दावली, भाषा के माध्यम से दलित स्त्री जीवन की रोज़मर्रा की ज़िन्दगी की लडाई को इन शब्दार्थ में बाँधती है-

31"झूलसती धूप में जलते तलवें
झुलों को ममता के साथ बबुल पर टांगे।
तारकोल भरे कनस्तर ढोते
तुझे देखा मैंने " 31

दलित स्त्री का झुलसती धूप में बबुल के पेड पर अपने बच्चे को झूले में टांगकर सडक निर्माण के काम में जुट जाती है। कवयित्री इस कविता के माध्यम से दलितों के श्रमसाध्य जीवन को चित्रित करके दलित श्रमिक समुदाय के प्रति संवेदनशीलता की उम्मीद जगाती है।

सुकृतिराणी की कविता 'शिशु भाषा' में वह एक ऐसी भाषा केलिए अपनी इच्छा व्यक्त करती है जो ताज़ा और संपूर्ण हो 1 एक ऐसी भाषा जो उसके लोगों द्वारा झेले गए कष्टों से दूषित न हो 1 यह करुणा की भाषा है जो जीभ को घायल नहीं करेगी बल्कि एक नयी भाषा को जन्म देगी। इस नई भाषा को उन्होंने शरीर के उत्पीडन से मुक्ति के साथ-साथ कलात्मक उपस्थिती को जन्म देनेवाली के भाषा के रूप में देखा है।

दलित कवयित्री केलिए भाषा उनके द्वारा झेले गए अनुभव काव्य है1 क्योंकि इतिहास और उत्पीडन की यादें शरीर में संघर्ष पैदा करती है 1 वह स्वयं अपने शरीर को प्रकृति से जोडकर देखती है। दलित सौन्दर्यशास्त्र भूमि, श्रम और शरीर के बीच घनिष्ट भावनात्मक संबन्ध को स्थापित करने के साथ प्रेम और पीडा दोनों के संबन्ध को अपनी भाषा में प्रस्तुति

,

देता है। दलित स्त्री कविता में सामाजिक सुधार की क्रांति तभी संभव है जब वह अपनी भाषा में क्रांति या परिवर्तन की बात करती है।

5.6.1 बोलचाल की भाषा का प्रयोग

दलित स्त्री कविता में स्पष्ट रूप से बोलचाल की भाषा का प्रयोग हुआ है । दलित कवयित्रियों की भाषा समाज में प्रचलित बोलचाल की भाषा है उसमें किसी भी तरह का बनावटीपन या सजावट नहीं है। ये अपनी कविता में सरल,सहज एवं स्पष्ट शब्दों का प्रयोग करती है।

दलित कवयित्रि सुशीला टाकभोरे ने 'नया इतिहास नामक' कविता में सरल बोलचाल की भाषा में दलित के स्तर संघर्ष को व्यक्त किया है। घरेलू घटनाओं को भी कविता का विषय बनाकर अभिव्यक्त किया जाता है। रजनी तिलक की कविता 'खेला जाता है' में दलित स्त्रियों के साथ होने वाले अन्याय, अत्याचार और बलात्कार को गंभीर रूप में बोलचाल की भाषा में इस प्रकार व्यक्त किया है।

> 32"सीताए को आज भी स्टोव से जलायी जाती है
> मासूम कलियों को खिलने से/ पहले बचपन में ही लूट जाता है
> रामायण हो महाभारत /या आधुनिक भारत
> स्त्री जज़्बात से खेला जाता है। "32

भारतीय दलित कवयित्रियों की कविताओं के बारे में कहा जाय तो यह भी महत्वपूर्ण है कि दलित कवयित्रियों ने पारंपरिक लेखन विधियों को त्यागने के साथ साथ भाषा की लघुता और विविधता को भी अपनाने का प्रयास किया है।

,

5.6.2 विद्रोही भाषा

दलित कविता की प्रतिबद्धता समता, स्वतंत्रता और न्याय के प्रति है l इनकी भाषा में विद्रोही स्वर का तीव्र होना स्वाभाविक है l उनके साहित्य की भाषा बदलते समाज शास्त्रीय मूल्यों को संबोधित करता हैंl विद्रोही मनोवृत्ति दलित कविता की विशेषता है l ख़ासतौर पर साहित्य आंदोलन से प्रेरित कविता में विद्रोही मनोवृत्ति अधिक दिखाए देती हैl इसके अनुकूल भाषा भी विद्रोहपरक बन जाता है l

सति अंकमालि की कविता का शब्द वास्तविकता को घेरनेवाली सामान्यता से परे है जो बेहद ऐतिहासिक भी है। यही उनकी काव्य की राजनीति को निर्धारित करने वाला मूल कारकहै। सति की कविता उस प्राचीन गंध को विद्रोहात्मक रूप से हमारे सामने लाती है जो हमारे इतिहास और आख्यान ने छुपाकर रखा है।

33"मैं उन शब्दों का
साम्राज बनेगा जो
चेतना को जलाते हैं,
प्रज्वलित करते है
आकर्षित करते है रचते है।
मार्गदर्शन करते है और जलाते है
गहरे है सपनों को
समंदर दूर से नहीं"33

सति की कविता भाषा और अभिव्यक्ति दोनों का नया आयाम है । उन्हेंने अपनी कविता में दलित महिला के दयनीय जीवन की स्थिति का वर्णन किया है l उनकी कविताएं

,

केरलीय दलित स्त्री की राजनीति एवं सामाजिक स्थिति की विद्रोहात्मक भाषा से प्रस्तुत करती हैं l

रजनी तिलक अपनी कविता में दलितों को जागृत कर, अपने अधिकारों के लिए विरोध और विद्रोह के साथ संघर्ष करने की प्रेरणा देती हैl उन्होंने अपनी कविता 'करोड़ों पदचाप हूं' में स्त्री सबलता और विद्रोहमकता को दर्शाया है

34"मैं दलित अबला नही/ नए युग की सूत्रपात हूं
सृष्टि की जननी/ नए युग की आवाज हु मे
इकाई नहीं मैं/ करोड़ों पदचाप हूं
मूक नहीं मैं/आधी दुनिया की आवाज हूं
नए युग की सूत्रधार हूंl"34

हिंदी कवयित्री रजत रानी मीनू की कविताएं पितृ सत्तात्मक और जातीय पूर्वाग्रहों से मुक्ति तलाश करती है l उनकी 'स्कूल के वे दिन' शीर्षक कविता में वह अपने स्कूल के दिन को याद करते हुए कहती हैं कि उनके दोस्त कहते थे उन्हें देखने पर चमार नहीं लगता l यह 'लगना' शब्द जाति संबंधी हमारी सामाजिक वास्तविकता के पूर्वाग्रहों को हमारे सामने प्रस्तुत करता हैं l साथ ही तीक्ष्ण तीरों की तरह सीधे हमारे जातिगत समाज के मर्म पर प्रहार करता हैं l हमारी सामाजिक सोच और सौंदर्य संकल्पनावों में भी जाति की नकारात्मक असर हैं l

कुसुम मेघवाल की 'कैसे सहती हो नारी तुम इतनी पीड़ा ' काव्य संग्रह की कविताएं स्त्री के प्रताड़ना, दमन ,शोषण ,अपमान आदि को व्यक्त करती है l साथ ही साथ परंपरा से चले आ रहे प्रतीकों को भी नकारती है, जैसे अबला ,वेश्या आदि सभी प्रतीक स्त्री जीवन

,

को अवरुद्ध करने तथा पुरुष वर्चस्व की मानसिकता को बनाए रखने का साधन है। इस प्रकार भारतीय दलित कवयित्रियाँ अपनी सशक्त कविता के माध्यम से जाति एवं पितृ सत्तात्मक व्यवस्था की जटिल समस्या में फंसी स्त्री को उसका अहसास दिलाकर उसे सचेत करती है।

साहित्य का कोई निश्चित कसौटी बनाना मुश्किल ही है ।क्योंकि साहित्य ऐतिहासिक विकास के क्रम में समय अंतर पर नए भाव एवं नई वैचारिक पृष्ठभूमि पर निर्मित हैं । समय के साथ सौंदर्य की कसौटियां बदलती रहती है। कविता को समझने और आस्वादन करने के लिए नई मानदंडों की आवश्यकता है। यह भी तय है कि सुंदरता के परंपरागत कसौटियों को बदलना ही पड़ेगा। दलित स्त्री कविता भी एक नवीन रूप लेकर आया है,जिसमें स्त्री का अत्यंत सच्चा और गहरा जीवन अनुभव प्राप्त है।

किसी भी साहित्य का सौंदर्य केवल स्वीकार में नहीं होता बल्कि उसके नकार में भी होता है। सही मायने में नकार का सौंदर्य और वैकल्पिक मूल्य स्थापना नए भाव बोध का निर्माण करता है साहित्य में दलित कविता नए परिवेश, संदर्भ, दृश्य, बिंब,भाषा आदि का गठन नए प्रकार से करती है। बदलती संस्कृति और समाज बोध के साथ साहित्य भी बदलता है। सुंदरता की कसौटी अपनी संस्कृति और समाज के उपयुक्त होना चाहिए। दलित कविता के आस्वादन के प्रतिमान इसी में ढूंढना होगा क्योंकि परंपरागत कसौटियां इसके साथ न्याय नहीं कर पाएंगे।

दलित सांस्कृतिक संकट के नवीन संदर्भ में दलित स्त्री कविता में सांस्कृतिक स्वत्व बोध को रुपायित करने की कोशिश विद्यमान है ।समकालीन दलित स्त्री कविता में परंपराओं का अंधानुकरण नहीं बल्कि नये जीवनमूल्यों की तलाश है। युगीन साहित्यक परिस्थितियों से

,

प्रभावित होकर भी दलित कवयित्रियों ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए अपनी शैली से,समाज की सौंदर्यात्मक धारणाओं को गढ़ा है l यह नयी स्त्री भाषा की निर्मिती का ज्वलंत पड़ाव है l

निष्कर्ष

भारतीय दलित स्त्री कविता सौंदर्यात्मकता को नए रूप से परखने की कोशिश करती है l उनके हर शब्द में वह क्षमता है जो वर्णभेद के विचारों को नष्ट कर देता है l कविता प्रतिरोध के वैचारिक स्तर के अनुरूप प्रासंगिक होती हैl प्रतिरोध की स्पष्टता से कविता का नवीकरण भी संभव हैl यही दलित स्त्री कविता के समकालीन प्रासंगिकता है l

पारंपरिक मान्यताओं और आदर्शों से भिन्न दलित साहित्य ने अपना रास्ता खुद चुना है l पौराणिक आदर्श पात्र उसे नायक नहीं लगते उनके चरित्र के दोहरे मापदंडो को बारीकी से विश्लेषित कर दलित कवयित्रियां उनके दूसरे रूप को उजागर करती है l नायक को खलनायक में परिवर्तित करके दलित लेखक किसी बदले की भावना को व्यक्त नहीं करते है बल्कि जीवन मूल्यों में छिपी विसंगतियों पर प्रहार करते है l उनकी भाषा जटिल संरचना के साथ स्थितियों को उभारती है जो मनुष्य का शोषण कर उसे दासता की ओर ले जाती है l भारतीय दलित कवयित्रियों की सोच एवं दृष्टि ने ऐसे अनेक आख्यानों को पुनर्व्याख्यायित किया है, जो भारतीय जनमानस को हजारों साल से प्रभावित करती आयी है l

भारतीय दलित कवयित्रीयों ने नवीन एवं सक्रियात्मक नये बिम्ब एवं भाषा प्रतीकों के माध्यम से काव्यजगत में बदलते दलित सौन्दर्य संकल्पनाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है l वह अब तक के स्थापित मान्यताएँ एवं सोच को तोडने में सक्षम है। दलित साहित्य का सौंदर्य मनुष्यता , समता, न्याय और आत्मसम्मान जैसे मानव अधिकारों में निहित है l

,

यह साहित्य मानवीय मुक्ति में सौंदर्य खोजता है 1 दलित कवयित्रियों का प्रतिरोध भरा आक्रोश और विद्रोह सौन्दर्य शास्त्र की शास्त्रीय धारणाओं को उलटने में स्पष्ट रूप परिलक्षित होता है 1

,

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सी .बी भारती - दलित साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र- , पृ.62,
2. ओम प्रकाश वाल्मीकि -दलित सौन्दर्यशास्त्र, पृ.56
3. डॉ माताप्रसाद - हिन्दीकव्य के दलित काव्य धारा - म पृ 21
4. रजत रानी मीनू - ' मरघट से गुजर कर'- ' पिता भी होते है मां', पृ.12,
5. पूनम तुषामट -'चींटी' , 'माँ मुझे मत दो ' पृ32
6. सुकृतिरानी - मेरा गांव का एक चित्र पृ 56
7. रजनी अनुरागी - 'शादी', 'बिना किसी भूमिका' के पृ 24
8. विजिला चिरप्पाड - 'कैकला तूनिकल' 'एंटे तिरानज़डूता कविताकल' पृ3
9. रजनी तिलक -'ए लड़की ' 'पदचाप ' पृ 16
10. पूनम तुषामट - 'दर्द का स्वाद,' 'माँ मुझे मत दो' पृ 69
11. रजत रानी मीनू - 'बूंद और समुद्र'- 'पिता भी होते है माँ' पृ 35
12. विजिला चिरप्पाड- 'मुंपे परन्नवल' ' एंटे तिरानज़डूता कविताकल 'पृ3
13. पूनम तुशामट - 'चाँद मुझे भाए अम्मा' ' माँ मुझे मत दो '
14. चल्लापल्ली स्वरूपा रानी - 'ढाक के फ़ूल' पृ 15
15. रजत रानी मीनू - 'पिता भी होते है माँ' पृ 41
16'. रजनी तिलक -'बुद्ध चाहिए युद्ध नहीं' 'तुम ओ बाल्या 'पृ 25
17. सुशीला टाकभौरे. -'यह तुम भी जानो' पृ43
18. रमणिका गुप्ता.- युद्दरत आम आदमी, संपादक रमणिका गुप्ता-
    दलित चेतना का विशेषांक-34-35 अप्रैल-सेप्टम्बर-96
19. हीरा बनसोडे - 'शबरी के प्रति'-समकालीन भारतीय महिला लेखन-2,पृ.113

,

20. सुशीला टाकभौरे. - 'तुमने उसे कब पहचाना' पृ 35

21. सुशीला टाकभौरे- नंगा सत्य पृ 12

22. मीना कंदास्वामी- 'एकलव्य' पृ 6

23 विजिला चिरप्पड़-' ए चाट वित रामा' 'एंटे तिरानज़डूता कविताकल 'पृ16. 24 सुशीला टाकभौरे. - 'तुमने उसे कब पहचाना 'पृ 67

25 रजत रानी मीनू. -' घास ' ' मरघट से गुजर कर' पृ 25

26 सुशीला टाकभौरे.- 'चुनाव '.तुमने उसे कब पहचाना'12

27 रजनी अनुरागी -'हमारी कविता' पृ 22

28 डॉ. विजय कुमार संदेशसंपादक - दलित चेतना और स्त्री विमर्श 2009 पृ 64

29 देवेंद्र चौबे -आधुनिक साहित्य में दलित विमर्श पृ 85

30 कमलेश्वर -दलित साहित्य संसद स्मारिका तीसरा दलित साहित्य सम्मलेन 28 जनवरी 1979)

31 ज्योति लांजेवाल - 'माँ 'पृ24

32 रजनी तिलक - 'खेला जाता है' ,'पदचाप'पृ18

33. सती अंकमाली- 'पुकालुडे वेदपुस्तकम' पृ 25

34. रजनी तिलक -'करोड़ों पदचाप हूं','पदचाप '18

,

उपसंहार

कविता अपनी भूमिका में आत्मीयता के साथ आसपास की दुनिया को भी समेटती है l वह समाज में परिवर्तित मूल्यों को उकेरती हैl उसमें राजनीतिक परिवर्तन,संसार पर विश्वास, प्रतिरोध की भावना और जीवन की उम्मीद हैl समकालीन कविता अपने समय के अंतर्विरोध और द्वंद्व की कविता है l इस कविता ने मानव से जुड़े हर क्षेत्र का स्पर्श करके उसकी यथार्थ की अभिव्यक्ति की है l उसने समकालीन जीवन जगत से जुड़े प्रत्येक परिवेश को अपने दायरे में समेट लिया हैl समकालीन कविता ने काव्य के क्षेत्र को काफी व्यापक बनाकर उसमें मानवीय संवेदना पर बल दिया है lइसका प्रमुख स्वरूप प्रतिवाद का है l हाशिएकृत समाज की केन्द्रीय उपस्थिति,आक्रोश ,समानता का भाव,प्रतिरोध चिंतन की भावना आदि इसमें पाई जाती हैl

भारतीय दलित स्त्री कविता केवल महिलाओं के अनुभवों की दुनिया को ही नहीं बल्कि भारतीय संदर्भ में दलित स्त्रियों द्वारा झेले जाने वाले जातिगत, क्षेत्रीय, और भाषाई उत्पीड़न का प्रतिरोध को भी दर्शाती है lदलित स्त्री कविता मुख्धारा के भारतीय नारीवाद और महिलाओं के बारे में उसके द्वारा निर्मित रुढ़ीयों को ध्वस्त करती है l इसे दलित नारीवाद के साहित्य के रूप में देख सकते हैं l दलित राजनीति के साथ जुड़कर भी दलित नारीवाद ने दलित पुरुष वर्चस्व से अपनी असहमति प्रकट की है l

दलित कवयित्रियों द्वारा लिखी गयी कविताएं दलित पिछड़े और अस्पृश्य समाज को सामाजिक अस्मिता की पहचान कराती है l उनकी कविताएं मजबूत आत्माभावना एवं उत्पीड़न के खिलाफ एक विद्रोही आवाज़ है l यह कविताएँ सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों

,

की एक शक्तिशाली विशेष अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती हैं l दलित कवयित्रियां अपने जीवन से एवं समुदाय के स्त्री जीवन से प्रेरणा लेती है l इसी वजह से यह कविताएं अत्यंत व्यक्तिगत, अनुभूतिपरक एवं प्रासंगिक बन जाती हैं l उनकी कविता जाति और लिंग के बीच के अंतर्विभाजन को उजागर करती हैl

क्षेत्रीय एवं भाषा परख विविधता के साथ व्यक्तिगत भावनाएं और विचार उन्हें अलग पहचान देती हैं l मराठी के हीरा बनसोडे, ज्योति लंजेवाल आदि की कविताएं इस श्रेणी में आ जाती है l दलित स्त्री कविता में चित्रित नए शब्द भंडार और काव्यात्मक भाषा भारतीय संदर्भ में एक वैकल्पिक आधुनिकता को प्रस्तुत करती हैl मराठी एवं तमिल कविताओं में हम इस प्रकार के बदलाव देख सकते हैंl l मराठी दलित स्त्री कविता राजनीतिक संघर्ष के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ती है lलेकिन तमिल कविता नशरीर की राजनीति पर बहस करके नारीवादी साहित्य में अपनी नई जगह बनाती हैl सामाजिक समस्याओं के प्रस्तुतिकरण में भारतीय दलित स्त्री कविता के भाषाई तेवर चाहे अलग हो उनकी आत्मसंघर्ष और प्रतिरोध की भावनाएं एक समान है l

दलित महिलाओं की कविताएँ इतिहास में उनके द्वारा अनुभव की गई पीड़ा के आधार पर उनकी स्थिति को परिभाषित करती है l वह पुरुष को भी शामिल करके अपने समाज की समस्याओं को रेखांकित करती है l उनकी कविताओं में सामाजिक लोकतंत्र को स्थापित करने का महत्वपूर्ण प्रयास है l

मलयालम के विजिला चिरांप्पड़, अलीना, सती अंकमाली जैसे दलित कवयित्रीयों ने अपनी कविताओं में सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का सामना करते हुए बहिष्कृत और तिरस्कृत होने वाली दलित स्त्रियों के जीवन को प्रतीकात्मक रूप से चित्रित करने में

,

सफलता पाई है l अपनी नई भाषा और बिम्ब के जरिए महिलाओ के सह अस्तित्व की उपस्थिति उनकी कई कविताओं में मौजूद है l वर्जनाओं, निषेधो, अवरोधों और प्रतिबंधों को झेलने वाले दलित समाज को पुराने मिथकों को तोड़ने में अपनी पूरी सृजन शक्ति लगाना पड़ रहा है साथ ही साथ नए मिथकों का सृजन भी करना पड़ रहा है l

दलित स्त्री साहित्य को परंपरागत सौंदर्य शास्त्र एवं काव्यशास्त्र से मुक्त करके नकारा नहीं जा सकता l दलित स्त्री कविताएं जख्म भोगे हुए लोगों की अनुभूति की दस्तावेज है इसलिए इसकी भाषिक संरचना के महत्व पर कम ध्यान दिया गया है l इसका सीधा संबंध अंबेडकर जीवन मूल्यों से जुड़ा हुआ है इसीलिए उसकी आलोचना भी इन्हीं मानदंडों के आधार पर होना चाहिए l दलित साहित्य ने अपने संजीव संवेदनाओं की अभिव्यक्ति केलिए एक पृथक एवं स्वतंत्र शैली विकसित कर ली है l इसी में ही दलित चेतना की संवाहक शक्ति हैl दलित स्त्री कविता दलित चेतना का तेवर को संपूर्ण ऊर्जा के साथ प्रस्तुत करना का सामर्थ्य भी रखती है l दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र इन सबको लेकर ही अपना एक अलग सौंदर्य धारण को रुपायित करना है l जिसका एकमात्र उद्देश्य दलितों में ऊर्जा, उत्साह एवं आत्मबोध की भावना जगाना है l इसमें शिल्प या भाषागत सौंदर्य से ज्यादा दलितों के विकास एवं सामाजिक परिवर्तन के एक नवीन क्रांतिकारी विचारधारा प्राप्त करना हैंl

दलित स्त्री कविता एक महत्वपूर्ण सामाजिक आंदोलन का साहित्यक रूप है l यह दलित महिलाओं की आवाज़ को सुनने और समझने में मदद करता है और साथ ही सामाजिक अन्याय और भेदभाव के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित करता है l भारतीय दलित स्त्री कविता समाज में स्त्री की स्थिति उसके अधिकारों और आत्मसम्मान के प्रति

,

जागरूकता पैदा करता हैं l यह संघर्ष जातिवाद और पितृ सत्ता दोनों के खिलाफ है l इन कविताओं में विद्रोह और आत्मविश्वास की भावना प्रबल रूप से दिखाई पड़ता हैl

दलित स्त्री कविताएं व्यक्तिगत संघर्ष के साथ सामूहिक चेतना और एकता का आह्वान करता है l दलित कवयित्रियाँ अपनी कविताओं के माध्यम से न केवल जातिवाद और लैंगिक भेदभाव के खिलाफ प्रतिरोध की आवाज उठाती है बल्कि सामाजिक समानता और अधिकार की भी मांग करती हैंl दलित कवयित्रियों ने अपनी कविता में रेखांकित करती है कि दलित स्त्रियों में परिवर्तन न केवल बाह्यजगत में जरूरी है अपितु उनकी अपनी मानसिकता,सोच में बदलाव आना चाहिए वहीं उनकी उत्थान केलिए जरूरी है l

पारंपरिक मान्यताओं और आदर्शों से भिन्न होकर दलित साहित्य ने अपना रास्ता चुना है l पौराणिक आदर्श पात्र उसे नायक नहीं लगते उनके चरित्र के दोहरे मापदंडो को बारीकी से विश्लेषित कर दलित कवयित्रियाँ उनके दूसरे रूप को उजागर करता है l नायक को खलनायक में परिवर्तित करके दलित लेखक किसी बदलेगी भावना प्रतिकार नहीं करता है बल्कि जीवन मूल्यों में छिपी विसंगतियों पर प्रहार करता है l उसकी भाषा जटिल संरचना के साथ स्थितियों को उभारती है जो मनुष्य का शोषण कर उसे दासता की ओर ले जाती है l भारतीय दलित कवयित्रियों की सोच एवं दृष्टि ने ऐसे अनेक आख्यानों को पुनर्व्याख्यायित करने का प्रयास किया है जो भारतीय जनमानस को हजारों साल से प्रभावित करते रहे है l

भारतीय दलित स्त्री कविताएं सहानुभूति का कम, भोगे हुए यथार्थ का दस्तावेज अधिक हैl इसका स्वर आक्रोश से भरा हुआ है मगर सच्ची संवेदना और गहरे दर्द का हैl यह कविता भारतीय समाज की जातिगत विसंगतियों एवं दलित समाज की मानवतावादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है l

,

शोध निष्कर्ष

- दलित स्त्री कविता संकीर्णता और सीमित दायरे का शिकार नही बल्कि इसका फलक गहरा और व्यापक है l यह कविता शोषितों के अधिकारों की माँग करने के साथ स्वार्थ भावना से ऊपर उठकर मानव समत्व की सार्वाभौमिक सत्य और सार्वजनिक हित की बात करती है l
- भारतीय दलित स्त्री कविता में उत्तर एवं दक्षिण भारत की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति कास्पष्ट प्रभाव है lसामाजिक नवजागारण आन्दोलन तथा नारीवादी संगठन ने दलित कविता को काफी प्रभावित किया है l
- भारतीय दलित स्त्री कविता ने राजनीतिक और सामाजिक विश्लेषण का एक नया दृष्टिकोण निर्धारित किया है l यह दृष्टिकोण दलित कविता को एक नई विचारधारा की ओर ले जाता हैl दलित स्त्री कविता में ऐसे दर्शन देखने को मिलता है जो अंबेडकर विचार दर्शन से काफी प्रभावित है l
- अभिव्यक्ति की विविधता और लोकप्रिय संस्कृति में हस्तक्षेप करके ही दलित स्त्री कविता उच्च जाति के विचारधारा की नीतियों से प्रभावी ढंग से सामना कर रही हैl
- नारी शिक्षा प्रमुख रूप से दलित स्त्री कविता में प्रभाव डालता हैं l इतिहास एवं स्वत्व बोध दलित स्त्री कविता को ज्यादा सशक्त बनाता है l
- पुस्तक प्रकाशकों की सहायता की कमी दलित स्त्रीवादी कविता के प्रचार प्रसार में बाधक बनने वाला मुख्य कारण है l

,

- भाषगत अलगाव दलित कविता की तीव्रता और अभिव्यक्ति में भिन्नता लाता है l मराठी, तमिल और तेलुगु दलित कविता की भाषा में रोष और आक्रोश भरा है तो मलयालम ,हिंदी और कन्नड़ स्त्री कविता में सजीवता और विषय गहनता है l
- स्त्री शरीर का राजनीतिकरण दलित स्त्री कविता का मुख्य पहलू है l
- भारतीय दलित स्त्री कविता स्त्री की अपनी पहचान और स्वतंत्रता की स्थापना करके नवीन विचारों द्वारा समाज के सामने अपना सवाल उठाती है l
- दलित संस्कृति पर्यंवरण और खेती संस्कृति से जुड़ी हुई है इसी कारण दलित स्त्री कविताओं में उसकी सहज़ अभिव्यक्ति हैl विश्वस्तरीय सन्दर्भ में इसका महत्त्व ज्यादा है l धरती से जुड़ी हुइ इन कविता में पारिस्थितिक स्त्रीवाद का भी स्पष्ट प्रभाव है l
- विषय की एकरूपता और नीरसता भारतीय दलित स्त्री कविता की सीमा हैl
- शिल्पपरक दृष्टि से देखा जाए तो दलित पुरुष कवियों ने मिथकीय प्रयोग को दलित जितनी व्यापकता से प्रस्तुत किया है l दलित स्त्री कवयित्रियों को मिथकीय प्रयोगों में उतनी सफलता प्राप्त नहीं हुई है l लेकिन प्रतीक एवं बिंब के प्रयोग में दलित स्त्री कविता काफी गहन एवं सूक्ष्म बन गई है l

,

संदर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ

1. रजनी तिलक - समकालीन भारतीय दलित महिला लेखन
   स्वराज प्रकाशन,
   प्रथम-2019
2. सुशीला टाकभौरे - मेरे काव्य संग्रह स्वाति बूंद और खारे मोती हमारे हिस्से का सूरज, प्रथम-2013
3. डॉ.एम.बी.मनोज - मुदिता मलयालम दलित पेन्नकविताकल
   विधायौ प्रकाशन
   प्रथम- 2014
4. सति अंकमाली - पूकलुडे वेदपुस्तकम
   गूसबेटी प्रकाशन
   प्रथम-2022
5. सुकृतारानी - नदीयेन्नानु एन्टे पेरू
   अनुवादः पी.एस. मनोजकुमार फेबियन बुक्स
   प्रथम-2024
6. विजिला चिरप्पाड - एन्टे तिरन्जेडुत्ता कविताकल
   मैत्री बुक्स, प्रथम-2024
7. अलीना - सिल्क रूट
   गूसबेरी बुक्स
   द्विदीय सं.2021
8. विजिला चिरप्पाड - पच्चा पोन्नु पेरुवषि
   चिंता पब्लिषेर्श
   प्रथम सं. 2021
9. बी.संराव - मराठी दलित कविता
   साहित्य अकादमी
   प्रथम- 2015
10. रजनी तिलक - पद चाप

,

स्वराज प्रकाशन
प्रथम- 2015

सहायक ग्रंथ

11. पी.एन. सिंह - हिन्दी दलित साहित्य संवेदना और विमर्श
लोकभारती प्रकाशन
इलाहाबाद
प्रथम सं. 2014

12. डॉ.सुमन सिंह - समकालीन हिन्दी कविता में दलित चेतन
विकास प्रकाशन, कानपूर
प्रथम- 2012

13. डॉ. ओमप्रकाश तिवारी - हिन्दी साहित्य में दलित चेतना
श्रीरोधे प्रकाशन
प्रथम-2013

14. डॉ.के. सुधा - आधुनिक हिन्दी कविता में दलित नारी
अमन प्रकाशन, प्रथम-2011

15. डॉ.रजतरानी मीनू
वन्दना - अस्मितामूलक विमर्श और हिन्दी साहित्य
वाणी प्रकाशन, प्रथम-2016

16. सं.प्र. रवीन्द्र ठाकरे - प्रथम दशक के हिन्दी साहित्य में स्त्री एवं दलित विमर्श
चिंतन प्रकाशन, कानपूर
प्रथम-2016

17. श्यामबाबू शर्म - दलित हिन्दी कविता एक वैचारिक पक्ष
अनुग्या बुक्स, 2014

18. रश्मि चतुर्वेदी - हिन्दी दलित साहित्य विमर्श के विविध आयाम
सरस्वती प्रकाशन, कानपूर

प्रथम-2013

19. कृष्णदत्त पालीवाल - उत्तर आधुनिकतावाद और दलित साहित्य
वाणी प्रकाशन
आवृत्ति संस्करण- 2010

20. डॉ.राजेन्द्र खैरनाट - इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी में
स्त्री विमर्श और दलित विमर्श
जगत भारती प्रकाशन
प्रथम-2016

21. डॉ.श्रवणकुमार मीणा - दलित साहित्य और समसामयिक सन्दर्भ
संजय प्रकाशन
प्रथम-2019

22. राम अवतार यादव - दलित साहित्य का सौन्दर्य बोध
अमल प्रकाशन
प्रथम-2011

23. डॉ. सरोज पगारे - हिंदी दलित साहित्य आन्दोलन
विकास प्रकाशन
प्रथम-2012

24. बी.आर. विप्लवी - दलित दर्शन की वैचारिकी
वाणी प्रकाशन
प्र. 2016

25. डॉ.खन्ना प्रसाद अमीन - हिन्दी दलित कविता विचार और विमर्श
नटराज प्रकाशन
प्रथम-2021

26. रजत रानी मीनू - भारतीय साहित्य के दलित स्त्री
अनामिका पब्लिशर्स
प्रथम-2019

27. रेखा सेठी - स्त्री कविता पहचान और द्वंद्व

राजकमल प्रकाशन
पहला सं.2019

28. डॉ. देव्यानी महिडा - समकालीन हिन्दी साहित्य में हाशिए का समाज
परग प्रकाशन, कानपूर
प्रथम-2019

29. निबुलाल वेहूर - समकाल मलयालम कविता
प्रवणनकलुम प्रतिरोधान्गालुम
आत्मा बुक्स
द्विदीय संस्करण 2022

30. शरणकुमार लिंबाले - भारतीय दलित साहित्य
साहित्य अकादमी
प्रथम-2013

31. के.के.एस. दास - दलित प्रत्ययशास्त्र
चरित्रम, साहित्यम सौन्दर्यशास्त्रम
केरला भाषा इनस्टीट्यूट

32. डॉ. दोड्डा शेषबाबु - दलित कविता का यथार्थवादी परिदृश्य
क्वालिटी बुक्स
प्रथम-2013

33. मोहम्मदराफी हयिनाला - विमला घोरात के दलित साहित्य में नारी
रोली प्रकाशन, प्रथम-2014

34. डॉ.बी.आर. धर्मेन्द्र - दलित चेतना के विविध सोपान
अचिन्न प्रकाशन
प्रथम-2016

35. जयप्रकाश कर्दम - दलित विचारधारा
सूरज प्रकाशन
प्रथम- 2016

,

संपादित ग्रन्थ

36. पी. रवि
वी.जि.गोपालकृष्णन - दलित संवेदना के आयाम
वाणी प्रकाशन
प्रथम-2014

37. अभय कुमार दुबे - आधुनिकता के आईने में दलित
वाणी प्रकाशन
प्रथम-2002

38. रमणिका गुप्ता
ज्ञान सिंह बल - दलित दर्शन
नेहा प्रकाशन
प्रथम-2012

39. कमल नयन चाने - हाशिये के भीतर दलित ज्ञान मीमांसा
वाणी प्रकाशन
प्रथम-2022

40. हरिनारायण ठाकुर - दलित साहित्य का समाजशास्त्र
भारतीय ज्ञानपीठ
प्रथम सं.2018

41. डॉ.मिशक़ात आबिदी - सौन्दर्यशास्त्रीय आलोचना के नये आयाम
प्रथम-2011

हिन्दी पत्र पत्रिकाएँ

42. साहित्य भारती, वर्ष-16, अंक-4, दिसंबर- 2013
43. साहित्य सेतु, वर्ष-2, अंक-7, जून-2016
44. दलित दस्तक, अंक-6, जून- 2012
45. जन विकल्प, अंक-3, जनवरी- 2013
46. वागर्थ, अंक- 243, अक्तूबर- 2015
47. दक्षिण भारत, अंक-160, सितंबर- 2015

,

हिन्दी पत्र पत्रिकाएँ

48. Insight Magazine, April 30, 2014

49. Contemporary Voice of Dalit, July 16, 2025

Website and Electronic Resources

50. Channeling the rage:an interview with meenakandasamy https://pentransmissions.co

51. https://www.reserchjourney.net

52. Myth and Literature lMyth :A Very short introduction

    Oxford academic https://academic.oup.com

53. https://oldrol.ibp.world

54. https://ddugc.ac.in

55 Dalit mythology - Devdutt pattanaik

    https://devdutt.com

56. wikipedia. https://mr.wikipedia.org

57. Books and writings of Ambedkar. Ministry of External affairs. https://www.meagov.in

58. http://kavitakosh.org. Kavita Kosh

59. The dalit feminist standpoint Revisiting a Debate on feminism and Intersectionality https://www.epw.in

अंग्रेजी किताब

59. Urmila Pawar and Meenakshi Moon

    We Also Made History - Women in the Ambedkarite Movement 1989

60. B.R Ambedkar -Annihilation of caste 1936

,

प्रकाशित शोध आलेख

1. भारतीय दलित स्त्री कविता की सामाजिकता
   गीना शोध संगम volume 12 November 2024

   International journal of literature. ISSN 2321-8037

2. समकालीन हिंदी कविता में बदलती दलित स्त्री अस्मिता

   आशवस्त UGC care listed and Peer Reviewed Research Journal
   January 2025 ISSN 2456-8856

प्रपत्र प्रस्तुति

1. भारतीय दलित स्त्री कविता और सामाजिक संघर्ष

   द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

   कालिकट विश्वविद्यालय 18,19 जनवरी 2024

2. मलयालम दलित कविता में राजनीतिक चेतना

   एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (ऑनलाइन) , 15 मार्च 2022

   दलित - आदिवासी अध्ययन एवं अनुवाद केंद्र

   हैदराबाद विश्वविद्यालय